

रू डि न

[अमर रूसी कथाकार इवान सेरजेयेविच तुर्गनेव के प्रसिद्ध वैप्लविक उपन्यास रूडिन-का प्रामाणिक तथा अविकल अनुवाद]

अनुवादक

वीरेन्द्रनाथ मण्डल, 'वीरेन्द्र'

प्रकाशक—

प्रकाश-गृह

बनारस ।

प्रधान वितरक—

उदय प्रकाशन-मंदिर

बनारस ।

प्रकाशक
प्रकाश-गृह
बनारस,

मूल्य
२॥)

मुद्रक
श्यामलाल धवन,
अनन्त प्रेस, भैरोनाथ,
बनारस—१ ।

रूडिन—१

ग्रीष्म का शांत सवेरा। दिवा-भास्कर स्वच्छ आकाश की ऊँचाई पर चमकने लगे थे, फिर भी मैदानों में शिशिर-बिंदुएँ झलक रहे थे। वायु-प्रवाह के साथ तंद्रिल उपत्यका की स्निग्ध सुगंध चारों तरफ संचारित होती थी। वन की आर्द्रता और निरवता मिटी नहीं परंतु चिड़ियाँ खुशी से गाने लगी थीं। ढलुवीं पहाड़ी भूमि नवीन शस्यों से भरी राई की खेती से ढँकी थी ऊपर से नीचे तक। उसी पहाड़ी की चोटी पर एक छोटा-सा गाँव दिखाई पड़ रहा था। उसी गाँव को जानेवाली एक पतली पगडंडी पर एक तरुणी जाती हुई दिखाई पड़ी। वह सफेद मलमल के पोशाक पहनी थी—उसके माथे पर था फूस का बना एक टोप। वह हाथ में एक छतरी लिये चल रही थी। कुछ दूरी पर उसका बच्चा नौकर उसके पीछे-पीछे आ रहा था।

तरुणी चल रही थी धीरे-धीरे, मानो उस भ्रमण का पूरा-पूरा आनंद वह उठा रही थी। उसके चारों तरफ की भूमियों में लहलहाती हुई राई सरसराती हुई हवा के साथ नाचने लगी, मानो हरी तरंगें उठ रही हों। ये तरंगें भी क्षण-क्षण रंग बदलने लगीं, कभी रूपहरी हरियाली तो कभी उजली लाली! माथे के सीध; काफी ऊँचाई पर दो-एक चील मँडरा रही थीं। वह तरुणी अपने गाँव से आ रही थी। अभी वह जिस गाँव को जा रही थी वह एक मील से भी कम दूरी पर था। तरुणी का नाम था आलेकजांद्रा पावलोवना

लीपिना। वह विधवा थी, उसे कोई संतान नहीं तथा उसकी आर्थिक स्थिति अच्छी थी। वह अपने भाई सेर्जेई पावलोविच वालीनस्टेव के पास रहती थी। उसका भाई घुड़सवार सेना का अवसर-प्राप्त सहकारी सेनापति था। उसने विवाह नहीं किया, घर ही पर रह कर बहिन की जमींदारी की देख-रेख करता था।

उस गाँव को पहुँच कर पावलोवना एक टूटी-फूटी झोपड़ी के सामने जा खड़ी हो गयी। उसने अपने बालक भृत्य को बुला कर कहा कि, झोपड़ी के भीतर जा कर वहाँ रहनेवाली बूढ़िया की हालत पूछ आए। वह लड़का झोपड़ी के भीतर गया और एक सफेद दाढ़ीवाले बूढ़े किसान को साथ लिये बाहर आया।

—"कैसी है ?" पावलोवना ने पूछा।

—"अभी तक तो जी रही है।" गिड़गिड़ाते हुए उस बूढ़े ने उत्तर दिया।

—"अंदर जा सकती हूँ ?"

—"क्यों नहीं ? आइये—!"

पावलोवना झोपड़ी के भीतर गयी। झोपड़ी के भीतर की अँधियारी तथा बंद वातावरण के कारण उसे ऐसा लगा कि अभी दम घुटने लगेगा। चूल्हे के पास एक खटिये पर पड़ी-पड़ी कोई बूढ़िया कराह रही थी और अपने शरीर को बार-बार मरोड़ रही थी। उसी आवाज का अनुसरण कर हलकी अँधियारी में पावलोवना ने उस बूढ़िया का पीला और कुंचित मुख देखा। बूढ़िया के माथे पर एक रूमाल लपेटा हुआ था। वह एक भूरे रंग के कोट से अपने को छाती तक ढाँपे बड़ी कठिनाई से साँस ले रही थी जिस कारण उसके सूखे हुए हाथ तेजी से काँप रहे थे।

पावलोवना आगे बढ़ी और उस बूढ़िया के ललाट पर हाथ रखा। ललाट इतना गर्म—मानो जला जा रहा था।

—"कैसी हो मेट्रियोना ?" खटिये पर झुक कर उसने पूछा।

—"ओफ !" बूढ़िया कराह उठी। फिर पावलोवना को पहचान कर बोली, "अब नहीं बचूँगी मालकिन ! मेरा समय हो चला है !"

—"ईश्वर बचानेवाले हैं मेट्रियोना ! तुम अच्छी हो जाओगी। मैंने जो दवा भेजी है उसे ठीक से खा रही हो न ?"

बूढ़िया फिर बुरी तरह कराहने लगी और कुछ जवाब न दे सकी। उसने यह प्रश्न सुना ही न था।

वह बूढ़ा दरवाजे के पास खड़ा था, बोला, "खाती है !"

आलेकजांद्रा पावलोवना बूढ़े की तरफ घूमी।

—"क्या तुम्हारे सिवाय इसे देखनेवाला कोई और नहीं है ?" पूछा उसने।

—"एक लड़की है, उसकी नातिन ! लेकिन वह तो दिन भर बाहर घूमा करती है। कभी एक जगह बैठ नहीं सकती ऐसी चंचल है। आलसी भी। अपनी नानी को एक घूँट पानी भी नहीं देती। मैं बूढ़ा कहाँ तक क्या करता !"

—"तो मैं इसे अपने यहाँ—अस्पताल में ले चलूँ !"

—"नहीं नहीं ! क्यों ले जाओगी ? वहाँ भी तो मरेगी। जीवन उसका समाप्त हो चुका है, ईश्वर जो करेंगे वही होगा। उसे यहीं खटिये पर पड़े रहने दीजिये। वह अस्पताल तक पहुँचेगी कैसे ? तनिक डोलाने से ही तो मर जायगी।"

—"ओफ् !" बूढ़िया पुनः काँखने लगी। पावलोवना के उद्देश्य में बड़बड़ाने लगी, "आप देवी के समान हैं ! आप मेरी अनाथ बच्ची को हर्गिज न भूलें। मेरे मालिक अभी यहाँ नहीं हैं, केवल आप ही—!"

बूढ़िया चुप हो गयी क्योंकि उसकी बोलने की शक्ति समाप्त हो चुकी थी।

—"घबड़ाओ नहीं।" पावलोवना बोली, "सब कुछ ठीक हो जायगा। यह देखो, तुम्हारे लिए थोड़ी-सी चाय और चीनी लायी हूँ। अगर चाय पीना चाहती हो तो थोड़ी-सी पी सकती हो। तुम्हारे पास तो 'सामोवर' है न ?" उसने बूढ़े की तरफ देखते हुए कहा।

—"सामोवर ? हमारे पास एक भी 'सामोवर' नहीं है। लेकिन मिल जायगा।"

—"ठीक है। अगर नहीं मिला तो मैं एक भेज सकती हूँ। और उसकी नातिन को कहना कि वह घर पर रहा करे। उससे यह भी कहना कि उसे अपनी हरकतों से लज्जित होना चाहिए।"

बिना किसी उत्तर के उस बूढ़े ने चाय और शक्कर की पोटलियों को हाथों में लिया।

—"अच्छा, मैं चली मेट्रियोना!" पावलोवना ने कहा, "मैं तुम्हें देखने फिर आऊँगी। हिम्मत रखना और समय पर दवा खाना।"

बूढ़िया ने मस्तक उठा कर पावलोवना की तरफ बढ़ने की चेष्टा करते हुए किसी प्रकार कहा, "आप जरा अपना हाथ मुझे छूने दीजिये।"

—"पावलोवना ने बूढ़िया के कथनानुसार वैसा नहीं किया बल्कि झुक कर उसका ललाट चूम लिया। वह जाते समय बूढ़े से बोली, "जरा ख्याल रखना। दवा ठीक समय पर देना जैसा कि लिखा है। और थोड़ी चाय भी पीने के लिए दे सकते हो!"

उस बूढ़े ने कोई उत्तर नहीं दिया, केवल अपना सिर हिलाया।

जब तक पावलोवना बाहर खुली हवा में न पहुँच पायी तब

तक वह स्वच्छंदता से साँस न ले सकी। उसने अपनी छतरी खोली और घर की तरफ पैर बढ़ाया। इतने में अचानक झोपड़ी के उस कोने से एक आदमी एक छोटी घोड़ा-गाड़ी हँकाता हुआ दिखाई पड़ा। उस आदमी की अवस्था तीस के लगभग थी तथा वह एक पुराना धूलि-मलिन भूरे रंग का कोट और कुल्लेदार टोपी पहना हुआ था। तरुणी की तरफ दृष्टि पड़ते ही उसने तुरन्त घोड़ा रोका और उसकी तरफ घूम कर देखा। उसका मुखमंडल चौड़ा और फीका था। उसकी आँखें हलके भूरे रंग की और छोटी-छोटी थीं। मूँछें भी मटमैले रंग की थीं जिस कारण उसके पहिनावे के रंग से उन मूँछों के रंग की समता आ गयी थी।

—"सुप्रभात!" हलकी द्वयर्थबोधक हँसी के साथ उसने कहा, "क्या मैं पूछ सकता हूँ आप यहाँ क्या करने आयी हैं ?"

—"एक बीमार बूढ़िया के पास गयी थी। लेकिन आप कहाँ से आ रहे हैं, लेभेनोव ?"

वह व्यक्ति इस प्रकार से संबोधित हो कर प्रश्न-कर्त्री की आँखों में कुछ देखने लगा और, फिर हँसा।

—"आप ने बहुत अच्छा किया कि एक रोगिणी को देखने गयी थीं। लेकिन, क्या यह और अच्छा नहीं होता कि यदि आप उसे अपने अस्पताल में ले आतीं।"

—"वह बहुत ही कमजोर है! हिल-डोल नहीं सकती।"

—"क्या आप ने यह निश्चय कर लिया कि अस्पताल बन्द कर देंगी ?"

—"अस्पताल बन्द कर दूँगी ? ऐसा क्यों ?"

—"यों ही, समझा कि—।"

—"अजीब समझाना! यह आपके दिमाग में किसने रख दिया ?"

—"जो हो, आप तो मैदम लासुनस्काया से भली-भाँति परिचित हैं। संभवतः आप उनसे प्रभावित भी हैं। उन्हींका यह विचार है कि ये अस्पताल और विद्यालय सब बेकार के और बे-मतलब के हैं। परोपकार आवश्यक रूप से एक व्यक्तिगत व्यापार होना चाहिए; इस प्रकार शिक्षा भी आत्मिक प्रयोजन के लिए है। जो कुछ कह रहा हूँ ये उन्हीं के शब्द हैं। पता नहीं उन्हें ये सब विचार कहाँ से मिलते हैं ?"

पावलोवना हँसी।

—"मैदम लासुनस्काया एक बुद्धिमती स्त्री हैं। मुझे वे बहुत अच्छी लगती हैं। मैं उनकी प्रशंसा करती हूँ। परन्तु उनसे भी गलतफहमी हो सकती है। वे जो भी कुछ कहती हैं मैं उनमें से सभी को नहीं मानती।"

—"बहुत अच्छा है कि नहीं मानतीं।" वह व्यक्ति गाड़ी पर से बोला, "क्यों कि वे जो कुछ कहती हैं उन पर वे भी पूर्ण विश्वास नहीं रखतीं। मुझे बहुत खुशी है कि आप से भेंट हो गयी।"

—'क्यों ?"

—अजीब प्रश्न है! जैसे आप से साक्षात्कार होना हर समय सुखकर नहीं होता। आप आज ऐसी नवीन और मोहक लग रही हैं जैसा कि यह सवेरा।"

वह तरुणी पुनः हँस पड़ी।

—"आप हँस रही हैं!"

—"बगैर हँसे न रह सकी। किसी की प्रशंसा करने का यह तरीका कितना शीतल और प्राणहीन हुआ अगर आप स्वयं देख सकते! आश्चर्य इस बात का है कि अंतिम शब्द का उच्चारण करते समय आपने उबासी क्यों न ली!"

—"शीतल ! सचमुच ! आप चाहती हैं आग ! लेकिन उससे क्या होगा ? वह तो बस जल उठती है, धूँआ फेंकती है और बुझ जाती है।"

—"उष्णता भी देती है—!" पावलोवना ने आगे जोड़ दिया।

—"हाँ जलाती भी है !"

—"ठीक है ! जलाती है तो क्या हुआ। उससे कोई बड़ी हानि नहीं होती ! फिर यह अच्छा ही तो है, बनीस्वत—"

—"ठीक है ! एक दिन देखूँगा आप जल कर क्या कहती हैं ?" लेस्कैनोव कुछ उत्तेजित हो कर बीच ही में बोल पड़ा। उसने घोड़े को लगाम से फटकारा और कहा, "अच्छा नमस्ते !"

—"जरा रुकिये !" तरुणी ने चिल्ला कर कहा, "आप फिर कब आ रहे हैं ?"

—"कल तक ! आप अपने भाई को मेरी प्रीति दीजियेगा।"

गाड़ी दूर निकल गयी। पावलोवना ने अपनी दृष्टि से उसका अनुसरण किया।

पावलोवना अपने मन में सोचने लगी, वह व्यक्ति कितना मोटा है मानो एक भरा बोरा ! धूल से भरा शरीर ! टोपी सिर के पिछले भाग को ही ढँकती है जिसके नीचे से पीले बाल के लट दिखाई पड़ते हैं। सचमुच उस समय वह एक आटे के भरे बोरे के समान दीख पड़ता है !

पावलोवना धीरे-धीरे लौटने लगी। उसकी आँखें धरती को देख रही थीं। परन्तु घोड़े के टाप की आवाज से उसे रुक कर सामने देखना पड़ा। उसका भाई घोड़े पर सवार हो कर उसी की तरफ आ रहा था। उसके साथ एक छोटे डील-डौल का युवक लंबा कदम धरता हुआ आता दिखाई पड़ा। उसके शरीर पर एक हलका

छोटा कोट था जिसके बटन खुले थे। गले में गुलुबंद और माथे पर हलके भूरे रंग की टोपी थी। वह हाथ में एक छड़ी लिये हुए था। वह व्यक्ति कुछ देर से उस तरुणी की तरफ देख रहा था और मुस्कुरा रहा था। यद्यपि उसने देखा कि वह तरुणी अपनी ही चिंता में डुबी हुई और उसके बारे में बेखबर थी। जब पावलोवना रुकी तब वह युवक उसके पास पहुँच गया और हर्षभरे मधुर स्वर में कहा, "सुप्रभात, आलेकजांद्रा पावलोवना, सुप्रभात !"

"ओह ! कानस्टैन्टीन डायामीडोवीच ! सुप्रभात !" पावलोवना ने उत्तर दिया, "आप क्या मैदम लासुनस्काया के यहाँ से आ रहे हैं ?"

—"आपने ठीक कहा।" उत्तर देते समय उस युवक का मुख खुशी से झलक उठा। "मैदम लासुनस्काया ने मुझे आपके निकट भेजा है। फिर पैदल चलना मुझे अच्छा ही लगता है। आज का सवेरा कितना सुन्दर है और मैं तो बस तीन मील चला हूँ ! मैं जब आया उस समय आप घर पर नहीं थीं। आपके भाई साहब ने मुझे बताया कि आप सेमीयोनोवका गयी हैं। और आपके भाई साहब भी खेत में जा रहे थे। मैं उन्हींके साथ आप से मिलने के लिए चल पड़ा। आप ही बताइये यह कितना अच्छा हुआ !"

युवक शुद्ध और सही रूप से रूसी भाषा बोल रहा था फिर भी उसमें एक विदेशी प्रभाव वर्तमान था। लेकिन यह निश्चित रूप से कहना कठिन था कि प्रभाव किस देश का था ! उसकी आकृति में एशिया-निवासी की झलक थी। श्येन पक्षी के समान लंबी टेढ़ी नाक, बड़ी-बड़ी प्रभावशाली अचंचल आँखें, मोटे-मोटे लाल होंठ, ढलुआ ललाट, भ्रमरकृष्ण केश आदि उसकी हर विशे-

षता यह बता रही थी कि वह प्राच्यदेशीय था। लेकिन वह युवक कहता है उसकी उपाधि है पांडालेवस्की और उसकी जन्मभूमि है ओडीसा। लेकिन उसका बचपन बाइलोराशिया में कहीं बीता था। वहाँ वह एक धनी और दयाशीला विधवा के पास रहता था। एक दूसरी विधवा ने उसे एक सरकारी नौकरी दिलायी थी। इस प्रकार से मध्यवयस्का महिलाएँ पांडालेवस्की पर स्वेच्छा से दया दिखाती गयीं। पांडालेवस्की भी यह अच्छी तरह जानता था कि कैसे ऐसी महिलाओं को ढूँढ़ना पड़ता है और उनसे संपर्क स्थापित किया जाता है। इस समय भी वह मैदम लासुनस्काया नाम की एक जमींदार-पत्नी के निकट आश्रित अथिति के रूप में रहता था। पांडालेवस्की बहुत ही भावप्रवण, अनुगत और नम्र था। गुप्त रूप से भोग-लालसा के लिए उसके हृदय में एक आसक्ति भी थी। उसका कंठ-स्वर मधुर था और वह पिआनो भी भली-भाँति बजा लेता था। किसी से बात करते समय उसकी आँखों की तरफ लगातार देखते रहने की आदत उसमें थी। वह साफ-सुथरे कपड़े पहनता था। अपने प्रशस्त चिबुक को बड़ी सावधानी से क्षौर-कर्म कर साफ रखता था। उसके सिर का हर बाल अपने ही स्थान पर रहता था।

पावलोवना ने अंत तक उसकी बातों को सुन कर अपने भाई की तरफ घूम कर कहा, "न जाने आज का दिन कैसा है—एक के बाद एक सभी से मुलाकात हो रही है। अभी-अभी लेभेनोव मिले थे, उससे कुछ देर बातें हुईं।"

'अच्छा! लेभेनोव, क्या कहीं गाड़ी हँका कर जा रहा था?

—"हाँ! जा रहे थे। अब कल्पना कर सकते हो, एक घोड़ा-गाड़ी पर सवार हो कर मोटे-मोटे धूल से भरे पोशाक पहने हुए जा रहे थे। अद्भुत आदमी हैं, सचमुच!"

—"हाँ, ऐसा ही लगता है। लेकिन आदमी अच्छा है।"

—"कौन ? महाशय लेभ्भेनोव ?" पांडालेवस्की ने संशयपूर्ण स्वर में पूछा।

—"हाँ, मीखेल मीखेलोवीच लेभ्भेनोव।" वोलीनस्टेव ने उत्तर दिया। "अच्छा बहन, अब मैं खेत की तरफ चला। उन्होंने मोथी बोना शुरू कर दिया है। महाशय पांडालेवस्की तुमको घर तक पहुँचा देंगे।" इतना कह कर वोलीनस्टेव द्रुत घोड़ा भगा कर दूर निकल गया।

—"खुशी से।" पांडालेवस्की ने कहा और उस तरुणी का हाथ थाम लिया।

पावलोवना ने उसे हाथ थामने दिया। अब वे दोनों पावलोवना के मकान की तरफ चलने लगे।

× × × ×

पावलोवना का हाथ अपने हाथ में लिये चलने में पांडालेवस्की को विशेष प्रकार आनन्द का अनुभव होने लगा। उसके कदम छोटे होते गये। उसका मुख उज्ज्वल हो उठा और उसकी पूर्वदेशीय आँखें गीली होने लगीं। जो हो, यह उसके लिए आश्चर्य की बात न था। पांडालेवस्की की आँखों से प्रायः आँसू बह चला! सचमुच कौन न खुश होगा ऐसी एक सुंदरी रूप-लावण्य-सम्पन्ना तरुणी के साथ हाथों में हाथ लिये चलने में। पावलोवना अपने जिले में सर्वश्रेष्ठा सुंदरी थी। वहाँ के सभी एक स्वर से यह कहते थे। उनका कहना ठीक भी था! उसकी छोटी इषद् झुकी हुई नाक ही किसी पार्थिव जीव को अपनी चेतना से उदासीन कर सकती थी। उसकी मखमल सी कोमल आँखें, सुनहली छटा लिये काले कुंतल, पुष्ट कपोल—हँसने से जिन पर मनोरम गुल बनते हैं, आदि उसके अन्य रूप-संभारों के बारे में कहना ही क्या था। परन्तु उसकी और-और

सुन्दरताओं में सब से अधिक निखर उठती थी उसके सुन्दर मुख की भावालुता जिसमें नम्रता थी, आत्मसमर्पण था और दया थी। उसका भावमय मुख सभी को भावुक बना देता था और अपनी तरफ खींचता था। एक शिशु की भाँति उसकी दृष्टि थी और हँसी थी। वहाँ की और-और सुन्दरियाँ समझती थीं, बेचारी बहुत ही सीधी है। इससे अधिक एक स्त्री को और क्या चाहिए ?

—"आपने कहा न, मैदाम लासुनस्काया ने आपको मेरे पास भेजा है ?" उसने पांडालेवस्की से पूछा।

—"हाँ। मैदम ने मुझे भेजा।" उसने अस्पष्ट स्वर में उत्तर दिया। उसके उच्चारण में विशेषता थी। "मैदम ने आज विशेष कर आपको उनके साथ मध्याह्न-भोज में सम्मिलित होने के लिए अनुरोध किया है। मैदम—" पांडालेवस्की जब किसी महिला का उल्लेख करता था तब वह बहुत ही सावधान रहता था कि कि कहीं संबोधन में व्यक्तिगत सम्पर्क का आभास न मिल जाय।—"आज मैदम एक नये अतिथि से आपका परिचय कराना चाहती हैं।"

—"वे कौन हैं ?"

—"सेंट पीटर्सबर्ग के बैरन मफेल, वे एक प्रतिष्ठित राज-कर्मचारी हैं। प्रिन्स गेरिन में थोड़े दिन हुए मैदम लासुनस्काया से उनका परिचय हुआ है। सुशिक्षित और संस्कृतिसंपन्न युवक होने के कारण मैदम उनकी बड़ी प्रशंसा करती हैं। फिर बैरन महोदय भी साहित्य में रुचि रखते हैं, और—अरे! कितनी सुंदर तितली देखिये! जरा देखिये!—हाँ क्या कह रहा था ?—और अर्थशास्त्र में। उन्होंने उसी विषय पर एक आकर्षक निबन्ध लिखा है जिसके सम्बन्ध में वे मैदम का अभिमत जानना चाहते हैं।"

—"अर्थशास्त्र पर निबन्ध लिखा है ?"

—"हाँ। साहित्यिक शैली को सामने रख कर। शैली के सम्बन्ध में मैदम—। यह तो आप जानती ही हैं कि मैदम लासुनस्काया अपने अन्यान्य गुणों के अतिरिक्त इस दिशा में निस्सन्देह विशेष योग्यता रखती हैं। बहुत बड़े बड़े विद्वान्, जैसे कवि झुकोवस्की और मेरे प्रथम आश्रयदाता महान् रोकसोलान मेडीयारोवीच शानड्रिका जो ओडीसा के रहनेवाले हैं, आपने अवश्य उनका नाम सुना होगा, मैदम के निकट उनका परामर्श लेने आते हैं?"

—"नहीं। मैंने कभी उनका नाम नहीं सुना!"

—"उनके समान आदरणीय सज्जन का नाम तक नहीं सुना! आश्चर्य! हाँ क्या कह रहा था, महाशय शांड्रिका मैदम के रूसी भाषा के ज्ञान की प्रशंसा करते हैं।"

—"क्या बैरन में अपनी विद्वत्ता के लिए गर्व है?"

—"बिन्दुमात्र भी नहीं। मैदम लासुनस्काया इसके विपरीत कहती हैं कि वे सभी प्रकार के लोगों के साथ समान रूप से मिलते-जुलते हैं। बिठोफेन के सम्बन्ध में जब वे कहने लगते हैं तब बूढ़ा सम्राट् भी खुशी के मारे उछल पड़ता है। इस सम्बन्ध में उनसे कुछ सुनने की इच्छा मुझे भी है। क्योंकि यही तो मेरा पेशा भी है।"……कृपया मुझसे यह उपहार—जंगली फूल ग्रहण कीजिये।"

पावलोवना ने फूल लिया और दो चार कदम चल कर उसे रास्ते में गिर जाने दिया। अब पावलोवना का मकान अधिक दूर न था। दिखाई पड़ा, नया सफेदी किया हुआ। उस मकान की बड़ी बड़ी खिड़कियाँ नींबू आदि पुराने वृक्षों के झुरमुट में से झाँक-झाँक कर मानो निमंत्रण दे रही थीं।

—"मैदम लासुनस्काया से जाकर क्या कहूँगा?" पांडा-

लेवस्की बोला। विचारा अपने फूल के दुर्भाग्य से कुछ मुरझाया हुआ था। "क्या आप मैदम के साथ मध्याह्न-भोजन में शामिल होंगी ? मैदम ने आपके भाई को भी निमंत्रित किया है।"

—"मैं अवश्य अपने भाई के साथ आऊँगी। और हाँ ! नातालिया कैसी है ?"

—"वे अच्छी हैं, ईश्वर की कृपा से। लेकिन मैं तो अपना रास्ता छोड़ कर आगे बढ़ आया। अच्छा मैदम, अब मुझे लौटने की अनुमति दीजिये।"

पावलोवना रुकी।

—"अन्दर नहीं चलियेगा ?" उसने द्विधासहित कहा।

—"यह तो बड़ी खुशी की बात होती। लेकिन डरता हूँ, बड़ी देर हो जायगी। मैदम लासुनस्काया थॉलबर्ग की एक नयी रागिणी सुनना चाहती हैं। और उन्हें सुनाने के लिए पहले से ही मुझे कुछ अभ्यास कर तैयार हो जाना चाहिये। फिर, सच पूछिये तो, मैं डरता हूँ मेरी उपस्थिति से आप खुश होंगी कि नहीं !"

—"अरे नहीं-नहीं। आप इसलिए इतना चिंतित हो रहे हैं।"

पांडालेवस्की ने लंबी साँस छोड़ी और विशेष ढंग से आँखें नीची कर लीं।

—"अच्छा ! सुप्रभात।" क्षण भर रुक कर बोला और सम्मान-प्रदर्शन के लिए झुक कर एक कदम पीछे हटा।

पावलोवना मुड़ कर अपने घर की तरफ चलने लगी।

पांडालेवस्की ने भी अपने घर का रुख लिया। दिखावटी नम्रता का नकाब उसके मुख पर से हट गया और वहाँ आत्म-निभरता और दृढ़ता का भाव झलकने लगा। यहाँ तक कि उसके चलने का ढंग भी बदल गया। अब उसका पाद-क्षेपण लंबा हो गया हर कदम वजन के साथ गिरने लगा। वह अपनी छड़ी को हवा

में घुमाता हुआ बहुत दूर निकल गया। अब एकाएक उसके होंठ पुनः हँसने के कारण खिलने लगे। वास्तव में उसकी अनुसंधित्सु दृष्टि सड़क के किनारे एक तरुणवयस्का किसान की लड़की पर जा पड़ी थी। वह अपने बछड़ों को हँका कर ओट के खेत से बाहर ला रही थी। पांडालेवस्की एक बिलाव की क्षिप्रता से उस लड़की के पास पहुँच गया और कोई बात छेड़ने लगा। वह लड़की पहले चुप रही फिर लजायी और हँसी को रोकने लगी। फिर अपनी आस्तीन से मुँह ढाँक कर दूसरी तरफ मुँह किये खड़ी हो गयी और बोली, "जाइये, जी !"

पांडालेवस्की ने उँगलियों से संकेत कर उससे कुछ ओट के फूल लाने के लिए कहा।

—"आप ओट-फूल लेकर क्या करेंगे ? माला गूँथेंगे क्या ?" फिर मनाही के स्वर में कहा, "जाइये, जी !"

—"इधर तो देखो, मेरी अच्छी—।" पांडालेवस्की ने फुसलाना चाहा।

—"अरे आप जहाँ जा रहे थे जाइये !" उस छोकरी ने उसे रोक कर कहा. "देखिये आपके छोटे मालिक लोग आ रहे हैं।"

पांडालेवस्की ने घूम कर देखा। सचमुच मैदम लासुनस्काया के दो पुत्र वानया और पेतया दौड़ते हुए उसीकी तरफ आ रहे थे। उनके साथ उनका गृह-शिक्षक बासिस्टोफ—एक बाईस वर्षीय युवक आ रहा था। वह थोड़े दिन हुए कालिज से निकला था। बासिस्टोफ ऊँचे कद का साधारण मुखावयववाला तेजस्वी सरल और न्यायप्रिय युवक था। फिर भी उसकी आँखें सूअर की सी छोटी-छोटी थीं, नाक बड़ी थी, होंठ मोटे थे तथा सामूहिक रूप से उसमें एक भद्दापन था। वह अपनी वेश-भूषा के प्रति कम यत्न लेता था। बाल इच्छानुसार बढ़ते थे। यह उसका दिखावटीपन

नहीं बल्कि आलस्य था। अच्छा खाना तथा अच्छी तरह सोना उसका प्रिय था। अच्छी किताबों तथा गरमागरम आलोचनाओं से भी वह विशेष दिलचस्पी रखता था। वह पांडालेवस्की को घृणा की दृष्टि से देखता था।

मैदम लासुनस्काया के पुत्र वासिस्टोफ को मानो पूजते थे। वे उससे बिंदुमात्र भी डरते न थे। परिवार के अन्य लोगों से भी वह घनिष्ठ संपर्क रखता था। लेकिन मैदम को यह सब अच्छा नहीं लगता था, हलाँकि वह कहती थी कि उसके लिए सामाजिक कुसंस्कारों का कोई मूल्य नहीं है।

—"सुप्रभात। मेरे बच्चो!" पांडालेवस्की बोला। "आज तो तुम लोग बहुत सवेरे ही टहलने निकले हो!" बासिस्टोफ से बोला, "लेकिन मैं तो बहुत पहले ही निकल पड़ा। प्रकृति के उपभोग करने में ही मुझे आनंद मिलता है।"

—"यह तो हम देख ही रहे थे कि आप किस प्रकार प्रकृति का आनंद उठा रहे थे!" बासिस्टोफ धीरे-धीरे बोला।

—"आप बहुत ही स्थूल विचार के हैं। ईश्वर ही जानते हैं आप क्या सोच रहे हैं। मै आपको जानता हूँ न!"

जब पांडालेवस्की बासिस्टोफ जैसे लोगों के साथ बातें करता था तब यों ही उत्तेजित हो उठता था तथा 'स' के उच्चारण को आवश्यकता से ज्यादा साफ और सुरीला बना देता था।

—"अरे मैं यह नहीं सोच रहा था कि आप उस लड़की से किधर जायेंगे पूछ रहे थे।" बासिस्टोफ ने इधर से उधर देखते हुए कहा। क्योंकि पांडालेवस्की सीधे उसके मुख की तरफ देख रहा था जो बासिस्टोफ को अप्रीतिकर लगा।

—"मैं फिर कहता हूँ आप स्थूल विचार के हैं, इसके

अतिरिक्त और कुछ नहीं। आप केवल गद्यमय रूप को छोड़ किसी वस्तु के और किसी रूप को देखना नहीं चाहते।"

—"बच्चो!" बासिस्टोफ ने एकाएक आदेश दिया। वह देखो! मैदान के बीच एक 'वीलो' पेड़ है। जाओ। कौन उसे पहले छू सकते हो, एक-दो-तीन।"

बच्चे 'वीलो' वृक्ष को छूने के लिए दौड़े जिस तेजी से वे दौड़ सकते थे। बासिस्टोफ भी उनके साथ दौड़ा।

—"गँवार कहीं का!" पांडालेवस्की ने अपने मन में कहा, "यह बच्चों को बर्बाद करके ही रहेगा। गँवार नहीं तो और क्या है!"

फिर बड़ी संजीदगी से अपने साफ और सुन्दर पोशाक की तरफ देखते हुए पांडालेवस्की ने अपने कोट की आस्तीन को बड़ी सावधानी से उँगलियों को फैला कर झाड़ लिया और कोट के 'कालर' को सीधा किया फिर अपने रास्ते पर चलने लगा।

अपने घर में जा कर एक पुराना 'गाउन' पहन कर दृढ़ निश्चयता के साथ 'पियानो' के सामने बैठ गया।



रूडिन—२

मैदम लासुनस्काया का वास-भवन वहाँ के अच्छे मकानों में गिना जाता था। वह एक पत्थर का बना विशाल प्रासाद था जो अट्ठारहवीं सदी की शैली में रासट्रेली के नक्शे के अनुसार बनाया गया था। यह एक पहाड़ी पर अवस्थित था, जिसके नीचे मध्य रूस की एक प्रमुख नदी प्रवाहित होती थी। मैदम लासुनस्काया स्वयं अभिजात और प्रतिष्ठित कुल की तथा धनसंपन्ना थी। वह मृत 'प्रीवि काउन्सिलर' की पत्नी थी। पांडालेवस्की कहता था, मैदम समग्र यूरोप को जानती है तथा समग्र यूरोप भी मैदम को जानता है परंतु सच तो यह था कि मैदम प्रायः यूरोप के सभी देशों में अपरिचित थी और न तो सेंट पीटर्सबर्ग में ही उसका अधिक बोलबाला था। फिर भी मास्को के अधिकांश लोग उसे जानते थे तथा उससे मिलने के लिए आते थे। अभिजात वर्ग के लोगों में उसका आना-जाना था। लोग मैदम को झक्की स्वभाव की कहा करते थे, जो हो, उसका स्वभाव भी बहुत मधुर न था, फिर भी वह एक बुद्धिमती स्त्री थी। यौवन में मैदम लासुनस्काया बहुत ही रूपवती थी। कितने कवि उसकी प्रशंसा में कविताएँ लिखा करते थे, कितने नौजवानों ने उस पर अपना हृदय न्यौछावर किया था और कितने ही प्रतिष्ठित व्यक्ति उसकी प्रशंसा कर अपने को धन्य मानते थे। परंतु यह बात पचीस-तीस साल पूर्व की थी। परंतु अब मैदम को जो पहले-पहल देखेगा वह यही कहेगा

कि क्या इस अधेड़ उम्र की पीली, मुरझाई हुई, तीखी नाकवाली औरत में कभी सुंदरता थी ? क्या यह वही है जिसके लिए कभी वीणाओं में रागिणियाँ बज उठती थीं ? और, प्रत्येक मनुष्य पार्थिव जगत के इस परिवर्तन को देख कर मन ही मन विस्मयचकित होगा। लेकिन पांडालेवस्की कहता था कि मैदम लासुनस्काया की आँखों में आज भी पूर्व की सी छटा है। उसी पांडालेवस्की का कहना था कि मैदम को समस्त यूरोप जानता है।

हर साल गर्मी में मैदम लासुनस्काया अपने बच्चों को लेकर अपने ग्राम्य-निवास में जाकर रहती थी। लासुनस्काया की संतानें तीन थीं। नौ-दस साल के दो पुत्र और एक सत्रह साल की लड़की, नातालिया। मैदम के ग्राम्य-निवास का द्वार सभी के लिए उन्मुक्त रहता था। वह सभी का—विशेष रूप से अविवाहित युवकों का समादर करती थी। वह ग्रामीण स्त्रियों से कुछ चिढ़ती थी जिस कारण वहाँ की स्त्रियाँ भी मैदम को देख जलती थीं। मैदम उनकी दृष्टि में क्रोधी, दुर्विनीत और स्वेच्छाचारी थी। फिर लासुनस्काया दूसरों के साथ मिलने-जुलने में जिस प्रकार की स्वतंत्रता अपनाती थी वह उनकी आँखों में सचमुच ही भयानक थी।

यह सच था कि मैदम ग्राम्य-जीवन के प्रतिबंधों को नहीं मानती थी। पर वहाँ का स्त्री-समाज उसकी सहज सरलता को देख कर यह समझता था कि वह नगर में रहनेवाली तथा अभिजात-वंशीया होने के कारण उन ग्रामीण स्त्रियों को तुच्छ समझती है उन्हें थोड़ी-बहुत घृणा की दृष्टि से देखती है। परंतु मैदम लासुनस्काया शहर में रहते समय भी वहाँ की स्त्रियों से इसी प्रकार की हास्यकर मित्रता का व्यवहार करती थी पर वहाँ घृणा का आभास नहीं रहता था।

यह एक ध्यान देने योग्य बात है कि एक व्यक्ति अपने

अधीनस्थ व्यक्तियों से जिस प्रकार का बर्ताव करता है वैसा बर्ताव अपने उपरिस्थ व्यक्तियों से नहीं करता। ऐसा क्यों है? कौन इसका जवाब देगा।

थॉलबर्ग की रागिणी का पूर्ण रूप से अभ्यास कर पांडालेवस्की अपने साफ-सुथरे कमरे से नीचे बैठने के कमरे में आया जहाँ परिवार के सभी एकत्र थे। पारिवारिक जलसा शुरू हो गया था। घर की मालकिन एक बड़ी 'कोच' पर आसीन थी। उसके पाँव 'कोच' के नीचे धरे थे तथा उसके हाथ में एक फ्रांसीसी भाषा की नयी पुस्तिका थी जिसके पत्रों को वह यों ही आहिस्ते-आहिस्ते पलट रही थी। खिड़की के पास बैठी थी मैदम की पुत्री नातालिया। दूसरी तरफ बैठी थी कुमारी बोनकोर्ट। साठ साल की एक जीर्ण-शीर्ण बुढ़िया जिसकी रंग-बिरंगी टोपी के नीचे से नकली बाल दिखाई पड़ रहे थे। उसके कानों में सूती-पशमी लच्छे खोसे हुए थे। घर के कोने में, प्रायः दरवाजे के पास बासिस्टोफ बैठे-बैठे एक समाचार-पत्र पढ़ रहा था। उसी के पास पेतया और वानया गोली खेल रहे थे। चूल्हे का सहारा लेकर खड़ा था एक सज्जन जिसने अपने हाथों को पीछे जुटाये रखा था। वह व्यक्ति कद का नाटा था तथा उसके भूरे बाल उलझे हुए थे। मुखमंडल मलिन था तथा छोटी-छोटी काली आँखें चंचल। उसका नाम था—आफ्रीकान सेमीयोनोवीच पिगासोव।

पिगासोव अजीब आदमी था। हर चीज, हर आदमी विशेष रूप से औरतों से उसकी नफरत थी। वह सवेरे से शाम तक बड़बड़ाया करता था, कभी-कभी पूरी संजीदगी के साथ और कभी कभी यों ही बेवकूफ की तरह फिर भी वह बड़बड़ाता था अदम्य उत्साह के साथ। उसका कर्कश स्वभाव और चिड़चिड़ापन बालकों का सा था। उसकी हँसी अथवा बातचीत में इतना कड़ुवापन

था मानो वे कडुवे रस में बुझी थीं। मैदम लासुनस्काया पिगासोव को स्वेच्छा से आमंत्रित करती थी क्योंकि उसकी हल्की रसिकता से मैदम का मनोरंजन होता था। सचमुच पिगासोव की रसिकता मामूली भँड़ैती ही थी। उच्छ्वसित अतिशयोक्ति के लिए पिगासोव का प्रबल अनुराग था। जैसे, पिगासोव को किसी दुर्घटना के बारे में कहने पर—चाहे वह किसी गाँव में बिजली गिरने की घटना हो अथवा किसी कारखाने के बाँध के बाढ़ के कारण टूट जाने की घटना हो अथवा किसी किसान के कुल्हाड़ी से हाथ कट जाने की घटना हो, वह अस्वाभाविक कर्कशता से पूछेगा, "वह कौन थी ?"-याने वह कौन स्त्री थी जिसके कारण दुर्घटना घटी है। उसका विश्वास था कि यदि प्रत्येक दुर्घटना की जाँच गहराई तक हो तो देखा जायगा उसके मूल में कोई न कोई नारी अवश्य है।

एक बार पिगासोव को एक स्त्री के पाँव पर गिरना पड़ा था। उस स्त्री से पिगासोव का विशेष परिचय नहीं था। जो हो पिगासोव ने किसी प्रकार रो-पीट कर उस स्त्री से जी छुड़ाने के लिए उसके सम्मुख इसकी प्रतिज्ञा की कि वह कदापि उसके मकान में नहीं घूसेगा। एक बार एक घोड़े ने भयानक वेग से पहाड़ी पर से उतरते समय लासुनस्काया की एक नौकरानी को खाई में गिरा दिया। बेचारी मरते-मरते बच गयी। तब से पिगासोव उस घोड़े को देखकर बहुत ही अघाता था और कहता था, कितना प्यारा घोड़ा है और वह उस पहाड़ी तथा उस खाईं के दर्शन के लिए जाया करता था मानो वे स्थान उसके लिए तीर्थ बन गये थे।

इस प्रकार के पागलपन के कारण पिगासोव अपने जीवन में उन्नति नहीं कर सका। उसका जन्म एक दरिद्र परिवार में हुआ था। उसका पिता अनेक प्रकारों के छोटे-बड़े काम कर अपनी

जीविका चलाता था। उसका शिक्षा के प्रति कम आकर्षण था। इसलिए अपने पुत्र को शिक्षित करने में उसने कम प्रयत्न किया। उसने अपने पुत्र को केवल खिला-पिला कर बड़ा किया और इसीसे उसने अपना कर्तव्य समाप्त किया। पिगासोव की माँ ने पिगासोव को अनुचित मात्रा में लाड़-प्यार देकर बिगाड़ा पर बेचारी अधिक दिन जीवित न रही। तब पिगासोव ने अपने ऊपर बड़े होने का भार ले लिया। वह स्वयं जिले के मदरसे में जा भर्ती हो गया वहाँ से वह और भी आगे गया। अपनी चेष्टा से उसने विभिन्न भाषाएँ सीखीं—फ्रांसीसी, जर्मन और लातीन, और कालिज से अच्छा प्रमाण-पत्र भी हासिल किया। उसके बाद वह विश्वविद्यालय में गया। वहाँ वह लगातार गरीबी से लड़ता रहा किंतु उसे अंत तक सफलता मिली तथा उसने 'डोरपाट' विश्व-विद्यालय की तीन सालवाली पढ़ाई पूरी की। इतने पर भी पिगासोव की प्रतिभा साधारण स्तर से ऊपर उठ न सकी। जो हो, पिगासोव का धैर्य तथा स्थैर्य उल्लेखनीय था। उसके जीवन का लक्ष्य स्थिर और स्पष्ट था। उसकी उच्चाकांक्षा थी और भी प्रबल। वह उन्नत समाज का एक सदस्य बनना चाहता था। अपने भाग्य के विरुद्धाचरण होने पर भी वह सामाजिक मुआमलों में किसी से पीछे रहना नहीं चाहता था। उसकी इसी आदर्श ने विश्वविद्यालय में कठिन परिश्रम के साथ विद्याध्ययन करने को उसे मजबूर किया और गरीबी का रगड़ा खाते-खाते उसकी दृष्टि तथा पर्यवेक्षण-शक्ति क्रमशः तीक्ष्ण होती गयी। उसकी बातों में एक विशेष प्रकार का निरालापन आ गया। अपने प्रथम जीवन में ही उसने विरक्ति उत्पन्न करनेवाली बेतुकी बातें करने का ढंग सीख लिया था जिससे उसके विचार साधारण सीमा के भीतर ही रह गये। इसके अतिरिक्त वह अपने विचारों को इस प्रकार से प्रकट करता था

जिससे वह साधारण बुद्धिवाले व्यक्ति नहीं बल्कि एक असाधारण व्यक्ति जान पड़े।

स्नातक की उपाधि प्राप्त कर लेने के बाद पिगासोव ने एक अध्यापक बनने का निश्चय किया। वह जानता था कि उसके अतिरिक्त उसके लिए कोई और उपाय नहीं है उच्च वर्ग के लोगों से मिलने-जुलने का। उसने विशेष कर अभिजातवंशियों के संपर्क में रहना चाहा। पिगासोव अच्छी तरह जानता था कि वैसे लोगों से किस प्रकार का बर्ताव करना पड़ता है—नम्रता और चाटुकारिता की चरम सीमा पर पहुँच कर ही उन लोगों को वश में लाया जा सकता है, लेकिन वह सदा ही एक सा झगड़ालु प्रकृति का बना रहा। जो हो, फिर भी कहना पड़ेगा कि पिगासोव कठोर वास्तविकता से गठित था। पिगासोव ने विद्यार्जन किया अपनी चेष्टा से पर वह विद्या-प्रेम के कारण नहीं, इस कारण वह ज्ञान की गहराई तक पहुँच न सका। इस कारण वाद-विवाद के हर अवसर पर उसे नीचा देखना पड़ता था और उसका साथी, जिसकी वह हमेशा हँसी उड़ाया करता था, जो सचमुच एक क्षुद्र-बुद्धि का आदमी था, सही माइने में ठोस उन्नति प्राप्त करने में समर्थ हुआ और हर बात में उसे सफलता मिलने लगी। इस व्यर्थता के कारण पिगासोव की क्रोधाग्नि भभक उठी और उसने अपनी समस्त किताब-कापियाँ जला डालीं तथा सरकारी नौकरी में लग गया।

पहले पहल पिगासोव का भाग्य उज्ज्वल ही दिखाई पड़ा फिर भी अपने जन्मजात कारण से उसमें योग्यता की कमी अंत तक रही। इस कमी पर पर्दा डालने के लिए उसे साहसिकता और घृणा का एक आवरण रचना पड़ा। जो हो, दुनिया की आँखों में शीघ्राति-शीघ्र बड़े होने की चेष्टा से उसे मुसीबत का सामना करना

पड़ा—गलत कदम उठाना पड़ा, यहाँ तक की सरकारी काम में इस्तीफा देना पड़ा। उसके बाद उसने अपने खरीदे हुए एक छोटे से गाँव में तीन साल बिताये और सहसा एक दिन एक धनी और अर्धशिक्षिता महिला से विवाह कर लिया। वह महिला पिगासोव के अद्भुत और हास्यकर आचरणों से मुग्ध हुई थी। परंतु पिगासोव का स्वभाव दिनोंदिन इतना कर्कश और विरक्तिकर हो उठा कि उसका पारिवारिक जीवन कष्टमय हो गया। इस प्रकार कई साल बीते, लेकिन एक दिन उसकी पत्नी भाग कर मास्को चली गयी जहाँ उसने अपनी जमींदारी मामूली दाम पर बेंच डाली। पिगासोव ने उस जमींदारी में एक मकान भी बनवाया था। जो हो, पिगासोव ने उस अंतिम आघात से बहुत ही मर्माहत हो कर अपनी पत्नी के विरुद्ध मुकदमा दायर किया परन्तु उसमें भी हार गया। तब से वह एकाकी रहने लगा। उसी समय से अपने प्रतिवेशियों से उसका मेल-जोल बढ़ा, फिर भी वह उनके पीठ-पीछे, कभी-कभी मुँह पर ही उनकी निंदा किया करता था। लेकिन वे सब पिगासोव से मित्रता रखते थे मुँह दबा कर हँसने के लिए, हँसी उड़ाने के लिए। वे उससे बिंदुमात्र भी डरते न थे। जो हो, उस समय से पिगासोव ने एक भी किताब नहीं छूई और उसके अधीन खेतिहर किसान आराम से रहने लगे!

मैदम लासुनस्काया ने पांडालेवस्की को कमरे में दाखिल होते देख कर पूछा, "पावलोवना आएगी न?"

—"पावलोवना ने आपको धन्यवाद देने के लिए कहा है, और कहा है कि अवश्य आयेंगी।"

पाडांलेवस्की ने बड़ी नम्रता से दाँये और बाँये झुक कर कहा। उसने अच्छी तरह अपने सँवारे हुए बालों को गोल-गोल सफेद

हाथों से छू कर देख लिया। उसकी ऊँगलियों के नाखून तिकोने कटे थे।

—"और वोलीनस्टेव भी तो आ रहे हैं ?"

—"जी। महाशय वोलीनस्टेव भी आयेंगे।"

लासुनस्काया ने पिगासोव की तरफ घूम कर कहा, "तो आप निश्चित हैं कि सभी लड़कियाँ बनावट पसंद करती हैं ?"

पिगासोव के ओंठ एक किनारे से टेढ़े हो गये। उसने एकाएक झटके से अपनी केहुनी टेढ़ी कर ली।

—"मैं कहता हूँ।" वह बहुत धीरे-धीरे कहने लगा,—वह अपने क्रोध के समय जो भी कुछ कहता था धीरे-धीरे तौल कर कहता था,—"मैं कहता हूँ, जवान लड़कियाँ अक्सर—मैं उपस्थित तरुणियों के सम्बन्ध में कुछ नहीं कह रहा हूँ।"

—"कहिये ! किसी ने आपको रोका नहीं !" मैदम ने उसे रोक कर कहा।

—"नहीं मैं उपस्थित तरुणियों के सम्बन्ध में कुछ नहीं कहना चाहता।" पिगासोव ने पुनः कहा। "साधारणतया लड़कियाँ कृत्रिमता चाहती हैं विशेषतः अपने मनोभाव को प्रकट करने में। यदि कोई तरुणी डर जाती है अथवा प्रसन्न होती है या दुःखित तब वह सर्वप्रथम बड़ी नजाकत से अपने शरीर को किसी विशेष ढंग से स्थित करेगी, जैसे,"—पिगासोव ने अश्लील ढंग से खड़े हो होकर हाथों को एकत्र कर आगे किया।—"फिर अपने कंठ से एक अद्भुत स्वर निकालेगी—हाय ! नहीं तो बुरी तरह हँसने लगेगी या रोने लगेगी।" पिगासोव ने अद्भुत हँसी हँस कर कहा, "मुझे एक बार एक तरुणी की सही सच्ची नजाकत देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था।"

—"किस प्रकार ?"

पिगासोव की आँखें चमक उठीं।

—"एक बार मैंने एक युवती के पीछे से उसकी बगल में सिरिस की टहनी से आहिस्ते मारा। फिर क्या देखना, वह एकाएक चिल्ला पड़ी। तब मैंने कहा, "सावास!—यही था स्वाभाविक रूप से चौंकना।"

सभी हँस पड़े।

—"क्या बेकार की बातें कर रहे हैं—आफ्रीकान सेमीयोनोवीच! क्या आप समझते हैं कि मैं आपकी बात मान लूँगी कि आपने भी कभी किसी लड़की को सिरिस की डाली से मारा है!"

—"मैं कहता हूँ। एक डाली से—बहुत बड़ी डाली थी, इतनी बड़ी कि उससे एक किले की चहारदिवारी बन सकती थी।"

—"कैसी भयानक बातें कह रहे हैं महाशय।" कुमारी बोनकोर्ट ने बच्चों पर कठोर दृष्टि निबद्ध करके कहा। बच्चे किलकारी मार कर हँस रहे थे।

—"नहीं नहीं आप उनकी बातों पर विश्वास न कीजिये। आप तो उनको जानते ही हैं।" मैदम लासुनस्काया बोली।

परन्तु वह फ्रांसीसी महिला कुछ देर तक गुर्राती रही और दबे स्वर में कुछ बड़बड़ाती रही।

"आप मुझपर विश्वास नहीं भी कर सकतीं।" पिगासोव धीरे-धीरे कहने लगा, "फिर भी मैं कहूँगा कि मैंने आपको यथार्थ सत्य ही कहा है। और ऐसा अनुभव क्या मैं नहीं प्राप्त कर सकता? आप संभवतः कहेंगी कि आप मेरी इस बात पर विश्वास नहीं कर सकतीं लेकिन हमारे पड़ोस की मैदम शेपूजोवा ने स्वयं कहा है कि एलेना आंतोवना ने अपने भतीजे की हत्या की है।"

—"क्या कह रहे हैं!"

—"मुझे पूरा कह तो लेने दीजिये फिर सब-कुछ सुन कर अपने मन में विचार कीजिये। मैं उनकी निंदा करना नहीं चाहता वरन् वे मुझे अच्छी लगती हैं—साधारण रूप से। उनके घर में एक पंचांग के सिवाय कोई दूसरी पुस्तक नहीं है और वे पढ़ती भी हैं तो चिल्ला कर जिससे पसीना निकल आता है और उस परिश्रम से उनकी आँखें भी मानो बाहर निकलने लगती हैं। थोड़े में कहना है कि वे एक भली स्त्री हैं। जब उनके नौकर-चाकर उनके प्रति खुश हैं तो मैं क्यों उनकी निंदा करूँ?"

—"बस अब सवार हुई—" मैदम लासुनस्काया ने कहा, पिगासोव पर अब वही पुरानी धुन सवार हुई अब वह आधी रात के पहले नहीं उतरने की।"

—"धुन सवार हुई! तो सुनिये, औरतों पर एक नहीं तीन-तीन धुनें सवार हैं जब तक औरतें नहीं सो जातीं तब तक वे नहीं उतरतीं।"

—"वे कौन-कौन सी हैं?"

—"दूसरों की निंदा करना, दूसरों के प्रति आक्षेप करना, और दूसरों की बुराई करना।"

—"देखिये पिगासोव आप अकारण स्त्रियों की निंदा न कीजिये। कोई-कोई स्त्रियाँ वास्तव में निंदित हो सकती हैं। लेकिन—"

—"आप कह सकती हैं, किसी स्त्री ने मेरी हानि पहुँचायी होगी।"

मैदम संकोच में पड़ गयी। उसने पिगासोव के दुःखद विवाह-जीवन का स्मरण कर यंत्रचालितवत् सर को हिलाया।

—"सचमुच एक स्त्री से मेरी बड़ी हानि हुई थी। फिर भी वह बड़ी अच्छी थी—बड़ी दयालु थी।" पिगासोव बोला।

—"वे कौन थीं ?

—"मेरी माँ।" पिगासोव ने धीरे से कहा।

—"आपकी माँ ? उन्होंने आपकी कौन-सी हानि पहुचायी ?"

—"मुझे इस संसार में ला कर !"

मैदम की भौंहें कुंचित हुईं। बोली, "हमारी आलोचना क्रमशः निरस प्रसंग की ओर बढ़ती जा रही है। पांडालेवस्की, आप थॉलबर्ग की वह रागिणी वजाइये। संभवतः संगीत पिगासोव को तसल्ली दे सकेगा। सुना जाता आरफ्यूस इसीके द्वारा जंगली पशुओं को वश में करते थे।"

पांडालेवस्की पिआनो के सामने जा कर बैठ गया और उस रागिणी को बड़ी ही योग्यता से बजाया। पहले पहल नातालिया उस रागिणी को ध्यान से सुन रही थी पर बाद में उसने अपने काम में मनोनिवेश किया।

—"धन्यवाद। बहुत सुन्दर।" मैदम लासुनस्काय बोली, "थॉलबर्ग मुझे बहुत अच्छा लगता है, उनकी अपनी विशेषता है। लेकिन आप क्या सोच रहे हैं ? पिगासोव ?"

—"मैं सोच रहा हूँ।" पिगासोव धीरे-धीरे बोला, स्वार्थियों के तीन वर्ग होते हैं। प्रथम वर्ग में वे आते हैं जो स्वयं जीवित रहते हैं और दूसरों को जीवित रहने देते हैं, दूसरे वर्ग के वे हैं जो स्वयं जीवित रहना चाहते हैं पर औरों को जीवित रहने नहीं देते। तीसरे वर्ग के स्वार्थी न तो स्वयं जीवित रहते और न दूसरों को ही जीवित रहने देते। स्त्रियाँ इसी वर्ग में आती हैं।"

—"वाह! आपने क्या कहा। लेकिन एक बात मेरी समझ में नहीं आती, पिगासोव, कि आपके निष्कर्ष के निर्मूल होने पर आपका विश्वास है कि नहीं—जैसे कि आपसे कभी गलती होती ही नहीं !"

—"नहीं। ऐसा नहीं। गलतियाँ मुझसे भी होती हैं। हरेक पुरुष गलती कर सकता है, लेकिन आप जानती हैं एक पुरुष की गलती और एक नारी की गलती में क्या अन्तर है? नहीं जानतीं? पुरुष कह सकता है दो और दो मिलकर चार नहीं बल्कि पाँच या साढ़े तीन बन सकता है, जहाँ एक स्त्री कहेगी दो और दो मिल कर एक मोमबत्ती बनती है!"

—"संभवतः मैंने यह बात अनेक बार आप से सुनी है। पर अभी यह नहीं समझ पायी कि उन तीन वर्गों के स्वार्थियों से इस संगीत का क्या सम्पर्क है जो अभी आपने सुना?"

—"कुछ भी नहीं। मैं संगीत नहीं सुन रहा था।"

—"जो हो। देखती हूँ आपका यह रोग असाध्य है। जब आपको संगीत अच्छा नहीं लगता तब आपको क्या अच्छा लगता! शायद साहित्य?"

—"अवश्य। साहित्य से मेरा प्रेम है, पर आधुनिक साहित्य से नहीं!"

—"क्यों?"

—"उसका कारण अभी बताता हूँ। हाल ही में एक महोदय के साथ नाव से 'ओका' नदी पार कर रहा था। नाव संयोग से कटी किनारे में जाकर फँस गयी। उस महाशय के साथ एक भारी गाड़ी थी जिसे हाथों से खींच कर किनारे पर चढ़ाना था। मल्लाह लोग उस गाड़ी को बड़े परिश्रम से उस ढलुवे किनारे पर चढ़ाने लगे, परन्तु वह महोदय नाव में खड़े-खड़े इस प्रकार हाय-हाय करने लगे कि उसकी दशा को देख मुझे दुःख हुआ। मैं समझता हूँ श्रम-विभाजन-प्रणाली का वह एक नवीनतम प्रयोग था। आधुनिक साहित्य में भी यह बात लागू हो सकती है, जहाँ कोई जी-जाँगड़ से मेहनत करता तो कोई खड़ा-खड़ा रोता है।"

मैदम लासुनस्काया हँसने लगी।

—"और वे कहते हैं यह वास्तविक जीवन का स्वरूप-चित्रण है। अक्लांत पिगासोव कहता गया, "तथा सामाजिक समस्याओं के प्रति हार्दिक सहानुभूति का प्रदर्शन, और इस प्रकार वे न जाने कितनी अच्छी-अच्छी बातें कह जाते हैं।"

—"लेकिन स्त्रियाँ, जिनकी कि आप निन्दा करते हैं, अच्छी-अच्छी बातें नहीं कहा करतीं।"

पिगासोव ने अपने कंधों को झटके से ऊँचा कर ढीला छोड़ दिया। बोला, "वे इसलिए नहीं कहा करतीं कि वे कहना नहीं जानतीं।"

मैदम लासुनस्काया कुछ लाल हुई। उसने बलात् मुस्कुरा कर कहा, आप अशिष्ट होते जा रहे हैं, पिगासोव!"

घर के भीतर एक सन्नाटा छा गया।

—"जोलोतोनोशा कहाँ पर है?' मैदम के लड़कों में से एक ने सहसा बासिस्टोफ से पूछा।

—"पोलटावा प्रदेश में, जो 'लिटल राशिया' के बीचोबीच है।" पिसागोव ने उत्तर में कहा। आलोचना के प्रवाह के बदलने का यह अवसर पाकर पिगासोव प्रसन्न हुआ। "हम साहित्य के विषय में आलोचना कर रहे थे। यदि मेरे पास धन होता तो मैं अभी एक यूक्रेनी कवि बन जाता।"

—"मैं यह नहीं मान सकती कि आप एक यूक्रेनी कवि बन सकते हैं!" मैदम लासुनस्काया बोली, "आप उनकी भाषा जानते हैं?"

—"कुछ भी नहीं। क्योंकि मुझे उसकी जरूरत नहीं!"

—"आपको उसकी जरूरत नहीं?"

—"नहीं! आपको कविता लिखना हो, आप एक कागज उठा लीजिये और उसके माथे पर लिख लीजिये—कविता! फिर

लिखना आरम्भ कर दीजिये जो भी कुछ आपके मन में आये। बस बन जायगी एक कविता। अब आप उस कविता को प्रकाशित कर सकती हैं। यूक्रेनवाले उसे पढ़ कर माथे पर हाथ रख देंगे और रोकर कहेंगे, कितनी भावुक आत्मा है!"

—"भला हो आपका!" बासिस्टोफ चिल्ला उठा, "आप कैसी बातें कर रहे हैं? बेकार की बातें! मैं यूक्रेन में रह चुका हूँ। मुझे उस भूमि से प्रेम है—मैं वहाँ की भाषा जानता हूँ, आप कैसी निरर्थक बातें कर रहे हैं!"

—"हो सकता है। लेकिन यूक्रेनवाले अवश्य रो देंगे। आप जो उनकी भाषा की बात कर रहे हैं, भला उनकी भी कोई भाषा है? मैंने एक बार एक यूक्रेनवाले से एक रूसी वाक्य का अनुवाद करने को कहा, तो उस आदमी ने जो अनुवाद किया वह एक तोते का सा दोहराना हुआ। आप उसे भी कोई भाषा कहते हैं—कोई स्वतन्त्र भाषा! मैं किसी भी प्रकार आपका कहना नहीं मान सकता!"

बासिस्टोफ ने स्पष्टतया उस आलोचना को और भी आगे खींच ले जाना चाहा।

—"छोड़िये उनकी बात।" मैदम लासुनस्काया बोली, "उनकी बातों में भी कभी यौक्तिकता रही है?"

पिसागोव हँसा। श्लेषपूर्ण हँसी। इतने में एक भृत्य ने आकर पावलोवना और उसके भाई के आने का संवाद दिया। मैदम लासुनस्काया अपने अतिथियों के आदर के लिए खड़ी हो गयी।

"कैसी हो पावलोवना?" उसकी तरफ बढ़ते हुए मैदम ने पूछा। तुम आयी, कितना अच्छा हुआ। कैसे हो वोलीनस्टेव?"

वोलीनस्टेव मैदम के साथ करमर्दन कर नातालिया के पास गया।

—"आपके नये परिचित बैरन महोदय तो आज आयेंगे न ?"

—"हाँ आयेंगे।"

—"सुना, वे दर्शन के बहुत बड़े विद्वान् हैं। और 'हेगेल' पर काफी बोल सकते हैं।"

गृहकर्त्री मैदम लासुनस्काया ने कोई उत्तर नहीं दिया। उसने पावलोवना को सोफे पर बिठाया और स्वयं उसकी बगल में बैठ गयी।

पिगासोव ने बकने का क्रम जारी रखा। वह कहता गया, "दर्शन उन्नत प्रकार का दृष्टिकोण है परन्तु मैं उससे नफरत करता हूँ। वह नीचे क्या देख सकेगा जो उतनी ऊँचाई पर हो ? अगर कोई एक घोड़ा खरीदना चाहता है तो वह उस घोड़े की जाँच एक धरारे पर से नहीं करेगा!"

—"मैं ने सुना वे 'बैरन' महोदय आज आप को एक निबंध पढ़ कर सुनायेंगे ?" आलेकजांद्रा पावलोवना ने प्रश्न किया।

—"हाँ।" मैदम ने अधिक निरुत्साह के साथ उत्तर दिया। "रूसी व्यापार के साथ रूसी उत्पादन का क्या सम्बन्ध है उसी पर वह निबन्ध लिखा गया है। परन्तु घबड़ाओ नहीं, उसे यहाँ नहीं पढ़ा जायगा। मैं ने तुम लोगों को उसके लिए नहीं बुलाया है। बैरन महोदय बहुत ही भद्र और विद्वान हैं। वे भली भाँति रूसी भाषा बोल लेते हैं। उनको अनर्गल रूसी भाषा बोलते देख तुम अवश्य सुखी होगी!"

—"वे रूसी भाषा भली भाँति बोल लेते हैं कि उनकी प्रशंसा फ्रांसीसी भाषा में होनी चाहिये।" पिगासोव ने बड़बड़ा कर कहा।

—"खुशी से बड़बड़ाते जाइए पिगासोव। आपके उलझे हुए बालों के साथ यह ठीक जँचता है। लेकिन अभी तक वे क्यों नहीं आये।" मैदम घर के भीतर चारों तरफ दृष्टि-निक्षेप कर बोली,

"चलिये, अब हम बगीचे में चलें, आज का मौसम बड़ा ही सुहावना है। फिर भोजन के लिए भी घंटे भर की देर है।

सभी उठे और बगीचे में गये।"

मैदम लाबुनस्काया का बगीचा नदी-किनारे तक विस्तृत था। उसमें बहुत से नींबू के पुराने पेड़ थे। उनकी काली-सुनहली और खुशबूदार झाड़ियों पर मानो नीलम जैसे नील पत्तों की छतरियाँ लगी थीं। उसके अतिरिक्त बबूल और बकायन के भी अगणित झुरमुट थे।

नातालिया और कुमारी बोनकोर्ट के साथ वोलीनस्टेव बगीचे के सब से अधिक वृक्षबहुल स्थान में गया। वह नातालिया के आसपास चुपचाप चल रहा था। कुमारी बोनकोर्ट उनसे दो-चार कदम पीछे पड़ गयी।

—"आज तुमने क्या-क्या किये ?" आखिर वोलीनस्टेव ने अपनी काली-काली सुन्दर मूँछों पर हाथ फेरते हुए पूछा।

अपनी बहिन की आकृति से वोलीनस्टेव की आकृति बहुत ही मिलती-जुलती थी फिर भी उसमें सजीवता और चंचलता की कमी थी। वोलीनस्टेव की आँखें सुन्दर थीं और मिलनसार थीं फिर भी उनमें एक विषाद की दृष्टि थी।

"नहीं, कुछ भी नहीं।" नातालिया ने उत्तर दिया, "केवल पिगासोव का बड़बड़ाना सुना, और कपड़े पर थोड़ी-सी कशीदा-कारी की और एक किताब पढ़ी।"

—"कौन-सी किताब तुम ने पढ़ी ?"

—"एक किताब—धार्मिक युद्धों का इतिहास।" नातालिया द्विधाजड़ित स्वर में बोली।

वोलीनस्टेव ने नातालिया की तरफ देखा। उसने अंत तक कहा, "अच्छा ! किताब बड़ी दिलचस्प रही होगी ?"

वह एक नयी कोंपल तोड़ कर हवा में घूमाने लगा। वे कुछ दूर और बढ़े।

—"ये बैरन महोदय कौन हैं, जिनसे तुम्हारी माँ की जान-पहचान हुई है।

—"वे महाशय राजा के खास कर्मचारी हैं। वे इस अंचल में नये आये हैं। माँ उनकी बहुत प्रशंसा करती हैं।"

—"तुम्हारी माँ तो किसी की भी प्रशंसा बहुत जल्दी करने लगती हैं।"

—"ऐसा लगता उनका हृदय आज भी नवीन है।" नातालिया ने मंतव्य किया।

—"मैं तुम्हारी घोड़ी शीघ्र ही लौटा दूँगा। उसकी तालीम समाप्त हो चुकी है। अब उसे सरपट भागना सिखाऊँगा, और उसका प्रबंध कर रहा हूँ।"

—"अच्छा! लेकिन मैं बहुत डरती हूँ।—वे कहते थे यह बहुत ही कठिन काम है।"

—"लेकिन तुम तो जानती हो नातालिया, कि मैं तुम्हें थोड़ा सा भी आनन्द देने के लिए सर्वदा तैयार रहता हूँ। और, यह तो एक छोटी-सी बात है।"

वोलीनस्टेव की सुसंबद्ध शब्दावली अब उफनने लगी।

नातालिया ने उसकी तरफ कृतज्ञताभरी दृष्टि से देख कर कहा, "दया आपकी!"

वोलीनस्टेव देर तक खामोश रह कर बोला, "यह सब-कुछ नहीं है। लेकिन, ऐसा क्यों कह रहा हूँ यह तो तुम जानती हो!"

उतने में मकान के भीतर से घंटी की आवाज सुनाई पड़ी।

कुमारी बोनकोर्ट बोल उठी, "खाने की घंटी बजी। अब लौटा जाय।"

'मूर्ख'। वृद्धा फ्रांसीसी महिला बरामदे की सीढ़ियों पर चढ़ते समय अपने मन में बोली 'वोलीनस्टेव लड़का बहुत ही अच्छा है लेकिन एक दम बेवकूफ। यह भी बात करने का कोई ढंग है!'

वैरन महोदय भोज में नहीं आया। उन लोगों ने आधे घंटे तक उनकी प्रतीक्षा की। टेबुल के सामने बैठ कर वार्तालाप ढीला पड़ने लगा। वोलीनस्टेव नातालिया की बगल में बैठ कर केवल उसके मुख की तरफ देखता रहा और बड़े उत्साह से नातालिया के गिलास में पानी भरने लगा। पांडालेवस्की ने अपनी बगल में बैठी हुई पावलोवना के मनोरंजन के लिए कई बार प्रयत्न किये पर सफल न हो सका। पांडालेवस्की बहुत-सी मीठी-मीठी बातें कह गया पर पावलोवना केवल जँभाई लेती रही।

बासिस्टोफ बैठे-बैठे रोटी के टुकड़ों को केवल लुढ़काता रहा। उसका मस्तिष्क उस समय चिंतारहित था। पिगासोव जैसे आदमी भी खामोश था। जब मैदम लासुनस्काया ने उससे कहा कि वह आज कुछ अविनयी हो उठा था तब उसने कुछ रूखे स्वर में उत्तर दिया, "मैं विनीत कब हूँ? मुझसे विनीत होते ही नहीं बनता।" फिर अवज्ञा-सूचक स्वर में बोला, "थोड़ा धीरज धरिये! मैं तो मकई की शराब के समान हूँ—रूसी मकई की शराब के समान। लेकिन आपके वैरन महोदय—।"

—"वाह। वाह।" मैदम लासुनस्काया प्रायः चिल्ला पड़ी। "अब पिगासोव जलने लगा है—पहले से ही जलने लगा है।"

पिगासोव ने एक भी शब्द नहीं उच्चारित किया केवल अपनी भौंहे कुंचित कर लीं।

घड़ी ने सात बजाये। सभी पुनः बैठने के कमरे में एकत्र हुए।

—"मैं समझती हूँ अब वे आयेंगे नहीं।" गृहकर्त्री बोली।

परंतु उसी समय एक गाड़ी की घड़घड़ाहट सुनायी पड़ी। एक

छोटी-सी चार पहियेवाली गाड़ी आँगन के भीतर आयी। थोड़ी देर बाद एक नौकर ने बैठने के कमरे में जा कर चाँदी की तश्तरी पर धरी एक चिट्ट गृहकर्त्री को दी। गृहकर्त्री ने वह चिट्ट पढ़ी और नौकर की तरफ देखते हुए पूछा, "वे सज्जन कहाँ हैं जो यह चिट्ट लाये ?"

—"वे गाड़ी में बैठे हैं। क्या उन्हें अंदर आने के लिए कहूँ ?"

—"हाँ !"

नौकर चला गया।

—"कितनी शर्म की बात है।" मैदम लासुनस्काया ने कहा, "कैसी बुद्धि ! बैरन महोदय को तुरंत पीटर्सबर्ग लौटने का आदेश मिला है, इसलिए उन्होंने अपना निबंध एक मित्र के हाथ भेजा है, जिनका नाम है मँसिये रूडिन। बैरन महोदय मुझसे इनका परिचय कराना चाहते हैं। वे इनकी प्रशंसा मेरे निकट किया करते थे। फिर भी एक झंझट है। मुझे आशा थी, बैरन महोदय स्वयं आयेंगे और कुछ दिन यहाँ रहेंगे—।"

—"द्मित्री नीकोलेवीच रूडिन।" उस नौकर ने सूचित किया।

रूडिन—२

एक सज्जन घर के भीतर आया जिनकी अवस्था पैंतीस के लगभग होगी, कद का लंबा और कुछ झुका हुआ। सिर के बाल घुँघराले और त्वचा का रंग जैतून जैसा। मुखमंडल पर सुकुमारता न थी फिर भी उस पर प्रभाव और शक्तिमत्ता की छाप अंकित थी। उसकी चंचल नीली आँखों में एक भींगी चमक थी। नाक कुछ बड़ी और उन्नत थी। होंठों की वक्रता में सुरूपता थी। उसके पोशाक नये न थे जिस कारण कुछ छोटे थे। ऐसा लगता था कि पोशाक का मालिक मात्रा से अधिक बढ़ गया है।

वह बड़ी फुर्ती से मैदम के पास गया और सामान्य अभिवादन के बाद बोला, मैदम से परिचित होने की इच्छा उसमें बहुत दिनों से थी, और अपने मित्र बैरन के बारे में कहा, कि वह मैदम के निकट आकर व्यक्तिगत रूप से विदा न ले सका जिस कारण वह बहुत ही दुःखी है।

रूडिन की पतली आवाज उसके दैहिक गठन और चौड़े सीने के साथ शोभा नहीं दे रही थी।

—"कृपया बैठ जाइये। मैं आप से परिचित होकर अवश्य सुखी हूँ।" मैदम लासुनस्काया बोली। मैदम ने अन्य उपस्थित व्यक्तियों से रूडिन का परिचय करा कर पूछा, "आप इसी अंचल के रहनेवाले हैं अथवा यहाँ नये आये हैं?"

—"मेरी जमींदारी—जिले में है।" रूडिन ने अपनी टोपी को घुटने पर रख कर उत्तर दिया। "मैं इस अंचल में थोड़े दिनों

से रह रहा हूँ। यहाँ काम के सिलसिले में आया हूँ और आपके शहर में रहने लगा हूँ।"

—"किसके यहाँ रह रहे हैं ?"

—"डाक्टर के घर पर। वे मेरे विश्वविद्यालय के मित्र हैं।"

—"अच्छा डाक्टर। यहाँ वाले उनकी बहुत अधिक चर्चा करते हैं। वे कहते हैं डाक्टर अपने व्यवसाय के बहुत ही चतुर हैं। अच्छा ! बैरन महोदय से आपका परिचय बहुत दिनों का है ?"

—"पिछले जाड़े में मास्को में रहते समय उनसे परिचय हुआ, और अब यहाँ आकर उनके साथ प्रायः सात दिन बिताये।"

—"बैरन महाशय बहुत ही बुद्धिमान हैं, न ?"

—"हाँ मैदम !"

मैदम लासुनस्काया अपने रूमाल को सूँघने लगी जिसमें यू-डी-कोलोन की सुगंध थी।

—"क्या अभी आप सरकारी नौकरी में हैं ?" मैदम ने पूछा।

—"कौन ?—मैं ?"

—"हाँ !"

—"नहीं। मुझे अवकाश मिल चुका है।"

थोड़ी देर के लिए खामोशी छायी। उसके बाद पुनः वार्तालाप आरंभ हुआ।

—"क्या मैं पूछ सकता हूँ ?" पिगासोव ने बोलना शुरू किया, "बैरन महोदय ने जो निबंध भेजा है—क्या उसकी विषय-वस्तु की जानकारी आप रखते हैं ?

—"जी हाँ।"

—"इस निबंध में व्यापार—विशेष कर व्यापार और उद्योग के सम्बन्ध की आलोचना की गयी है। आपने तो ऐसा ही कहा था मैदम ?"

—"हाँ निबंध की विषय-वस्तु तो यही है।" मैदम ने अपने ललाट पर हाथ रख कर कहा।

—"मैं अवश्य ही इस विषय का बहुत मामूली ज्ञान रखता हूँ।" पिगासोव कहता गया, "फिर भी कहूँगा कि इस निबंध का शीर्षक बहुत ही दुर्बोध्य और अस्पष्ट जँचा।

—"क्यों ऐसा जँचा?"

पिगासोव ने व्यंगभरी हँसी हँस कर मैदम लासुनस्काया को वक्र दृष्टि से देख लिया।

—"क्या आपको यह शीर्षक सुबोध्य जँचा?" उसने पूछा और अपने धूर्त मुख को रूडिन की तरफ किया।

—"हाँ शीर्षक स्पष्ट है।"

—"हाँ। आप इस दिशा में अधिक जानकारी रखते हैं।"

पावलोयना ने मैदम से पूछा, "क्या आपको सिरदर्द हो गया है?"

—"नहीं। मामूली हरारत-सी है।"

—"क्या मैं पूछ सकता हूँ?" पिगासोव नकिया कर बोलने लगा, "आपके परिचित मँसिये बैरन मफेल—मेरे ख्याल से यही तो उनका नाम है, है न?"

—"जी।"

—"क्या अर्थशास्त्र का अध्ययन बैरन महोदय के पेशे से संबंध रखता है अथवा वे केवल अपने आवश्यक कामों और सामाजिक जलसों से छुट्टी पाकर केवल अवसर के घंटों को ही इस निरस विषय की चर्चा में बिताते हैं?"

रूडिन ने अनुसंधित्सु दृष्टि से पिगासोव की तरफ देखा।

—"बैरन उस विषय से विशेष अनुराग रखते हैं।" उसने

उत्तर दिया। उत्तर देते समय उसका मुख किंचित लाल हुआ। "और इस निबंध में बहुत-सी सच्ची और शिक्षाप्रद बातें हैं।"

—"बिना उस निबंध को पढ़े उसके सम्बन्ध में मैं तर्क नहीं कर सकता। फिर भी यह पूछने का साहस करता हूँ कि क्या आपके मित्र के इस निबंध में दिये गये विचार साधारण सिद्धांतों में ही आबद्ध हैं—वास्तव तक पहुँच नहीं पाये ?"

—"इस निबंध मे साधारण सिद्धांत और तत्त्व दोनों हैं जो वास्तव पर आधारित हैं।"

—"ठीक है। अब मुझे अपना अभिमत व्यक्त करने दीजिये—इसे मैं अवसर आने पर ही व्यक्त कर सकता हूँ—मैंने डोरपाट में तीन साल बिताये हैं, और उसी अनुभव का फल यह है कि सिद्धांत, अनुमान, पद्धति—न जाने और क्या-क्या, ये सब केवल, माफ कीजियगा गंवार हूँ, अपनी भाषा को मधुर नहीं बना सकता, बेकार के हैं। यह सब बुद्धिवृत्ति का बाह्याडंबर है केवल लोगों को मूर्ख बनाना है। हमें केवल जो वास्तविक तत्त्व हो बताइये। उससे अधिक नहीं!"

—"आप ने ठीक कहा।" रूडिन ने कहा, "लेकिन इस प्रकार से तत्त्व के तात्पर्य भी तो बताने पड़ेंगे!"

—"साधारण सिद्धांत।" पिगासोव कहता गया, "यह तो मेरे लिए मरना होगा। सिद्धांत, अनुसंधान, निष्कर्ष—ओफ्। यह सब उन्हीं तथाकथित विश्वासों पर आधारित है। हरेक आदमी अपने-अपने विश्वासों की बात कहता है और इसका दावा भी करता है कि वे मान्य हों। फिर उन बातों का बतंगड़ बनने लगता है। ओफ्।"

पिगासोव ने अपनी मुट्ठी को हवा में आंदोलित किया, पांडालेवस्की यह देख कर मुस्कुराया।

—"ठीक है।" रूडिन ने कहा, "तो आप कहना चाहते हैं कि विश्वास है ही नहीं ?"

—"नहीं।"

—"क्या यह आपका विश्वास है ?"

—"अवश्य।"

—"फिर आप कैसे कह सकते हैं कि विश्वास नहीं है ? अभी आप को हाथोहाथ उसके होने का एक प्रमाण मिल गया।"

घर में जितने लोग थे सभी ने दृष्टि-विनिमय किया और मुस्कुराये।

—"मुझे कुछ कहने तो दीजिये—" पिगासोव बोल उठा। परन्तु मैदम लासुनस्काया थपोड़ी पीट कर कह उठी, "वाह ! वाह ! पिगासोव हार गये।" इस प्रकार मैदम ने धीरे से रूडिन के हाथ से टोपी ले ली।

—"अभी इतनी खुश न होइये।" पिगासोव ने कुछ क्रोधित होकर कहा, "इतनी जल्दी इतने खुश होने की कौन सी बात हुई ? अभी तक इस विषय का खंडन-मंडन बाकी है। हम लोग तो उचित तर्क को छोड़ कर विषयांतर में चले गये।"

—"बात तो बहुत ही साधारण-सी है, कि आप साधारण सिद्धांतों और विश्वासों की उपयोगिता को नहीं मानते।" रूडिन ने शांत स्वर में कहा।

"नहीं, मैं कुछ भी नहीं मानता।"

—"तो आप संशयवादी हैं।"

—"लेकिन यहाँ पर इतने बड़े शब्द के प्रयोग का तात्पर्य क्या है ?"

—"बीच में बाधा न डालिये।" मैदम लासुनस्काया बोली।

—"आपने ठीक कहा।" पांडालेवस्की अपने आप इसी बीच कह उठा और स्वयं हँसने लगा।

रूडिन कहता गया, "यह शब्द मेरे तात्पर्य को स्पष्ट करता है। अब आप समझ सकेंगे, उसका प्रयोग क्यों न करूँ? आप किसी बात पर विश्वास नहीं करते तो आप इन तत्त्वों पर कैसे विश्वास करेंगे?"

—"यह भी कोई प्रश्न हुआ! वास्तविक तत्त्वों पर सभी विश्वास करते हैं, सभी जानते हैं कि वास्तविक तत्त्व क्या होते? मैं उनका विचार करता हूँ अपने अनुभव से, अपनी अनुभूति से।"

—"क्या आपकी अनुभूति आपको धोखा नहीं दे सकती? आपकी अनुभूति कहती है सूरज पृथ्वी के चारों तरफ चक्कर काटता है। क्या आप कोपर्निकस के सिद्धांत को नहीं मानते? शायद आप मानते हैं!"

पुनः सभी के मुख पर हँसी की एक छटा दिखाई पड़ी और सभी की दृष्टि रूडिन के प्रति आकृष्ट हुई। सभी अपने मन में सोचने लगे कि यह एक समझदार आदमी है।

—"आप की कौतुक-प्रियता में मौलिकता अवश्य है लेकिन यह हमारी आलोचना के विषय के बाहर है।" पिगासोव बोला।

रूडिन ने इसके उत्तर में कहा, "मैंने अब तक जो कुछ कहा दुर्भाग्य से मौलिकता उसमें नहीं के बराबर है। यह सबकी बहुत दिनों की जानी हुई बात है। हजारों बार इसकी पुनरावृत्ति हो चुकी है। परंतु यह मेरे कहने का तात्पर्य नहीं है।"

—"फिर क्या है" पिगासोव ने पूछा। उसके स्वर में बड़ी ही अधीरता थी।

किसी भी तर्क के प्रारंभ में उसका कंठ-स्वर व्यंगसूचक रहता है, फिर ज्यों-ज्यों तर्क बढ़ता जाता, त्यों-त्यों उसका स्वर रूढ़ और

कठोर होता जाता है। अंत तक वह हार मान कर मुँह लटका लेता है।

—"यह मैं नहीं देख सकता।" रूडिन बोला, "मुझे सचमुच बहुत दुःख होता है जब किसी शिक्षित व्यक्ति को अकारण आक्षेप करते देखता हूँ।"

—"प्रचलित पद्धतियों पर?" पिगासोव बीच ही में बोल उठा।

—"हाँ। प्रचलित पद्धतियों को भी उसमें शामिल कीजिये, अगर आप करना चाहते हैं। लेकिन इस शब्द से आप इतना डरते क्यों हैं? प्रत्येक पद्धति प्रारंभिक सूत्रों के ज्ञान पर ही आधारित है। ये प्रारंभिक सूत्र जीवन के आधारभूत मूल तत्त्व हैं।

—"परंतु वे आवश्यक रूप से पहचाने नहीं जा सकते, खोज कर निकाले नहीं जा सकते।"

—"माफ कीजियेगा। वे आवश्यक रूप से सभी के साध्य की बात नहीं हैं—और गलतियाँ करना मनुष्य का धर्म है। लेकिन आप बिना किसी प्रकार के संदेह के मुझसे सहमत हो सकेंगे कि न्यूटन ने कम से कम कुछ आधारभूत सूत्रों का आविष्कार अवश्य ही किया था। इसलिए उन्हें अद्वितीय प्रतिभाशाली मानना ही पड़ेगा। और, उन प्रतिभाशालियों के आविष्कारों का महत्व और भी बढ़ जाता है जब वे साधारण व्यक्तियों की बुद्धि के समक्ष उपस्थित किये जा सकते हैं। हर बात हर वस्तु में से आधारभूत सूत्रों को खोज कर निकालते रहना ही मानव-मन की प्रधान विशेषता है और हम अपनी समस्त शिक्षा की विभूति—।"

—"जिनको की आप अभी खोज कर निकाल रहे हैं।" पिगासोव पुनः बीच में बोल पड़ा। बोला भी प्रत्येक शब्द के उच्चारण को अकारण दीर्घ करते हुए। "मैं एक काम-काजी आदमी

ठहरा, मैं इन दार्शनिक सूक्ष्मताओं में प्रवेश करना नहीं चाहता।"

"ठीक है। जैसी आपकी मर्जी। लेकिन आप जो कह रहे हैं कि आप वास्तविक आदमी हैं पूर्णतया काम-काजी आदमी, लेकिन उसके लिए भी एक पद्धति की एक सिद्धांत की आवश्यकता है, जो—।"

—"जो शिक्षा से संबंधित हो। आप कहना चाहते हैं, शिक्षा बड़ी अच्छी चीज है और आपकी यह महान शिक्षा बहुत-से कल्याण भी करती है। मैं आपकी इस शिक्षा की निंदा करना नहीं चाहता।"

—"यह कोई तर्क करने का तरीका नहीं है, पिगासोव!" मैदम लासुनस्काया बोली। मैदम ने मन ही मन आगंतुक की धीरता और शिष्टता की सराहना की। उसने रूडिन के मुख को घनिष्ठ स्नेह से देखते हुए सोचा, मैं अवश्य इस व्यक्ति का आदर करूँगी।

क्षण भर रुक कर रूडिन पुनः कहने लगा, "मैं शिक्षा का समर्थन करना नहीं चाहता, क्योंकि उसे मेरे समर्थन की जरूरत नहीं है। अब अच्छा लगना या बुरा लगना, यह तो किसी की अपनी बात है। इसलिए, यदि हम इस प्रकार तर्क करते रहे तो इसका निर्णय न हो सकेगा। यदि अनुमति दें तो एक बहुत पुरानी कहावत कहूँ, 'जूपीटर तुम क्रोधित हो इसलिए तुम दोषी भी' मेरे कहने का अभिप्राय यह है कि मुझे उस समय बहुत ही दुःख होता है जब मैं देखता हूँ, कोई साधारण पद्धति अथवा सिद्धांत पर आक्षेप कर रहा है। क्योंकि उन पर आक्षेप करने का अर्थ होता है ज्ञान-विज्ञान का अस्वीकार करना तथा उन पर से विश्वास हटा लेना। उससे अपने पर से तथा अपनी शक्ति पर से भी विश्वास जाता रहता है। एक मनुष्य के लिए यह विश्वास

आवश्यक है। वह केवल अपनी चेतना को लेकर जीवित नहीं रह सकता है। इस धारणा पर विश्वास न रखना तथा इसका गलत तात्पर्य लगाना भारी भूल है। संशयवाद की विशेषता ही निरर्थकता और आंतरिक दुर्बलता है।"

—"यह सब केवल कहने के लिए है।" पिगासोव बड़बड़ा कर बोला।

—"हो सकता है। लेकिन मुझे यह स्पष्ट करने दीजिये कि क्यों कोई कहता है, 'यह-सब केवल कहने के लिए है।' हम केवल इस वाक्य का प्रयोग करके किसी योग्यतर बात के कहे जाने की आवश्यकता का अस्वीकार करते हैं।"

—"वह कैसा ?" पिगासोव ने आँखें छोटी करके पूछा।

—"मैं जो कहना चाहता हूँ आप समझ चुके हैं।" रूडिन को अनिच्छा से कहना पड़ा पर उसने तुरंत अपनी अधीरता को काबू में कर लिया। "मैं फिर से कहता हूँ, यदि किसी मनुष्य के लिए कोई स्थिर आदर्श न हो जिस पर की वह आस्था-स्थापन कर सके। यदि उसके पास एक टुकड़ी जमीन न हो खड़े होने के लिए, तो वह कैसे औरों के प्रयोजन, रंग-ढंग और भविष्य को समझ सकेगा ? वह यह भी कैसे समझेगा कि उसे स्वयं क्या करना होगा, यदि—"

—"लीजिये मोर्चा आपके लिए छोड़ देता हूँ।" पिगासोव एकाएक कह उठा और झुक कर अभिवादन जता कर किसी की तरफ निगाह डाले बिना उठ कर चला गया।

रूडिन ने उसकी तरफ देखा पर कुछ कहा नहीं। उसके ओंठों पर क्षीण हँसी चमकी।

—"वाह। भाग गये।" मैदम लासुनस्काया ने मंतव्य किया।

"—ड्मिट्री—माफ कीजियेगा।" मैदम ने मित्रतापूर्ण हँसी हँस कर पूछा, 'आपका पैतृक नाम क्या है ?"

—"नीकोलेवीच।"

—"माफ कीजियेगा ड्मिट्री नीकोलेवीच, पिगासोव ने हम लोगों से कपट नहीं किया। उन्होंने केवल इतना बताना चाहा कि अब वे तर्क करना नहीं चाहते। पर वे स्वयं जान गये कि आपके साथ तर्क में जीतना कभी संभव नहीं। अच्छा हुआ। जरा कुर्सी को और पास खींच लाइये, अब हमारी गपशप होगी।"

रूडिन ने आराम कुर्सी को खींच लिया।

—"सचमुच मुझे इस बात पर आश्चर्य हो रहा है कि इसके पहले आपसे परिचय क्यों न हुआ! आपने यह किताब पढ़ी है, मँसिये टोकुयेवेली—।"

मैदम लासुनस्काया ने फ्रांसीसी भाषा कि वह पुस्तिका रूडिन के हाथ में दी।

रूडिन ने वह पुस्तिका ली, दो-चार पन्नों को पलट कर देखा, फिर उसे टेबुल पर रख दिया। उसने कहा कि उसने मँसिये टोकुयेवेली की उस किताब को नहीं पढ़ा था। लेकिन उस पुस्तक के लेखक ने अपनी पुस्तक में जिस विषय का प्रतिपादन किया है उस विषय पर उसने अनेक बार चिंतन किया था। मैदम और रूडिन में पुनः वार्तालाप शुरू हुआ, नये सिरे से। शुरू-शुरू में रूडिन ने कुछ संकोच किया और उसे अपनी बातों को ठीक से व्यक्त कर कहने के लिए उचित शब्द ढूँढ़ने पड़े परंतु ज्यों-ज्यों आलोचना बढ़ती गयी त्यों-त्यों रूडिन अपने वक्तव्य को व्यक्त करने के लिए उज्जीवित होता गया और अनर्गल बकने लगा। थोड़े ही समय में घर के भीतर केवल उसी का स्वर गूँजने लगा।

सभी उसे घेर कर बैठ गये। एकमात्र पिगासोव ने चूल्हे के उस कोने में अपना निरापद स्थान ढूँढ़ लिया।

रूडिन जो भी कुछ कहता गया उसी में उसकी बुद्धिमत्ता, और सचेतनता प्रकट होती गयी। साथ ही साथ उसके गंभीर ज्ञान तथा विस्तृत अध्ययन का पता भी लगता गया। उसकी वेश-भूषा में एक स्वाभाविक उदासीनता थी, लेकिन उस कारण कोई उसकी समालोचना नहीं करता था। उसके समान एक विद्वान और बुद्धिमान व्यक्ति का एकाएक उस पारिवारिक बैठक में उपस्थित होना, खास कर वैसे देहात में, सभी को आश्चर्य और हैरत में डालने लगा। इस प्रकार सभी विस्मित हुए, मुग्ध हुए, विशेषकर लासुनस्काया उससे अधिक प्रभावित हुई। मैदम मानो रूडिन का आविष्कार कर मन ही मन फूल उठी। उसने रूडिन का परिचय वहाँ के अभिजात वर्ग के लोगों से कराने का निश्चय किया। मैदम की उम्र बढ़ गयी थी फिर भी किसी को एक बार देख कर ही उसके प्रति आकर्षित होने की आदत उसमें एक शिशु के समान ही थी। रूडिन क्या न क्या कह रहा था। उन्हें समझने की शक्ति पावलोवना में बहुत ही कम थी फिर भी वह विस्मित हुई, प्रसन्न हुई। उसका भाई भी रूडिन की प्रशंसा में डूब गया। पांडालेवस्की अब मैदम लासुनस्काया को द्वेषपूर्ण नेत्रों से देखने लगा था और पिगासोव मन ही मन सोचने लगा कि पाँच-सौ रूबल में कहीं बढ़िया बुलबुल मिल सकती है जो रूडिन से भी अधिक चहका करेगी!

जी हाँ, बासिस्टोफ तथा नातालिया ही रूडिन द्वारा अधिक प्रभावित हुई थी। बासिस्टोफ मानो दम साध कर बैठ गया और आँखें फाड़-फाड़ कर रूडिन को देखने लगा। वह उसकी बातों को इस एकाग्रता से सुनता गया मानो उसके पहले और किसी का

उसने ऐसा कहते नहीं सुना था। नातालिया के मुख पर विशेष प्रकार की लालिमा छा गयी। उसकी आँखें रूडिन पर इस प्रकार निविष्ट और निश्चल बन गयीं कि उनमें अजीब कजराई छा गयी—छटा चमकी।

—"इनकी आँखें कितनी सुन्दर ।" वोलीनस्टेव ने नातालिया के कानों में चुपके से कहा।

—"हाँ, हैं न ?"

—"लेकिन इनके हाथ बहुत ही लंबे और लाल-लाल से हैं।"

नातालिया ने कोई उत्तर नहीं दिया।

चाय दी गयी थी। खुल कर बातें होने लगीं, फिर भी रूडिन जब कुछ बोलता था तब सभी तुरंत चुप हो जाते थे। इसीसे रूडिन के प्रभाव का परिचय मिलता था।

अब न जाने क्यों गृहकर्त्री को सूझी कि किसी प्रकार पिसागोव को खिजाया जाय। वह उसके पास जाकर धीरे-धीरे बोली, "आपको केवल बोली-ठिठोली बोलने के अतिरिक्त भी कुछ आता है। उनको फिर एक बार तर्क में पराजित करने की कोशिश क्यों नहीं करते ?"

पिगासोव ने कोई उत्तर नहीं दिया। अब मैदम ने रूडिन को भड़काया।

—"आपने इनके बारे में एक बात तो अभी तक सुनी ही नहीं।" मैदम ने पिगासोव की तरफ संकेत करते हुए कहा। "ये स्त्रियों से बहुत घृणा करते हैं। इसलिए स्त्रियों की निंदा करने से ये कभी नहीं थकते। जरा इनको समझाइये तो—"

रूडिन ने सचमुच पिगासोव की तरफ निगाहें नीची करके देखा, क्योंकि उसकी लम्बाई औरों से अधिक थी। पिगासोव

मानों क्रोध के मारे काँप उठा, उसकी मुखाकृति का चिड़चिड़ापन फीका पड़ता गया।

—"मैदम गलत कह रही हैं।" पिसागोव बड़बड़ा कर कह उठा। "केवल स्त्रियों की ही निंदा नहीं करता, यों कहिये मैं कतई मानव-प्रेमी नहीं हूँ।"

—"उनके बारे में आपकी यह बुरी धारणा कैसे हुई?" रूडिन ने उससे पूछा।

पिगासोव ने उसकी तरफ आँखें उठा कर देखा, "यह अपने हृदय के अनुभव की बात है, संसार के लोगों में मैं दिन-दिन नयी हीनता देखता हूँ। स्वयं अपने को सामने रख कर मैं औरों का विचार करता हूँ। संभवतः यह भी मेरी भूल है। हो सकता है, मैं औरों से नीच—घृणित हूँ। लेकिन मैं और कर भी क्या सकता? एक आदत-सी पड़ गयी है।"

—"अब मैं समझा। मेरी सहानुभूति आपके साथ है।" रूडिन ने प्रत्युत्तर में कहा। "आत्म-निंदा की चेष्टा महानता का लक्षण है। फिर भी इससे एक असहनीय स्थिति को मान लेना संभव नहीं होता।"

—"आपने मेरी आत्मा की महानता को जिस प्रकार से प्रमाणित किया उसके लिए आपको धन्यवाद देता हूँ। परन्तु मैं अपनी स्थिति में इस प्रकार संतुष्ट हूँ कि यदि वह मेरे लिए वाहियात भी हो जाय तो मैं उससे निकलने की बात न सोचूँगा।"

—"तो इसका अभिप्राय किसी और के संतोष को बढ़ते देना है—माफ कीजियेगा मेरी इस प्रकार की उक्ति के लिए—जो सत्य में निहित होने अथवा सत्य के साथ रहने की आकांक्षा को बल देता है।"

—"आपने बहुत ठीक कहा है!" पिगासोव उच्छ्वसित हो

कर कह उठा, "आत्म-प्रेम कुछ है, यह मैं भी जानता हूँ, आप भी जानते हैं, यहाँ तक की सभी जानते हैं। लेकिन सत्य, यह क्या है ? यह कहाँ, किसमें निहित है ?"

—"आप जानते हैं सत्य के सम्बन्ध मे 'हेगेल' का क्या मत है !" रूडिन ने स्वाभाविक स्वर में पूछा।

—"मैं फिर कहता हूँ।" पिगासोव अत्यधिक उत्तेजित हो उठा. "मैं नहीं समझता कि सत्य क्या है ! मेरा सामान्य अभिमत यह है कि यह है ही नहीं। शब्द है पर वस्तु नहीं।"

—"छिः। मैडम लासुनस्काया चिल्ला उठी, "कैसे आप यह कह रहे हैं ? सत्य नहीं है ! यदि ऐसा ही है तो जीने से क्या फायदा ?"

—"मैं ठीक कह रहा हूँ, मैडम !" पिगासोव कुछ दुःखित हो कर बोला, "किसी भी मुआमले में आप सत्य को छोड़ कर भी काम चला सकती हैं पर अपने रसोईदार स्टेपन को छोड़ कर नहीं, क्यों कि सोरवा पकाने में वह एक आवश्यक अंग है। फिर आप सत्य को किस प्रयोजन के लिए रख छोड़ेंगी, जब उससे एक टोपो भी नहीं सी जा सकती ?"

—"हंसी उड़ाना कभी युक्ति-प्रदर्शन नहीं होता।" मैडम लासुनस्काया बोला, "जब उसमें आक्षेप करने की प्रवृत्ति होती है।"

—"मैं आपके दार्शनिक सत्य के बारे में नहीं कह सकता, लेकिन एक साधारण सत्य सर्वदा रोचक नहीं होता।" पिगासोव क्रुद्ध हो कर बड़बड़ा उठा और क्रोध का प्रदर्शन करते हुए घर से निकल गया।

अब रूडिन ने अभिमान पर बोलना आरंभ किया और जो कुछ कहा, अच्छी तरह कहा। उसने युक्ति दिखा कर कहा कि अभिमान के बिना मनुष्य निरर्थक है। अभिमान आर्कीमेडीस की वह टेक है जो पृथ्वी को अपने धुरे पर घुमा सकता है। मनुष्य

तभी मनुष्य नाम के योग्य है जब वह अपने अभिमान पर नियंत्रण डाल सकता है जिस प्रकार एक सवार अपने घोड़े पर नियंत्रण रखता है और—अपने स्वार्थ की बलि साधारण भलाई के लिए देता हो।

—"मिथ्या अभिमान आत्महत्या के समान है।" उसने अंत में कहा। मिथ्या अभिमान का शिकार मरुभूमि के उस अकेले वृक्ष के समान है जो क्रमशः सूखता जाता है। परंतु जब अभिमान पूर्णता-प्राप्ति की सक्रिय प्रचेष्टा के रूप में रूपांतरित होता है तब वह महानता का उत्स बन जाता है। हाँ, एक मनुष्य को चाहिये कि वह अपनी आत्मा की स्वार्थपरता को शांत करके उसे सही रास्ते पर परिचालित करे।"

इतने में पिगासोव लौट आया था पर किसी ने उसकी तरफ ध्यान नहीं दिया। उसने बासिस्टोफ की तरफ घूम कर कहा, "आप मुझे एक पेंसिल दे सकते हैं?"

बासिस्टोफ तुरंत उसका अभिप्राय समझ न सका, बोला, "आप किस लिए पेंसिल माँग रहे हैं?"

—"मैं मँसिये रूडिन के अंतिम वाक्य को लिख लेना चाहता हूँ। यदि न लिख लूँ तो भूल भी सकता हूँ। यह वाक्य 'इरेलश' खेल के रंगसर के तास के समान है।"

—"देखिये महाशय पिगासोव, इन्होंने कोई बात कही है! इस पर बोली-ठिठोली बोलना शर्म की बात है।" बासिस्टोफ ने गुस्से में आ कर कहा और पिगासोव की तरफ से मुँह फेर लिया।

इतने में रूडिन उठ कर नातालिया के पास गया। नातालिया उसे देख कर खड़ी हो गयी। उसके मुख पर विह्वलता का आभास दिखाई पड़ा। वोलीनस्टेव भी नातालिया के पास बैठा था—खड़ा हो गया।

—"अरे पिआनो रक्खा है !" रूडिन ने एक विदेशी राजकुमार की तरह सौजन्यता से पूछा, "तुम इसे बजाती हो न ?"

—"हाँ।" नातालिया ने कुछ घबड़ा कर उत्तर दिया। "लेकिन अच्छी तरह नहीं बजा सकती। मँसिये पांडालेवस्की मुझ से कहीं अच्छा बजा सकते हैं।"

पांडालेवस्की ने तुरंत अपने मुख को आगे बढ़ाया और उसके दाँत यों ही खिल गये। बोला, "तुम ऐसा नहीं कह सकती, नातालिया ! तुम भी तो अच्छी तरह बजा लेती हो।"

—"आप 'शुबर्ट' के गीत बजा सकते हैं ?" रूडिन ने पूछा।

—"हाँ बजा सकते हैं।" गृहकर्त्री बोली, "बैठ जाओ पांडालेवस्की, पिआनो के सामने। द्मित्री नीकोलेवीच, आप संगीत पसंद करते हैं ?"

रूडिन ने इसके उत्तर में धीरे से अपना सर नीचा किया और बालों पर अपना हाथ इस ढँग से रखा मानो वह सुनने के लिए तैयार हो रहा था। पांडालेवस्की ने बजाना शुरू किया।

नातालिया पिआनो के पास जाकर खड़ी हो गयी रूडिन की तरफ मुँह करके। संगीत के आरंभ होते ही रूडिन के मुख पर एक शांत सौंदर्य छा गया। उसकी काली-नीली आँखें धीरे-धीरे विचरण करने लगीं। लेकिन बार-बार उसकी दृष्टि नातालिया पर ही स्थिर होने लगी। संगीत समाप्त हुआ।

रूडिन खुली हुई खिड़की के पास गया। सुरभित गोधूलि अपनी मुलायम ओढ़नी के नीचे बगीचे को छिपा रही थी। आकाश के दो-एक तारे मानो जीवित होकर अपनी छटा बिखरने लगे थे जिससे आसपास के पेड़ों में एक झूमती हुई सजीवता छा गयी। ग्रीष्म की वह रात मतवाली—और मतवाली होती गयी। रूडिन ने उस अँधियारी में बगीचे को देखा फिर घर के

भीतर चारों तरफ दृष्टि डाली। "यह संगीत और यह रात्रि।" उसने कहा, "मुझे अपने छात्र-जीवन की याद आ रही है जब मैं जर्मनी में था। उन दिनों की कितनी ही बातें याद आ रही हैं। वे जलसे, और रात्रि होते ही झूम-झूम कर गाना।"

मैदम ने पूछा, "आप जर्मनी में थे?"

—"मैं साल भर हिडेलबर्ग में था और कुछ दिन बर्लिन में।"

—"वहाँ तो आप छात्रों के पोशाक पहनते थे? मैंने सुना है वहाँ के छात्र विशेष प्रकार के पोशाक पहनते हैं।"

—"हाइडेलबर्ग में रहते समय पाँवों में कीलदार जूते और घुड़सवारों की तरह मिर्जई पहनता था और बाल कंधे तक लंबा रखना पड़ता था। लेकिन बर्लिन के छात्र साधारण लोगों के समान ही पोशाक पहनते थे।"

—"आप अपने छात्र-जीवन के बारे में कुछ कहिये।" मैदम ने अनुरोध किया।

रूडिन अपने छात्र-जीवन की कहानी सुनाने को सम्मत हुआ। शुरू-शुरू में उसकी वर्णना आकर्षक न हो सकी। रूडिन की वर्णना में न तो वैचित्र रहा और न कोई प्रेरणा जो विस्मय उत्पन्न कर सकती थी। जो हो अपने व्यक्तिगत अनुभवों के वर्णन से हट कर शिक्षा तथा विज्ञान के महत्व पर अनर्गल कहता गया। विश्वविद्यालय तथा विश्वविद्यालय के जीवन के बारे में उसने बहुत-कुछ कहा। मोटी-मोटी लंबी-चौड़ी रेखाओं से उसने एक विशाल चित्र अंकित किया। उसके श्रोता उसकी बातों को तल्लीन होकर सुनते गये। उसके बोलने में विद्वत्ता थी तथा बोलने का ढंग आकर्षक था। फिर भी उसकी बातों में विशेष प्रकार की अस्पष्टता थी जिससे उसकी बातें और भी मोहक होती गयीं।

भावोच्छ्वासों के उमड़ आने से रूडिन के लिए वास्तविक

और सहज वर्णना बार-बार असंभव होने लगी। वह चित्र के बाद चित्र खींचता गया, एक उपमा दूसरी उपमा का अनुसरण करने लगी। सामूहिक रूप से उसकी वर्णना आशातीत सफल और यथार्थ हुई। उसकी उत्सुक वाक्पटुता एक पेशेवर वक्ता की सफल भाषण-कला की प्रदर्शनी नहीं थी बल्कि एक विशुद्ध प्रेरणा की उपज थी। उसे अपने लिए शब्द नहीं ढूँढ़ने पड़े। शब्द अद्भुत सरलता से उसके होंठों पर आते गये और ऐसा लगता था कि प्रत्येक शब्द सहज प्रवाह के साथ उसके हृदय से निकल रहा है। उसके प्रत्येक वाक्य विश्वास की ज्योति से उज्ज्वल था। रूडिन की वाक्पटुता का महान रहस्य था उसके कहने का संगीत-माधुर्य। रूडिन अच्छी तरह जानता था कि किस तरह एक ही हृदय-तंत्री को छूकर औरों को कंपित और ध्वनित किया जा सकता है। वहाँ ऐसे बहुत से श्रोता थे जो रूडिन की बातों को समझ नहीं रहे थे फिर भी उनका हृदय उत्फुल्ल हो रहा था और उनकी आँखों के सामने से मानो एक-एक कर पर्दे हटते जा रहे थे। और, एक अनिर्वचनीय पर उज्ज्वल आलोक-छटा उन्हें दिखाई पड़ी।

रूडिन के सभी विचार भविष्य की ओर धावित हो रहे थे जिससे वे यौवनसंपन्न और शक्तिमान बन गये थे। रूडिन एक खिड़की के पास खड़े होकर विशेष किसी के प्रति दृष्टि-क्षेपण न करते हुए अपने शब्दों का जादू बिखेरता गया। श्रोताओं की सहानुभूति तथा आग्रह से और तरुणियों की उपस्थिति, रात्रि की सुंदरता तथा अपने अविराम भाव-प्रवाह के कारण रूडिन सच्ची वाग्मिता और कवित्व के उच्चतम शिखर पर प्रतिष्ठित होता गया। रूडिन के सजीव और कोमल कंठ-स्वर ने उसके शब्दों में अधिकाधिक आकर्षण फूँक दिया। ऐसा लगने लगा कि कोई अपार्थिव शक्ति अपने अनजाने में ही उसके मुख से बोल रही

हैं। मानव-जीवन के क्षणस्थायित्व को विशेष मूल्य किस प्रकार दिया जा सकता है, रूडिन ने अपने वक्तव्य में उसे व्यक्त किया।

अंत में उसने कहा, "स्कैन्डिनेविया की एक रूप-कथा याद आ रही है। एक राजा अपने सैनिकों के साथ अपने सामने एक अंगीठी लिये अँधेरे खलियान में बैठा था। ठंडी रात थी। एक छोटी-सी चिड़िया एक दरवाजे से अंदर आयी और दूसरे से बाहर निकल गयी। राजा ने कहा, यह चिड़िया है संसार के एक मनुष्य के समान। अंधकार में से उड़ कर आयी और पुनः अंधकार में चली गयी। एक बूढ़े सैनिक ने कहा, "महाराज ! यह चिड़िया अंधकार में खो नहीं जायगी बल्कि उस अंधकार में ही अपना आशियाना ढूँढ़ लेगी। इस प्रकार मनुष्य का जीवन भी क्षणस्थायी और महत्वहीन है पर उसकी प्रचेष्टा महान है। आपार्थिव शक्ति के हाथ एक यंत्र-मात्र हूँ, मनुष्य का यह ज्ञान उसके जीवन का मुख्य आनंद है। इसलिए मरने के बाद भी वह अपना जीवन वापस पाता है, खोकर भी अपने लक्ष्य को पहुँचता है।"

रूडिन रुक गया। और, अनिच्छा से व्यग्रता की हँसी हँस कर उसने अपनी आँखें नीची कर लीं। मैदम को ऐसा लगा मानों एक बहती हुई काव्य-धारा में छेद पड़ गया। सभी को ऐसा लगा केवल पिगासोव को छोड़ कर। रूडिन के दीर्घ भाषण को अंत तक सुनने की प्रतीक्षा न कर उसने अपनी टोपी उठा ली और घर के बाहर चला गया। उसने जाते समय पांडालेवस्की को द्वेषपूर्ण दबे स्वर में कहा, "इससे मूर्खों के साथ रहना कहीं बेहतर है।" पांडालेवस्की दरवाजे के पास खड़ा था।

किसी ने पिगासोव को रोकने की सामान्य चेष्टा भी नहीं की, मानो उसकी अनुपस्थिति किसी को खली नहीं।

घर के नौकर रात का खाना ले आये। आधे घंटे बाद सभी

अपने-अपने घर को चलने लगे, कोई पैदल और कोई गाड़ी से। मैदम ने रूडिन को उस रात वहीं रहने के लिए अनुरोध किया।

पावलोवना अपने भाई के साथ घर को लौटते समय रूडिन की प्रशंसा बार-बार करने लगी। वह रूडिन की बुद्धिमत्ता से मुग्ध हुई थी। वोलीनस्टेव भी अपनी बहिन के साथ सहमत हुआ पर उसने यह मन्तव्य किया कि रूडिन की बातें बीच-बीच में अस्पष्ट हो जाती थीं, और ऐसा इसलिए हो रहा था कि रूडिन अपनी बातों को और भी स्पष्ट करना चाहता था। जो हो, वोलीनस्टेव का मुखमंडल आज विपण्ण तथा आँखें उदास दिखाई पड़ीं। उसकी दृष्टि गाड़ी के भीतर एक कोने में निबद्ध थी। वह और दिनों से अधिक दुःखित दिखाई पड़ा।

पांडालेव्स्की सोने के पूर्व अपनी रेशमी वस्त्र-बंधनियों को को खोलते हुए एकाएक चिल्ला उठा, "बहुत ही धूर्त आदमी जान पड़ता।" उसकी तीक्ष्ण दृष्टि अपने बच्चे नौकर पर पड़ते ही उसने उसे बाहर जाने का आदेश दिया। बासिस्टोफ रात भर सो न सका। यहाँ तक कि उसने अपने कपड़े भी नहीं बदले। उसने रात भर बैठे-बैठे मस्को में अपने एक मित्र के निकट पत्र लिखा। और नातालिया ने यद्यपि कपड़े बदले और बिस्तर पर लेटी फिर भी क्षण भर वह सो न सकी। हाथों पर मस्तक टिका कर अंधकार में न जाने क्या देखती रही। उसके नसों में खून बड़ी तेजी से संचारित हुआ और उसका वक्ष द्रुत श्वास-प्रश्वास के कारण स्पंदित होने लगा।

———

रूडिन—४

दूसरे दिन सवेरे, रूडिन केवल अपना पोशाक बदल चुका था कि एक नौकर मैदम लासुनस्काया के यहाँ से चाय पीने का विशेष निमंत्रण लाया। मैदम अपने कमरे में बैठ कर रूडिन के साथ चाय पीना चाहती थी। रूडिन ने जा कर देखा मैदम अपने कमरे में अकेला बैठी है। मैदम ने रूडिन का अन्तर से स्वागत किया और पूछा, रात को अच्छी नींद हुई थी कि नहीं। मैदम ने अपने हाथ से रूडिन के लिए कप में चाय दी और पूछा मीठा ठीक है कि नहीं। मैदम ने रूडिन को एक सिगरेट दिया और दो बार दोहराया कि उसके पहले रूडिन से उसका परिचय क्यों नहीं हुआ था, मानो मैदम के लिए वह आश्चर्यजनक विषय था। रूडिन पहले मैदम के सम्मान के लिए थोड़ा हट कर बैठ रहा था। पर मैदम ने उसे अपनी 'सोफा' की बगलवाली आराम-कुर्सी पर बैठने के लिए संकेत किया, और उसकी तरफ झुक कर उसके परिवार के लोगों के बारे में तथा उसकी भविष्य की परिकल्पनाओं के बारे में पूछने लगी। मैदम रूडिन से जो भी कुछ बोलती थी लापरवाही से बोलती गयी और सुनती गयी उदासीन होकर। रूडिन को यह स्पष्ट प्रतीत हुआ कि मैदम उसकी खुशामद कर रही है। फिर भी वह प्रभातकालीन आयोजन तथा मैदम की आड़ंबर-हीन सुरुचिपूर्ण वेशभूषा निरर्थक न थी। जो हो, मैदम के प्रश्न करने की बारी समाप्त हुई। अब मैदम ने विगत दिनों की बातें कहने लगी। वह जब युवती थी उस समय की कहानियाँ सुनाने

लगी। मैदम अपने परिचित व्यक्तियों की स्मृतियाँ भी दोहराने लगी। रूडिन मैदम के उच्छ्वासों को सहानुभूति से सुनने लगा यद्यपि उसकी बातों की कड़ियाँ बार-बार टूटती गयीं। मैदम जिस किसी के सम्बन्ध में कुछ कहती गयी वह केवल क्षणभर के लिए ही सामने आकर विस्मृति के अन्तराल में छिप जाने लगा और उस पृष्ठभूमि में केवल मैदम लासुनस्काया अधिक स्पष्ट दिखाई पड़ने लगी। मैदम लासुनस्काया ने कब किस विशिष्ट व्यक्ति का क्या कहा था, कब किस प्रतिभाशाली कवि पर अपना प्रभाव विस्तार किया था उसका विशद विवरण रूडिन जान गया। मैदम की बातों को सुन कर ऐसा लगा कि पचीस साल पहले देश के सभी प्रतिष्ठित व्यक्ति केवल मैदम से परिचित होने का तथा मैदम द्वारा प्रशंसित होने का सपना देखा करते थे। वे दूसरा सपना देखना जानते ही न थे। मैदम उन बड़े लोगों के सम्बन्ध में अपना वक्तव्य इतनी सरलता से—बिना किसी प्रकार उत्साह तथा उच्छ्वास के कह गयी मानो वे मैदम के प्रतिदिन के साथी थे। मैदम क मुख से चमकते-महकते मोतियों के समान उन महान व्यक्तियों के नाम पर्याय-क्रम से निकलते गये और वे मैदम लासुनस्कायारूपी मध्यमणि के चारों तरफ वृत्ताकार में जड़े जाने लगे।

रूडिन बैठे-बैठे सिगरेट पीता गया। उसने सुना सब कुछ पर कहा कुछ भी नहीं। केवल बीच-बीच में दो-एक शब्द कह कर उस बकवादी स्त्री के उच्छ्वास को बढ़ावा देता गया। रूडिन वक्ता अच्छा था तथा बोलने में उसकी अभिरुचि भी थी लेकिन वह वार्तालाप में सक्रिय होकर भाग नहीं ले सकता था। जो हो, वह एक धैर्यवान श्रोता था। रूडिन स्वयं यदि किसी के उत्साह में बाधा नहीं डालता तो सभी उसके सामने अनर्गल होकर मन की बातों को कहने से नहीं चुकेगा। रूडिन स्वयं बहुत सद्गुणों से

भूषित था, परंतु वे सद्गुण उन लोगों के थे जो अपने को औरों से श्रेष्ठ समझते। तर्क करते समय वह अपने प्रतिद्वंदी को शायद ही कुछ कहने का अवसर देता था और अपने भावोच्छ्वासपूर्ण द्रुत तर्क-प्रवाह में अपने प्रतिपक्ष को बहा ले जाता था।

मैदम अपना वक्तव्य रूसी भाषा में बोल रही थी। उसने मातृभाषा के विशद ज्ञान का प्रदर्शन करा कर मन में गर्व का अनुभव किया। फिर भी दो-एक फ्रांसीसी शब्द उसकी बातों के सिलसिले में उसके मुख से निकल पड़े। मैदम ने स्वेच्छा से सरल और बोलचाल की भाषा का प्रयोग अपने वार्तालाप में किया। परंतु वह कहीं-कहीं सफल न हो सकी। जो हो भाषा के इस मिश्रण ने रूडिन के कानों को पीड़ित नहीं किया। सच तो यह था कि रूडिन ने सभी बातों पर ध्यान ही नहीं दिया।

अंत तक मैदम लासुनस्काया थक गयी। आराम-कुर्सी के गद्दे पर मस्तक टिका कर वह रूडिन के मुख को देखने लगी। वह कुछ बोली नहीं।

—"अब मैं समझ गया।" रूडिन ने धीरे-धीरे कहा, आप ग्रीष्म ऋतु में गाँव को क्यों आती हैं। आप के लिए विश्राम करना आवश्यक है। राजधानी के कर्ममय जीवन से छुटकारा पा कर आप ग्राम में चली आती हैं शांति का आनन्द उपभोग करने। मैं समझता हूँ, प्रकृति के सौंदर्य को परखने की शक्ति आप में अधिक मात्रा में विद्यमान है।"

मैदम ने रूडिन को कटाक्ष से देखा।

—"प्रकृति—हाँ, हाँ, मैं उसका उपभोग करना चाहती हूँ। द्मिट्री नीकोलेवीच, क्या आप जानते हैं गाँव में आकर भी कोई समाज को छोड़ कर रह नहीं सकता। परंतु यहाँ वैसा समाज कहाँ? यहाँ तो सबसे बुद्धिमान आदमी पिगासोव हैं।"

—"वे जो कल एक बूढ़े सज्जन आये थे, बात-बात पर चिढ़ जाते थे ?"

—"हाँ। इस गाँव में उसका कुछ मूल्य अवश्य है, कम से कम मनोरंजन तो हो जाता है।"

—"लेकिन वे मूर्ख तो नहीं हैं। केवल गलत रास्ते पर चल रहे हैं। आप मेरे कथन से सहमत हों या न हों, फिर भी मैं कहूँगा कि केवल अस्वीकार करते रहने की प्रवृत्ति स्वयं निष्फल होती है। हर चीज का अस्वीकार करके महान बनना यह तो महान बनने का बहुत पुराना उपाय है। आप उस अस्वीकृत वस्तु से अधिक महत्व रखती हैं—एक सरल अंतःकरण का मनुष्य तो यही कहेगा। लेकिन यह भी कभी-कभी भ्रमात्मक हो जाता है। क्योंकि पहली बात यह है कि आप किसी भी वस्तु में ऐब निकाल सकती हैं; दूसरी बात यह है कि आप ने जो कुछ कहा वह सत्य होने पर भी आपके लिए हानिकारक हो सकता है, इसलिए केवल अस्वीकार करते रहने से भी चित्तवृत्ति शुष्क और निष्प्राण हो जाती है। इस प्रकार आप अपने अभिमान को महत्व देकर स्वतंत्र चिंतन के आनंद से अपने को वंचित करती हैं। जीवन तथा जीवन की सत्ता आपकी संकीर्ण तथा कटु समालोचना से दूर रहती है। इस प्रकार अंत तक, हर वस्तु की निंदा करते-करते स्वयं हास्यकर बनना पड़ता है। दूसरों की निंदा अथवा समालोचना वही कर सकता है जिसके हृदय में दूसरों के लिए प्रेम है।"

—"यह तो मँसिये पिगासोव के लिए मौत है!" मैदम लासुनस्काया धीरे-धीरे बोली, "मनुष्य को नाप सकने की अद्भुत शक्ति आप में विद्यमान है। परंतु पिगासोव कभी भी आपसे सहमत नहीं हो सकेगा। वह अगर किसी को चाहता है तो बस अपने को।"

—"पिगासोव आत्मनिंदा करते हैं दूसरों की निंदा कर सकने के लिए।" रूडिन ने मंतव्य किया।

मैदम लासुनस्काया हँसने लगी।

—"बस, दूसरों की निंदा करनी ही चाहिये! एक कहावत है न—रोगी स्वस्थ व्यक्ति का विचार कैसे कर सकता है। जो हां, बैरन महोदय के संबंध में आप की कैसी धारणा है?"

—"बैरन? बहुत ही अच्छे आदमी हैं। दयालु हृदय और समुचित ज्ञान का समन्वय उनमें है। परंतु उनमें चारित्रिक बल नहीं है। वे अपने जीवन में न पूर्णतया महान बन सके और न पूर्णतया साधारण; वे बस अपने जीवन में नवसिखुआ बने रहे। सरल शब्दों में कहता हूँ वे कुछ भी न हो सके। सचमुच यह दुःख की बात है।"

—"मैं भी यही सोचती हूँ। मैंने उनके लेख पढ़े हैं। उनमें सार तत्त्व बहुत ही कम रहते हैं।"

रूडिन ने क्षण भर खामोश रह कर पूछा, "आपके पड़ोस में और कौन-कौन हैं जिनसे परिचय किया जा सकता है?"

मैदम ने कानी उँगली से सिगरेट की राख झाड़ कर कहा, "विशेष कोई नहीं है। आलेकज़ांद्रा पावलोवना, जिसे आपने कल रात को देखा, बड़ी अच्छी लड़की है—और क्या? उसका बड़ा भाई भी अच्छा आदमी है। वास्तविक सज्जन। दो-तीन परिवार हैं पड़ोस में परंतु उनसे विशेष संपर्क नहीं है। वे या तो बहुत ही धूर्त हैं नहीं तो अतिमात्रा में बनावटी! यदि यह भी नहीं तो इसके विपरीत अति मात्रा में प्रगतिशील जो समाज में हर्गिज शोभा नहीं देता। यहाँ की स्त्रियों में मुझे कोई विशेषता नहीं दिखाई पड़ती। हाँ, यहाँ के पड़ोसियों में एक ऐसा व्यक्ति है जो वास्तव में शिक्षित और मार्जित रुचि का है, लेकिन बहुत ही

सनकी और अद्भुत प्रकृति का। पावलोवना उसे अच्छी तरह जानती है और उसके प्रति आकृष्ट भी है। आप पावलोवना के साथ विशेष रूप से परिचय कर सकते हैं। सचमुच वह बहुत ही अच्छी लड़की है, केवल थोड़ी-सी मानसिक समृद्धि की आवश्यकता उसे है। अगर उस समृद्धि को प्राप्त कर लेती है तो वह और भी अच्छी हो सकती।"

—"सचमुच वे बहुत अच्छी लगी हैं।" रूडिन ने कहा।

—"लेकिन एकदम बच्ची है—एकदम शिशु। उसकी शादी हुई थी, लेकिन वहीं सब-कुछ समाप्त हो गया। यदि मैं पुरुष होती तो अवश्य ही वैसी लड़की के साथ प्रेम करने लगती।"

—"सच ?"

"सच। मैं अवश्य करती। वैसी लड़कियों में सचमुच सरसता होती है वे सरसता का ढोंग रचना नहीं जानतीं।"

—"तो और बातों में ढोंग रचना जानती हैं न ?" रूडिन ने पूछा और पूछ कर हँसने लगा। यह उसकी आदत थी। वह जब भी हँसता था तब उसका मुख-मंडल अद्भुत दिखाई पड़ता था। बूढ़ों के समान उसकी भी आँखें धँसती जातीं और नाक कुंचित होता।

—"वे सनकी प्रकृति के कौन हैं जिससे पावलोवना प्रभावित हैं ?" उसने पूछा।

—"एक है मँसिये लेम्क्षेनोव, मीखेल मीखेलोवीच। वह यहाँ का एक जमींदार है।"

—रूडिन ने विस्मित होकर मस्तक ऊँचा किया।

—"लेम्क्षेनोव ? क्या वे आपके पड़ोसी हैं ?"

—"हाँ, क्या आप उसे जानते हैं ?"

रूडिन एक क्षण के लिए खामोश रहा। फिर आरामकुर्सी के

झालर को खींचते हुए उसने कहा, "हाँ बहुत दिन पहले जानता था। वे पैसेवाले हैं, संभवतः मेरा अनुमान गलत नहीं है ?"

—"हाँ पैसावाला है। लेकिन वह अद्भुत पोशाक पहनता है और एक चार-पहिये की घोड़ा-गाड़ी पर सवार होकर इस प्रकार घूमता है मानो किसी जमींदार का कारिंदा। मैंने उसे मेरे यहाँ लाने की बहुत कोशिश की है। लोग कहते हैं वह बहुत ही बुद्धिमान है। उससे कुछ बातें करनी थीं। आप तो जानते ही हैं, मैं अपनी जमींदारी की देख-रेख स्वयं करती हूँ।"

रूडिन ने मस्तक संचालित कर कहा कि वह जानता है।

मैदम ने दोहराया, "हाँ, मैं स्वयं देखभाल करती हूँ। मैं दूसरे देशों की गलतियों को अपने में लाना नहीं चाहती। मैं अपने रूसी आचार-विचारों पर ही विश्वासी हूँ और आप देख रहे हैं मैं कोई गलती नहीं कर रही हूँ।

रूडिन ने शांत स्वर में कहा, "मैं उनके कथन पर विश्वास नहीं करता जो कहते हैं, स्त्रियों में सांसारिक ज्ञान का अभाव है।"

मैदम लासुनस्काया ने प्रीतिपूर्ण हँसी हँसी। उसने कहा, "देख रही हूँ आप स्त्रियों के प्रति अधिक सदय हैं। लेकिन मैं क्या कहने जा रही थी ? क्या कह रही थी ? हाँ लेभेनोव, मुझे अपनी जमींदारी की चौहद्दी के संबंध में उससे कुछ बातें करनी हैं। मैंने कई बार उसे आने के लिए कहा है, आज भी उसकी ही प्रतीक्षा कर रही हूँ परन्तु ईश्वर ही जानते हैं वह आयगा कि नहीं! बड़ा ही अद्भुत आदमी है।"

इतने में दरवाजे का पर्दा एक तरफ हट गया और नायब अंदर आया। दीर्घ शरीर, चाँद पर केवल दो-एक बाल बचे थे, और शरीर पर काले रंग का कोट था, सफेद गुलुबंद और सफेद वासकट पहना था।

—"क्या बात है ?" मैदम लासुनस्काया ने पूछा, फिर रूडिन की तरफ मुँह करके फ्रांसीसी भाषा में कुछ कहा।

—"मँसिये लेभेनोव आये हैं।" नायब ने सूचित किया। 'क्या उन्हें अंदर आने के लिए कहूँ ?"

—"अद्भुत ! नाम लेते न लेते आ गये ! हाँ, उनको ले आओ !"

नायब चला गया।

—"कितना अद्भुत प्रकृति का आदमी है। आया भी तो ऐसे समय में आया कि हमारे वार्तालाप में बाधा पड़ी।"

रूडिन अपना आसन छोड़ कर खड़ा हो गया पर मैदम ने उसे रोका।

—"कहाँ जा रहे हैं ? किसी ऐसे विषय पर आलोचना नहीं करनी है जो आपसे छिपाया जाय। मैं चाहती हूँ, आप इनको भी उसी प्रकार तर्क में पराजित कीजिए जिस प्रकार पिगासोव को किया है। आपकी बातों में एक विशेष प्रकार की गंभीरता है। आप कृपया बैठिये।"

रूडिन इंकार करने जा रहा था पर एक क्षण न जाने क्या सोच कर बैठ गया।

मँसिये लेभेनोव घर के भीतर आया। उसके शरीर पर वही पुराना भूरे रंग का धूल से भरा कोट था और धूप से जले हाथ में वही पुरानी टोपी थी। उसने बड़ी सरलता से मैदम का झुक कर अभिवादन किया और चाय की टेबुल के पास बढ़ गया।

—"आखिर आप कृपा करके आये, मँसिये लेभेनोव !" मैदम लासुनस्काया बोली, "कृपया बैठिये।" रूडिन के प्रति संकेत करके मैदम ने कहा, "संभवतः आप लोग एक दूसरे को जानते हैं।"

लेभेनोव रूडिन को देख कर हँसा—अद्भुत हँसी। फिर दृष्टि नत करके बोला, "हाँ उनको जानता हूँ।"

—'हम दोनों एक साथ विश्वविद्यालय में थे।" रूडिन ने भी दृष्टि नत करके धीरे-धीरे कहा।

—"उसके बाद भी हम दोनों का साक्षात्कार हुआ है।" लेभेनोव ने धीरे-धीरे कहा।

मैदम कुछ हैरत में पड़ गयी उसने दोनों को एक बार देख लिया फिर लेभेनोव से बैठने को कहा। लेभेनोव बैठा।

—"आपने मुझे अपनी जमींदारी की चौहद्दी के विषय में कुछ कहने के लिए बुलाया है।" लेभेनोव बोला।

—"हाँ उसीके बारे में। लेकिन आपको मैं सम्मानित अतिथि के रूप में देखना चाहती हूँ। आप मेरे प्रतिवेशी हैं, आपसे मेरा संपर्क इतना निकट है जैसे कि आप मेरे कुटुम्ब के हैं।"

—"इस कारण आपको धन्यवाद देता हूँ।" लेभेनोव ने उत्तर दिया, "जमींदारी की सीमा के बारे में मैंने आपके नायब के कथनानुसार प्रबंध किया है। उनके सभी प्रस्तावों को मैंने मान लिया है।"

—'यह मैं जानती हूँ।"

—"पर उन्होंने मुझसे कहा है कि आपसे एक बार साक्षात्कार हो जाने पर ही कागजात पर हस्ताक्षर किया जायगा।"

—"हाँ यही मेरा नियम है। जो हो। क्या मैं पूछ सकती हूँ कि आपकी सभी रैयतें आपको लगान देती हैं?"

—"हाँ देती हैं।"

—"फिर भी आप जमींदारी की सीमा के बारे में माथा-पच्ची कर रहे हैं? सचमुच यह बड़ी प्रशंसा की बात है।

लेम्रेनोव क्षणभर कुछ बोला नहीं। फिर बोला, "खैर ! इसी-लिए आपसे व्यक्तिगत साक्षात्कार करने के लिए आया हूँ।"

मैदम लासुनस्काया हँस पड़ी। बोली, "यह तो देख रही हूँ। परंतु आपकी बातों से ऐसा जान पड़ता कि मेरे निकट आना आप पसन्द नहीं करते।"

—"मैं किसी से मिलने नहीं जाता।" उसने अति मात्रा में उदासीन होकर कहा जिससे उसके गले से बड़ी मुश्किल से आवाज निकली।

—"किसी से भी नहीं ? आप आलेक्जांद्रा पावलोवना के घर तो जाते हैं।"

—"उनके बड़े भाई पुराने मित्र हैं।"

—"उनके बड़े भाई ? जो हो, मैं किसी को जबर्दस्ती अपना मित्र नहीं बनाना चाहती। लेकिन माफ कीजियेगा महाशय लेम्रेनोव, मेरी अवस्था आपसे अधिक है इसलिए मैं आपको कुछ कह सकती हूँ। आप इस प्रकार संन्यासी-जीवन क्यों बिता रहे हैं ? क्या आपको मेरा मकान ही अच्छा नहीं लगता ?—क्या मैं अच्छी नहीं लगती ?"

—"मैं आपको अच्छी तरह नहीं जानता, इसलिए यह नहीं कह सकता कि आप अच्छी नहीं लगतीं। और, आपका मकान बहुत ही बढ़िया है। लेकिन मैं साफ-साफ कहता हूँ दिखावटी भद्रता मुझे अच्छी नहीं लगती। आप देख रही हैं मेरे पास सांध्य-पोशाक नहीं है—दस्ताने नहीं हैं और, मैं आपकी गोष्ठी में शामिल भी नहीं हो सकता।"

—"परन्तु कुल और शिक्षा के कारण आप हमारी गोष्ठी के हैं।"

—"लेकिन कुल और शिक्षा से क्या हो सकता है ?"

—"प्रत्येक मनुष्य को चाहिये कि वह अपने समान लोगों के

साथ सम्पर्क रखे। डियोजिनिस के समान नाँद में बैठे रहने से कौन सा आनन्द मिलेगा ?"

—"सबसे बड़ी बात यह थी कि वे सुखी थे, लेकिन यह आपको किसने कहा कि मै अपने समान लोगों से दूर रहता हूँ ?"

—मैदम लासुनस्काया ने दाँतों से अपना होठ दबाया। उसने कहा, "नहीं,। मै कुछ और कह रही थी। फिर भी यह मेरे लिए अफसोस की बात है कि मैं आपके मित्रवर्ग में शामिल होने के सौभाग्य से वंचित हूँ।"

अब रूडिन बोला, "मँसिये लेभ्रेनोव ने एक प्रशंसनीय चित्त-वृत्ति को बहुत आगे बढ़ा दिया है—इसे आप व्यक्ति की स्वतंत्रता-प्रीति कह सकती हैं।"

लेभ्रेनोव ने कोई उत्तर नहीं दिया केवल एक बार रूडिन को देख लिया। थोड़ी देर के लिए खामोशी छा गयी।

लेभ्रेनोव ने खड़े होकर कहा, "संभवतः अब हमारा काम समाप्त हो गया है। आप अपने नायब को कह दीजियेगा मेरे निकट कागजात भेज देने के लिए।"

—"अच्छा।—आप में सोजन्यता की इतनी कमी है कि पहले से ही आपसे न मिलने का निश्चय कर लेना चाहिये था।"

—"क्यों जमींदारी की वर्तमान सीमा के निर्धारित होने से आपको ही मुझसे अधिक सुविधा मिली।"

मैदम लासुनस्काया ने अपने कंधों को मरोड़ कर उस आलोचना को वहीं स्थगित करना चाहा।

—"थोड़ा जलपान करने के लिए भी आप नहीं रुकेंगे ?" मैदम ने पूछा।

—"धन्यवाद। मैं जलपान नहीं करता, फिर मुझे शीघ्र ही घर लौटना है।"

मैदम लासुनस्काया खड़ी हुई।

—"मैं आपको रोकूँगी नहीं। मैं आपको रोकने का साहस कैसे कर सकती।" मैदम ने खिड़की की तरफ बढ़ते हुए कहा।

लेभ्नेनोव विदाय-अभिवादन जताने के लिए प्रस्तुत हुआ।

—"नमस्कार मँसिये लेभ्नेनोव, आपको जो कष्ट दिया उसके लिए क्षमा कीजियेगा।"

—"कोई बात नहीं।" लेभ्नेनोव घर से निकल गया।

मैदम रूडिन की तरफ घूम कर बोली, "मैं जानती थी कि यह बहुत ही सनकी और अद्भुत प्रकृति का है लेकिन यह अपनी सीमा पार कर चुका है।"

रूडिन बोला, "पिगासोव भी इसी रोग का शिकार है। दोनों ही मौलिक होने की चेष्टा में हैं। एक मेफिस्टोफिलिस बनना चाहता है और दूसरा मानव-विद्वेषी। लेकिन दोनों में अति मात्रा में गर्व है, अभिमान है लेकिन बिंदुमात्र प्रेम अथवा सत्यता नहीं। ये बहुत सोच-समझ कर ऐसा करते हैं। ये उदासीनता और आलस्य का नकाब पहन कर दूसरों की दृष्टि अपनी तरफ आकृष्ट करना चाहते हैं जिससे कि लोग उनको देख कर कहें कि, देखो वह आदमी किस प्रकार अपनी-प्रतिभा को नष्ट कर रहा है। लेकिन थोड़ा ध्यान दे कर देखने से ही यह जाहिर हो जायगा कि उनमें बिंदुमात्र भी प्रतिभा नहीं है।"

—"आदमी को पहचानने की जन्मगत प्रतिभा आप में है। आप की आँखों में कोई धूल नहीं झोंक सकता।" मैदम लासुनस्काया बोली।

—"आप यह मानती हैं?" रूडिन बोला, "जो हो।" वह कहता गया, "लेभ्नेनोव के संबंध में मेरा कुछ कहना उचित नहीं है। उसके

साथ मेरा प्रीति का संपर्क था—मैं उसे अपना मित्र समझता था, लेकिन बाद में समझने की गलती से—।"

—"आप झगड़ पड़े क्या ?"

—"नहीं। फिर भी एक दूसरे से दूर हो गये, संभवतः हमेशा के लिए।"

—"समझी। इसलिए जब तक वह यहाँ था आप चुपचाप बैठे थे। जो हो, आज का यह सवेरा वास्तव में मनोरम है इसलिए आपको धन्यवाद देती हूँ। धन्यवाद देती हूँ इसलिए कि इसका आनन्द उठा सकी। लेकिन समय का सिलसिला कहाँ टूटता है कोई नहीं कह सकता। मध्याह्न-भोजन तक आपको छुट्टी देती हूँ, मुझे भी अपना काम थोड़ा-बहुत देख लेना है। मेरे सेक्रेटरी—पांडालेवस्की को तो आपने देखा है—मेरी प्रतीक्षा कर रहा है। मैं उसे आपसे मिल लेने के लिए कहूँगी। वह युवक बड़ा ही आज्ञाकारी और अनुगत है, विशेष कर आपके प्रति श्रद्धा रखता है। अच्छा मैं जाती हूँ, महाशय रूडिन! मैं कह नहीं सकती, बैरन महोदय के निकट कहाँ तक कृतज्ञ हूँ कि उन्होंने मुझसे आपका परिचय करा दिया।"

मैदम लासुनस्काया ने रूडिन के लिए अपना हाथ आगे किया। रूडिन ने मैदम का हाथ सादर अपने हाथों में लिया और होंठों से लगाया। उसके बाद वह बैठने के कमरे में गया, फिर बरामदे में। वहाँ नातालिया से भेंट हो गयी।

रूडिन—५

मैदम लासुनस्काया की पुत्री नातालिया को पहली बार देख कर कोई सुन्दरी नहीं भी कह सकता था। श्यामवर्णा, क्षीण देह-लता इषत् झुकी हुई, यौवन की परिपूर्णता उसकी दैहिक सुन्दरता में नहीं आई थी। परन्तु उसकी दैहिक रूपता सुषमामय और सुगठित देह ऋजु थी। यह सब एक सत्रह साल की लड़की के लिए अधिक था। द्विधा-विभक्त भौंहों पर मसृण और स्वच्छ ललाट उसकी सुन्दरता का विशेष अंग था। वह बोलती कम थी पर सुनती थी उत्सुक होकर, और सुनते समय वक्ता के मुख को उत्सुकताभरी आँखों से इस प्रकार देखा करती मानो वह वक्ता के प्रत्येक शब्द को तौल रही है। वह कभी-कभी अपनी चिंताओं में खोकर चुपचाप खड़ी रह जाती थी, उस समय उसकी भुज-लताएँ मानो आलस्य से लटकती रहतीं और उसके मुख पर उसकी मानसिक सक्रियता का आभास दिखाई पड़ता। उस सयम कभी-कभी उसके होंठों पर हँसी की झलक दिखाई पड़ती और छिप जाती। कभी-कभी नातालिया बड़ी-बड़ी काली आँखें उठा कर न जाने क्यों देखती रहती। कुमारी बोनकोर्ट उसे बुला कर कहती थी कि एक तरुणी को इतना अन्यमनस्क और भावुक होना शोभा नहीं देता। नातालिया वास्तव में अन्यमनस्क न थी। वह मन लगा कर लिखती-पढ़ती थी। किसी भी काम के करने में तथा किताबों के पढ़ने में उसका विशेष आग्रह रहता था। उसकी अनु-

भव की शक्ति तीव्र और गंभीर थी परन्तु वह बाहर प्रकट न थी। शैशव में नातालिया बहुत कम रोती थी, बड़ी होकर भी वह दीर्घ श्वास कदाचित् लेती थी। जब उसका मन बहुत ही दुःखित होता तब उसके मुख पर केवल उसका क्षीण आभास दिखाई पड़ता। उसकी माँ उसे नेक और अच्छी लड़की समझती थी और गर्व से कहती थी कि उसका सम्मान नातालिया पर निर्भर है। फिर भी नातालिया की बुद्धिवृत्ति पर मैदम का अत्यधिक विश्वास न था। मैदम कहती थी, 'मेरी नातालिया बड़ी ही धीर और शांत है, मेरी तरह नहीं—यही अच्छा है, वह आगे चल कर सुखी होगी।' जो हो, मैदम ने यहीं भूल की थी, लेकिन इससे क्या, कौन माता अपनी पुत्री को पूरी तरह समझ सकी है!

नातालिया अपनी माँ को बहुत ही श्रद्धा की दृष्टि से देखती थी फिर भी उसे पूर्णतया विश्वास न कर सकी।

एक दिन मैदम ने नातालिया से कहा, "तुम मुझसे कुछ भी न छिपाया करो। अभी तुम बहुत छोटी हो, यदि अभी से सब-कुछ अपने में छिपा रखती हो तो धीरे-धीरे आत्मकेंद्रिक बन जाओगी।"

नातालिया ने अपनी माँ की तरफ देखा और मन ही मन सोचा," अगर मैं कुछ अपने में छिपा रखती हूँ तो इससे कौन-सी हानि होगी?"

बरामदे में नातालिया के साथ रूडिन का साक्षात्कार हो गया। नातालिया उस समय कुमारी बोनकोर्ट के साथ अपने घर में जा रही थी। आजकल वह सवेरे सबक याद करने नहीं बैठती, क्योंकि अब बड़ी हो गयी थी। कुमारी बोनकोर्ट ने बहुत दिन पहले ही उसे पौराणिक कथाएँ तथा भूगोल पढ़ाना बंद कर दिया था। नातालिया आजकल कुमारी बोनकोर्ट के निकट इतिहास, भ्रमण-

कहानियाँ तथा अन्य शिक्षाप्रद ग्रंथ पढ़ती थी। मैदम उसके पढ़ने के लिए पुस्तकें निर्वाचित करती थी अपनी विशेष इच्छा के अनुसार। वास्तव में वह नातालिया को वे पुस्तकें पढ़ने देती जो पुस्तकें पीटर्सबर्ग पुस्तक-विक्रेता मैदम के निकट भेजते थे। केवल दूमा-फिलस कंपनी के उपन्यास नातालिया नहीं पढ़ सकती थी। ये उपन्यास मैदम स्वयं पढ़ती। नातालिया जब इतिहास की पुस्तकें पढ़ती तब न जाने क्यों कुमारी बोनकोर्ट की तीव्र और कुटिल आँखें चश्मे की आड़ से उसे देखा करतीं थीं। उस वृद्धा फ्रांसीसी महिला के अनुसार इतिहास की सभी पुस्तकें अनुचित बातों से भरी थीं। कुमारी बोनकोर्ट प्राचीनकाल के महापुरुषों में से एकमात्र कैमबिसेस और आधुनिक काल के महापुरुषों में से केवल चौदहवीं लुई और नेपोलियन को जानती थी जिसको भी वह घृणा की दृष्टि से देखती थी। पर नातालिया उन किताबों को पढ़ चुकी थी जिनके अस्तित्व को वह वृद्धा अपनी कल्पना में नहीं ला सकती थी। नातालिया पुशकिन को आदि से अंत तक रट गयी थी।

नातालिया रूडिन को देखते ही किंचित लजाई।

—"क्या तुम टहलने जा रही हो?" रूडिन ने उससे पूछा।

—"हाँ, बगीचे में—।"

—"क्या मैं तुम्हारे साथ जा सकता हूँ?"

नातालिया ने कुमारी बोनकोर्ट की तरफ देखा।

—"अवश्य। आप खुशी से चल सकते हैं।" वह वृद्धा तत्परता के साथ बोली।

रूडिन ने अपनी टोपी ले ली और उन महिलाओं के साथ बगीचे में गया।

पहले पहल बगीचे के संकीर्ण पथ पर रूडिन के आसपास

चलने में नातालिया को संकोच का अनुभव हुआ पर शीघ्र ही उसने अपने को सँभाल लिया। रूडिन ने उससे उसकी पढ़ाई के बारे में पूछा और पूछा ग्राम्य जीवन उसे कैसा लगता है। नातालिया द्विधा-जड़ित स्वर में उनका उत्तर देती गयी परन्तु उसमें किसी प्रकार की अतिरिक्त लज्जाशीलता न थी जिसे नम्रता कही जाती। केवल उसके हृदय की गति में कुछ वृद्धि हुई।

तिर्यक दृष्टि से उसकी तरफ देख कर रूडिन ने पूछा, "गाँव में रहना तुम पसंद करती हो?"

—"क्यों नहीं! गाँव मुझे बहुत अच्छा लगता है। मैं यहाँ सुखी हूँ।"

—"सुखी हो?—बड़ी अच्छी बात है। यह तुम्हारे लिए स्वाभाविक है, तुम अभी तरुण हो।"

रूडिन ने अंतिम शब्द का उच्चारण अद्भुत ढंग से किया, उसमें दया अथवा ईर्ष्या की भावना का क्षीण आभास अवश्य था।

—"हाँ तरुणाई।" वह बोला, "विज्ञान का अंतिम लक्ष्य है सचेत होकर तरुणाई के अनावश्यक संभारों को प्राप्त करना।"

नातालिया ने ध्यानपूर्वक रूडिन को देखा, वह उसकी बातों को समझ न सकी।

—"आज सवेरे तुम्हारी माँ से बहुत सी बातें हुईं। सचमुच वे असाधारण महिला हैं। अब समझ गया हमारे कवि क्यों उनकी मित्रता चाहते थे। कविता तुम्हें अच्छी लगती है?" क्षण भर खामोश रह कर रूडिन बोला।

नातालिया सोची, रूडिन उसकी परीक्षा ले रहा है। वह बोली, "हाँ कविता मुझे बहुत अच्छी लगती है।"

—"कविता स्वर्ग की भाषा है। मैं कविताएँ पसंद करता हूँ। परन्तु काव्य केवल कविताओं में ही सीमीत नहीं है, यह सर्वत्र—

हमारे चारों तरफ बिखेरा हुआ है। देखो, उन वृक्षों को—वह आकाश—सभी में सौंदर्य और जीवन वर्तमान है, और जहाँ जीवन है, सौंदर्य है वहाँ काव्य क्यों न हो ?"

—"आओ हम यहीं बैठें, इसी बेंच पर।" रूडिन कहता गया, "जब तुम मुझसे नहीं शर्माओगी तब हम एक दूसरे के मित्र बन जायेंगे। है न ?" रूडिन ने प्रसन्न दृष्टि से नातालिया की तरफ देखा।

नातालिया अपने मन में कहा, "ये मुझे स्कूल की एक छोटी लड़की समझ रहे हैं।" नातालिया अपने मन में इसका निर्णय न कर सकी कि क्या उत्तर दिया जाय, उसने पूछा, रूडिन गाँव में कुछ दिन रहेगा कि नहीं।

—"ग्रीष्म काल और शरत् काल भर रहूँगा संभवतः शीत काल में भी। तुम तो जानती हो मैं धनी नहीं हूँ। जो-कुछ थोड़ी-सी जायदाद है उसमें भी बहुत सी अड़चनें पैदा हो गयी हैं। फिर मैं जगह-जगह घूमते-घूमते थक भी गया हूँ। अब मेरे विश्राम का समय आ गया है।"

नातालिया विस्मित हुई।

—"क्या आप समझते हैं अभी आपको विश्राम करना चाहिये ?"

रूडिन ने उसकी तरफ देखा।

—"इस प्रश्न का अभिप्राय—?"

नातालिया सचमुच घबड़ाई। बोली, "मेरा अभिप्राय है, और लोग विश्राम कर सकते हैं लेकिन आप—आप को कुछ करते रहना चाहिये—करने योग्य बनना चाहिये। यदि आप नहीं, तो आप के अतिरिक्त और कौन—।"

—"इस प्रशंसापूर्ण अभिमत के लिए तुम्हें धन्यवाद देता

हूँ ।" रूडिन ने उसे रोक कर कहा, "करने योग्य बनना—यह कहना सहज है, कहना सहज है ।" उसने दोहराया, "कुछ करने योग्य बन सकता था, अगर इस का पूर्ण विश्वास मुझे होता, यदि अपने पर आस्था होती और एक सहानुभूतिपूर्ण विश्वासी हृदय मुझे मिलता !"

रूडिन इस प्रकार निस्सहाय और हारा-हुआ दिखाई पड़ा कि नातालिया अपने मन में पूछे बिना न रह सकी कि क्या यह वही आदमी है काल रात को जिसके मुख से उत्साह और आशा की वाणी निकल रही थी, जो उसकी एकांत अपनी थी।

—"नहीं नहीं !" रूडिन शेर के अयालों जैसे अपने बालों को पीछे झकझोर कर बोल उठा, "मैं सब गलत कह रहा था, नातालिया ! ठीक तुम्हीं कह रही हो । इसलिए तुम्हें आंतरिक धन्यवाद देता हूँ ।" नातालिया समझ न सकी कि क्यों रूडिन उसे धन्यवाद दे रहा है। "तुम्हारे एक शब्द ने मुझे मेरे कर्तव्य के बारे में सचेत कर दिया है, मुझे मेरे पथ का निर्देश दिया है। हाँ ! अब मैं काम करूँगा । यदि मेरे अंदर कोई प्रतिभा हो तो उसे छिपा कर नहीं रखूँगा । केवल बातें बना कर अपनी शक्ति को नष्ट नहीं करूँगा । अनावश्यक अलस बकवाद—केवल शब्दों का वृथा आडंबर ।

रूडिन का शब्द-प्रवाह नदी-धार के समान बह चला । आलस्य तथा भीरुता की लज्जा और कर्म की आवश्यकता के सम्बन्ध में वह कहता गया पूर्ण उत्साह से, आवेग से और आकर्षक ढंग से । उसने अति मात्रा में आत्म-तिरस्कार किया और कहा, तुम जो करना चाहते हो उसके सम्बन्ध में यदि पहले से ही शब्दाडंबर रचने लगते हो तो उसका परिणाम होगा एक पके हुए फल में काँटा धँसाने की सी मूर्खता जिसके फलस्वरूप शक्ति और रस का बर्बाद होना अनिवार्य होगा । उसने पूर्ण विश्वास से कहा, संसार में कोई

ऐसा महान आदर्श नहीं है जिसे सहानुभूति न प्राप्त हो, केवल वे लोग, जो अपने में ही किसी समझौते पर नहीं पहुँच सकते, कैसे जानेंगे कि वे खुद क्या चाहते हैं अथवा क्या चाहने योग्य है। वह बहुत देर तक बकता रहा, फिर अपने वक्तव्य को समाप्त किया एक बार पुनः नातालिया को धन्यवाद दे कर। उसने एकाएक नातालिया को आश्चर्य-चकित कर उसका हाथ पकड़ लिया और कहा, "सचमुच नातालिया, तुम सुन्दर हो—महान् हो।"

रूडिन के इस प्रकार के स्वतंत्र व्यवहार से कुमारी बोनकोर्ट घबड़ाई। उसने चालीस साल रूस के बिताये, फिर भी वह मुश्किल से ही रूसी भाषा समझ सकती थी। जो हो, उसने रूडिन के अद्भुत कथन-प्रवाह और शब्द-झंकार की मन ही मन प्रशंसा की। अब रूडिन उसकी आँखों में एक कलाकार था—जीवन-नाट्य का एक अभिनेता। कुमारी बोनकोर्ट जानती थी कि ऐसे लोगों से दिखवटी शिष्टता की आशा करना हताशा में पर्यवसित होता है।

कुमारी बोनकोर्ट उठी। उसने अपनी वेशभूषा सँभाल कर नातालिया से कहा, अब लौट चलने का समय हो गया है क्यों कि आज मँसिये वोलीनसोफ उनके साथ मध्याह्न-भोज में सम्मिलित होंगे। कुमारी बोनकोर्ट वोलीनस्टेव को 'वोलीनसोफ' कहती थी।

—"अरे! वे तो आ रहे हैं।" कुमारी बोनकोर्ट ने घर को जानेवाले मार्ग की तरफ देख कर कहा।

सचमुच वोलीनस्टेव दूर से आते हुए दिखाई पड़ा।

वोलीनस्टेव संकोच से कदम धरते हुए सामने आया और कुछ दूर से ही सब को झुक कर अभिवादन जताया और नातालिया की तरफ विषादभरा मुँह फेर कर कहा, "अच्छा, तुम टहल रही हो?"

नातालिया बोली, "हाँ, घर को लौट रही हूँ।"

वोलीनस्टेव बोला, "अच्छा, तब लौटा जाय।"

वे घर की तरफ चलने लगे।

—"आपकी बहन कैसी हैं ?" रूडिन ने वोलीनस्टेव से पूछा। उसके स्वर में विशेष स्नेह का आभास था। पिछली रात को भी रूडिन ने वोलीनस्टेव के साथ बहुत ही सौजन्यपूर्ण व्यवहार किया था।

– "धन्यवाद। वह अच्छी है, संभवतः आज यहाँ आयेगी। संभवतः आप कोई आलोचना कर रहे थे—जब मैं आ रहा था ?"

—"हाँ नातालिया से बातें कर रहा था। उसने ऐसी बातें कहीं हैं जिन से मैं सचमुच प्रभावित हूँ।"

वोलीनस्टेव ने यह नहीं पूछा कि वे बातें क्या थीं। वे चुपचाप मैदम लासुनस्काया के वासभवन की तरफ चलने लगे।

× × ×

भोजन के पहले सभी बैठने के कमरे में एकत्र हुए। पिगासोव, किसी कारणवश, नहीं आया। रूडिन भी कुछ खोया-हुआ-सा दिखाई पड़ा। उसने पांडालेवस्की से 'बिठोफेन' की कोई रागिणी बजाने के लिए कहा। वोलीनस्टेव चुपचाप घर की फर्श को देखता रहा। नातालिया अपनी माँ के पास बैठी रही। वह बार-बार अपनी चिंता-समुद्र में डूबी और बार-बार अपने को काशीदा-कारी में निविष्ट करती गयी। वासिस्टोफ क्षण मात्र के लिए भी रूडिन की तरफ से अपनी आँखें फेर न सका वह उससे कोई अच्छी बात सुनने की प्रतीक्षा करता रहा। इस प्रकार लगातार तीन घंटे बीत गये। पावलोवना नहीं आयी और, वोलीनस्टेव ने उस मंडली के टेबुल छोड़ कर उठने के साथ ही साथ गाड़ी प्रस्तुत

करने का आदेश दिया तथा किसी को किसी प्रकार का विदाय-अभिवादन जताये बिना घर के बाहर चला गया।

सचमुच वोलीनस्टेव का हृदय भारी हो उठा। वह बहुत पहले ही नातालिया से प्रेम का संपर्क स्थापित कर चुका था परन्तु उसने उससे इस बारे में कभी कुछ कहा नहीं। नातालिया उसके साथ सौजन्यपूर्ण बर्ताव करती थी लेकिन उसका हृदय विचलित नहीं हुआ था,—वोलीनस्टेव यह अच्छी तरह जानता था। वोलीनस्टेव इसकी भी आशा नहीं करता था कि वह नातालिया के मन में इससे भी बढ़ कर कोई कोमल भावना जगा सकेगा। वह केवल उस घड़ी की प्रतीक्षा करता था जब नातालिया स्वतः सहज प्रवृत्ति से उसके प्रति आकृष्ट होगी। फिर वह क्यों इतना विचलित हो उठा? कौन सा परिवर्तन उसने नातालिया में देखा? नातालिया तो उसके साथ वैसा ही बर्ताव किया जैसा कि पहले करती थी।

हो सकता, वह भावना उसे कष्ट दे रही थी कि वह लड़कियों के मन के बारे में कुछ भी नहीं समझ सकता और, नातालिया को जहाँ तक समझ सका था, नातालिया कहीं उससे अधिक अज्ञात थी। संभवतः वोलीनस्टेव के हृदय में विद्वेष की भावना जाग उठी थी और वह स्वयं किसी अशुभ संभावना का संकेत पा कर डर गया। कारण कुछ भी हो, मन उसका व्यथित हो उठा मन को लाख समझाने पर भी।

वोलीनस्टेव अपनी बहन के घर में जा कर देखा वहाँ लेझे-नोव बैठा है।

—"आज इतनी जल्दी लौट आये?" पावलोवना ने अपने भाई से पूछा।

—"सचमुच, जी ऊब गया।"

—"रूडिन वहाँ थे?"

—"हाँ।"

वोलीनस्टेव ने अपनी टोपी उतार कर फेंक दी और बैठ गया। पावलोवना बड़ी उत्सुकता से उसे देखती रही।

पावलोवना ने लेझेनोव की तरफ संकेत कर वोलीनस्टेव से कहा, "जरा इस जिद्दी आदमी को समझाइये तो कि रूडिन सचमुच बुद्धिमान और वाग्मी हैं।"

वोलीनस्टेव ने दबे स्वर में कुछ कहा।

—"मेरा प्रश्न तो यह नहीं था।" लेझेनोव बोला, "मानिये रूडिन की बुद्धिमत्ता और वाग्मिता के बारे में मेरा बिंदुमात्र संदेह नहीं है। मैं केवल कह रहा था कि मैं वैसे लोगों को पसंद नहीं करता।"

—"तब आप ने उन्हें देखा है?" वोलीनस्टेव ने पूछा।

—"हाँ आज सवेरे, मैदम लासुनस्काया के वहाँ देखा। अभी तो वे मैदम के प्रिय पात्र बने हैं। समय आने पर मैदम उन्हें भी भूल जायेंगी। केवल पांडालेवस्की को वे कभी नहीं भूलेंगी, लेकिन अभी रूडिन का समय है। सचमुच मैंने देखा, वे बैठे हैं, मैदम मेरी तरफ संकेत करके उनसे कहने लगीं, देखिये महाशय, 'इस गाँव में एक से एक सनकी जीव है!' मैं कोई तोहफे का घोड़ा नहीं कि चला-फिरा कर दिखाया जाय। इसलिए वृथा समय बर्बाद न कर मैं चला आया।"

—"लेकिन आप वहाँ गये कैसे?" पूछा पावलोवना ने।

—"जमींदारी की सीमा के बारे में कुछ बातें करनी थीं लेकिन वह-सब एक बहाना था। मैदम केवल एक बार मेरा मुँह देखने के लिए उत्सुक थीं। सुंदरियों के मन की मौज है—समझी न!"

—"और कुछ नहीं, केवल उनकी बड़प्पन की भावना ही आप को खल रही है।" पावलोवना कुछ रोष में आकर बोली। "उसी

कारण आप उन पर प्रसन्न नहीं हो पा रहे हैं। फिर भी मेरा विश्वास है उनका हृदय तथा उनकी बुद्धिवृत्ति उच्चकोटि की है। जब वे कुछ कहते हैं उस समय उनकी आँखों की तरफ देखिये!"

—"जब वे उच्चकोटि की नैतिकता पर अनर्गल बोलते हैं।" लेभेनोव ने जोड़ दिया।

—"आप मुझे नाहक चिढ़ा रहे हैं अब मैं जरूर चिल्लाने लगूँगी। सचमुच मुझे अफसोस हो रहा है, मैं मैदम लासुनस्काया के घर न जा कर क्यों आपके पास बैठी रही। आप इस योग्य नहीं है कि मैं आप के पास आकर बैठूँ। बहुत हुआ, अब आप मुझे न चिढ़ाये।" पावलोवना दर्दभरे स्वर में बोली, "आप मुझे उनके यौवन के बारे में कुछ बताइये।"

—"रूडिन के यौवन के बारे में?"

—"हाँ, हाँ! क्या आपने मुझ से कहा नहीं कि उनको अच्छी तरह जानते हैं—वर्षों से जानते हैं?"

लेभेनोव उठा और घर के भीतर चहलकदमी करने लगा। उसने कहना आरम्भ किया, "हाँ मै उसे अच्छी तरह जानता हूँ। आप उसके यौवन की बातें सुनना चाहती हैं? बहुत अच्छा, सुनिये! उसका जन्म हुआ था टी—प्रदेश में एक गरीब जमींदार के घर। उसके पिता उसके शैशव में ही मर गये। उसके पालन-पोषण का भार उसकी माँ पर पड़ी। उसकी माँ बड़ी ही अच्छी थीं और उससे बहुत ही प्यार करती थीं। उस विचारी ने स्वयं जई पर गुजारा कर अपने पास जो कुछ था उसके लिए खर्च किया। पहले पहल उसने अपने एक चाचा के पास मास्को में रह कर पढ़ा, फिर जब वह बड़ा हो गया तब उसने किसी धनी राजकुमार की दया पर निर्भर कर—माफ कीजियेगा, दया नहीं, अपने मित्र की सहायता से रूडिन विश्वविद्यालय में गया। वहीं मुझसे उसका

साक्षात्कार हुआ और हम एक दूसरे के निकटतम मित्र बन गये। हमारे उन दिनों के जीवन के बारे में मैं तुम्हें और किसी दिन कहूँगा, अभी नहीं कह सकता, उसके बाद वह विदेशों में गया—"

लेझ्नेनोव घर के भीतर चहलकदमी करता गया। पावलोवना की उत्सुक आँखें उसका अनुगमन करती रहीं।

लेझ्नेनोव कहता गया, "विदेशों में रहते समय रूडिन कभी कभी अपनी माँ के पास पत्र लिखता था। वह अपनी माँ के पास केवल एकबार दस दिन के लिए आया था। वे बिचारी बूढ़िया उसकी अनुपस्थिति में ही मरीं। बिचारी अपने जनों के पास नहीं मरीं, मरते समय भी वे अंत तक अपने पुत्र की तस्वीर देखती रहीं। टी—प्रदेश में रहते समय मैं प्रायः उसकी माँ के पास जाता था। उसकी माँ बहुत ही दयाशीला और सेवापरायणा थीं। वे मुझे उस समय अक्सर चेरी का मुरब्बा खिलाती थीं। वे रूडिन को अपनी जान से भी प्यारा समझती थीं। लोग इसीलिए कहा करते हैं कि हम उसी से प्यार करते हैं जो प्यार करने के योग्य नहीं होते। परंतु मैं समझता हूँ सभी माताएँ अपनी संतानों को चाहती हैं विशेष कर जब वे उनसे दूर रहतीं। उसके बाद रूडिन से मेरा पुनः साक्षात्कार हुआ विदेश में। उस समय रूडिन एक स्वदेशीया शिक्षिता महिला के प्रेम-पाश में बँधा हुआ था। वह महिला उससे उम्र में बड़ी थी तथा अति शिक्षिता होने के कारण उसमें कोई आकर्षण नहीं रह गया था, जैसा कि होता है। रूडिन उसके साथ बहुत दिन रहा, फिर—मुझे माफ कीजियेगा, उसीने रूडिन का परित्याग किया। ठीक उसी समय मैंने भी रूडिन का साथ छोड़ा। यहीं पर मेरा कथन समाप्त होता है।"

लेझ्नेनोव चुप हो गया। फिर उसने ललाट पर हाथ रख कर

आराम-कुर्सी की गोद में अपने को इस प्रकार छोड़ दिया मानो वह बहुत ही श्रांत था।

अब पावलोवना बोली, "जानते हैं मँसिये लेझेनोव, आप स्वयं अच्छे नहीं हैं। वास्तव में आप पिगासोव से बिंदुमात्र भी अच्छे नहीं हैं। मैं मानती हूँ कि आपने जो कुछ कहा सच कहा है और आपने कुछ भी अतिरंजन नहीं किया फिर भी मैं कहूँगी कि आपने संपूर्ण घटना की वर्णना पूर्णतया निर्दय होकर की। उनकी बिचारी बूढ़िया माँ, उनका पुत्र-स्नेह, उनकी एकाकी मृत्यु और विदेश की वह महिला—आपने सब-कुछ को विरुद्ध दृष्टि से देखा बड़े-बड़े महापुरुषों की जीवनी भी इन रंगों से रंजित हो सकती है, जानते हैं इसलिए उसमें कोई नयी बात नहीं जोड़नी पड़ेगी पर लोग उसे सुन कर दंग रह जायेंगे। लेकिन उसे किसी पर अकारण कलंक लगाना ही कहते हैं।"

लेझेनोव उठा और पुनः घर के भीतर चहल-कदमी करने लगा। वह बोला, "महाशया" मुझे आपको किसी प्रकार कष्ट देने की इच्छा नहीं है। मैं किसी की निन्दा करना नहीं चाहता। मैंने, जो सच था, वही कहा।" क्षण भर कुछ सोच लेने के बाद उसने कहा, "आपने जो कहा उसमें भी कुछ सत्य हो सकता है। मैंने रूदिन की निंदा नहीं करनी चाही - हो सकता, वह अपने को बदल सका है और मैं उसके प्रति सहज न हो सका।"

—"ओफ! अब आपने इसका अनुभव किया। आप मेरे सामने इसकी प्रतिज्ञा कीजिये कि आप पुनः उनसे परिचय करेंगे और उन्हें अच्छी तरह समझ सकने के बाद आप उनके संबंध में अपना अभिमत प्रकट करेंगे।"

—"जैसी आपकी इच्छा! लेकिन वोलीनस्वेव आज तुम खामोश क्यों बैठे हो?"

वोलीनस्टेव ने चौंक कर अपना मस्तक उठाया मानो अभी अभी उसकी नींद टूटी।

—"मैं क्या कहूँगा ? मैं उनके संबंध में कुछ नहीं जानता। फिर, मुझे सिर-दर्द हो गया है।"

—"हाँ, आज तुम्हारा चेहरा सूखा नजर आ रहा है।" उसकी बहन ने कहा। "क्या तुम्हारी तबीयत ठीक नहीं है ?"

—"सिर दुखा रहा है।" वोलीनस्टेव यह कह कर घर से निकल गया।

पावलोवना और लेभेनोव ने उसे जाते हुए देखा फिर परस्पर दृष्टि-विनिमय किया, पर किसी ने किसी से कुछ कहा नहीं। वोलीनस्टेव के हृदय में कौन सा कष्ट था यह उनके निकट छिपा न रहा।



रूडिन—९

उसके बाद दो महीने बीत गये। इन दो महीनों का समय रूडिन ने मैदम लासुनस्काया के घर ही पर रह कर बिताया। वह कहीं भी नहीं गया, क्योंकि उसके न रहने से अब मैदम का एक भी काम नहीं चलता था। रूडिन की बातों को ध्यानपूर्वक सुनना तथा अपने जीवन की घटनाएँ रूडिन को सुनाना मैदम के लिए एक आवश्यक कार्य हो गया। एक बार रूडिन ने यह कह कर जाना चाहा कि उसके पास के सब पैसे खर्च हो चुके हैं, लेकिन मैदम ने उसे तुरंत पाँच सौ रूबल दिये। रूडिन ने वॉलीनस्टेव से भी दो सौ रूबल उधार लिये।

पिगासोव अब मैदम के घर कभी-कदाचित आता था क्योंकि रूडिन की उपस्थिति उसके लिए असहनीय थी। अकेले पिगासोव को ही रूडिन की उपस्थिति नहीं खलती थी।

—"मैं उस महापुरुष को नहीं देख सकता।" पिगासोव कहा करता था, "वह इस प्रकार बनावटी ढंग से बातें करता है मानो किसी उपन्यास का नायक रूसी जीवन के संबंध में अपना अभिमत व्यक्त कर रहा हो। वह अपना कोई भी कथन आरंभ करने के पूर्व कहेगा, 'मैं'—फिर क्षण भर अपनी बड़प्पन की भावना को प्रकट करने के लिए रुकेगा। 'मैं, हाँ, मैं ही' इस प्रकार 'मैं' शब्द को ही वह कुछ देर तक दोहराता रहेगा। अगर तुमने छींक दी तो फिर क्या देखना, वह तुम्हें घंटों समझाता रहेगा कि तुमने क्यों छींक दी, खाँसने के बजाय! यदि वह किसी की प्रशंसा भी करता है तो इस ढंग से करेगा मानो उसे ऊँचे ओहदे मिलने की खबर

सुना रहा हो। फिर जब अपने को कोसने लगता तब इस प्रकार कोसता कि कुछ बाकी नहीं छोड़ता। उस समय ऐसा लगता है कि वह अब आगे किसी को मुँह नहीं दिखायेगा, हर्गिज नहीं दिखयेगा। फिर वह उस समय इतना उत्तेजित हो उठता है मानो उसने एक गिलास रूसी शराब पी ली है।"

पांडालेवस्की के मन में रूडिन के लिए श्रद्धा मिश्रित भय था, वह घबड़ा कर रूडिन का समर्थन पाना चाहता था। वोलीनस्टेव से रूडिन का संपर्क कुछ अजीब प्रकार का था। रूडिन वोलीनस्टेव की प्रशंसा हद से ज्यादा करता था, केवल उसके सामने नहीं बल्कि उसके पीठ-पीछे भी लेकिन उतने पर भी वह वोलीनस्टेव का प्रिय न बन सका। रूडिन जब भी उसके सामने उसकी प्रशंसा करने लगता वह तभी अधीर और क्रुद्ध हो उठता वह अपने को किसी प्रकार रोक नहीं सकता। वह मन ही मन सोचता था रूडिन उसकी हँसी तो नहीं उड़ा रहा है! उससे उसके मन की विद्वेष-भावना उबल पड़ती थी। नातालिया के कारण ही वह रूडिन से जलने लगा था। रूडिन ने उससे रुपये उधार लिये थे, उसकी प्रशंसा का चरम करता था तथा उसके नाम के आगे बड़े-बड़े विशेषण जोड़ता था तथापि वोलीनस्टेव उसकी मित्रता को स्वीकार न कर सका। सचमुच यह कहना कठिन था कि वे दोनों उस समय अपने मन में क्या कहते जब वे मित्रों के समान परस्पर हाथ मिलाते और एक दूसरे की तरफ भरी निगाहों से देखते!

बासिस्टोफ तो रूडिन को पूजने लगा था और उसकी हर बात को असीम आग्रह से सुनता था। परंतु रूडिन उसकी तरफ कम ध्यान देता था। केवल एक बार रूडिन ने उसके साथ संसार की कठिनतम समस्याओं और कर्त्तव्यों की आलोचना में सारा सवेरा बिता दिया था। उससे बासिस्टोफ के हृदय में अपार

उत्साह जाग उठा था। लेकिन उसके बाद रूडिन ने उसकी तरफ बहुत कम ध्यान दिया। वह कहने को तो कहता था कि वह पवित्र और प्रेमी हृदय की खोज कर रहा है। लेफ्रेनोव आज कल मैदम लासुनस्काया के घर आने-जाने लगा था परंतु रूडिन ने कभी उसके समक्ष कोई तर्क नहीं छेड़ा। वह उससे दूर ही रहना पसंद करता था। लेफ्रेनोव भी रूडिन के साथ निस्पृह बर्ताव करता था। लेफ्रेनोव ने उसके संबंध में कोई अपना चरम अभिमत व्यक्त नहीं किया था जिस कारण पावलोवना लेफ्रेनोव के प्रति मन ही मन असंतुष्ट थी। पावलोवना रूडिन की प्रशंसा तो करती थी लेकिन लेफ्रेनोव पर उसका विश्वास अटल था।

मैदम लासुनस्काया के घर के सभी रूडिन की अद्भुत इच्छाओं के सामने झुकते थे। रूडिन की छोटी से छोटी इच्छा पूर्ण होती थी। दिन भर का कार्य-क्रम पूर्णतया वही निर्धारित करता था। किसी प्रकार का प्रीतिभोज उसके बिना संभव न था। रूडिन स्वयं पूर्व-निश्चय के बिना भ्रमण और दूसरे प्रकारों के मनोरंजनों का पक्षपाती नहीं था फिर भी मानो दयाभाव से प्रेरित हो कर किंचित उदासीनता से उनमें सम्मिलित होता था जिस प्रकार कोई वयस्क आदमी बच्चों के खेल-कूद में सम्मिलित होता है। इसके विपरीत वह दूसरी आवश्यक बातों में विशेष दिलचस्पी लेता था। मैदम लासुनस्काया के साथ उसकी जमींदारी के प्रबंध, उसकी संतानों की शिक्षा तथा उसकी पारिवारिक और अपनी समस्याओं के विषय में विशेष आलोचना करता था। मैदम की योजनाओं को वह ध्यानपूर्वक सुनता था, उसकी छोटी से छोटी बातों पर भी विचार करता था और तब उनके परिवर्तन तथा संशोधन के संबंध में अपना सुझाव देता। मैदम केवल उसके सुझावों की प्रशंसा करके ही रह जाती थी और अपनी जमींदारी से संबंधित बातों

का निबटारा अपने नायब के निर्देशानुसार ही करती। मैदम का नायब एक एक-आँखवाला बूढ़ा था। वह यूक्रेन प्रदेश का रहने-वाला था। उसमें सज्जनता और बुद्धिमत्ता दोनों थीं। वह विशेष प्रकार से हँसता और अपनी तरफ इशारा कर कहा करता था, "बूढ़ा घोड़ा अधिक समझदार होता है !"

मैदम लासुनस्काया के अतिरिक्त रूडिन और किसी से नहीं बल्कि नातालिया से अधिक देर तक बातें किया करता था। वह चोरी से नातालिया को किताबें पढ़ने को देता था तथा अपने लक्ष्य के बारे में उससे बातें करता और अपनी भावी पुस्तकों तथा निबंधों का प्रथमांश पढ़ कर सुनाता था। अक्सर उनका अर्थ नातालिया नहीं समझती थी। लेकिन उसके समझने न-समझने पर रूडिन उतना ध्यान नहीं देता था। वह केवल देखता था कि नातालिया ने कितनी देर सुना। इधर नातालिया की माँ मैदम लासुनस्काया कभी नहीं चाहती थी कि रूडिन के साथ अपनी लड़की की इतनी हृदयता बढ़े। जो हो, मैदम अपने मन में कहती थी, 'अच्छा नातालिया इस गाँव में भले ही रूडिन से थोड़ा मिल-जुल ले। रूडिन तो उसे एक बच्ची ही समझता है इसलिए इतना प्यार करता। इससे कोई बड़ी हानि नहीं होगी वरन् नातालिया बहुत-कुछ जान सकेगी—समझ सकेगी।—पीटर्सबर्ग में चल कर यह सब अपने आप बंद हो जायगा।'

लेकिन मैदम लासुनस्काया भूल कर रही थी। नातालिया अब एक छोटी बच्ची न थी। वह रूडिन की बातों को साग्रह सुनती तथा उनकी गहराई तक पहुँचना चाहती थी। वह रूडिन के सम्मुख अपनी चिंताधाराओं तथा संशयों को व्यक्त करती थी। रूडिन नातालिया का विश्वसनीय मंत्री तथा पथ-प्रदर्शक था। अब तक केवल नातालिया का मस्तिष्क ही विचलित हो रहा था—लेकिन

यौवन में केवल अकेला मस्तिष्क ही विचलित नहीं होता। नातालिया के लिए वे क्षण कितने मधुर होते जिस समय रूडिन बगीचे में किसी पत्रबहुल वृक्ष की हलकी छाया में बेंच पर बैठे-बैठे उसे गोटे का 'फॅस्ट', हॉफमैन और वेतिना की पत्रावली अथवा 'नोवालिस' पढ़ कर सुनाता और बीच-बीच में रुक-रुक कर कठिन और अस्पष्ट स्थानों की व्याख्या कर देता। नातालिया दूसरी रूसी तरुणियों के समान जर्मन भाषा मुश्किल से बोल लेती थी पर समझ लेती थी अच्छी तरह, और रूडिन, जिसका हृदय जर्मन-काव्यों से पूर्ण था, उसे जर्मन दर्शन और काव्य के निषिद्ध स्वप्न-राज्य में ले जाता था अथवा नातालिया मजबूर हो कर जाती थी। रूडिन अपने हाथों की खुली हुई पुस्तक के पन्नों में से अद्भुत अपूर्व सौंदर्य-छवियाँ नातालिया की आँखों के सम्मुख उपस्थित करता था। न जाने कितनी ही नवीन और उज्ज्वल चिंताओं की धाराएँ अनुपम स्वर-निर्झरिणी के रूप में रूडिन के मुख से उद्गत हो कर नातालिया के हृदय को सिंचित करती थीं। वह अपने हृदय में महान प्रेरणा के मधुर आनंद का अनुभव कर सिहर उठती थी, और उस महान प्रेरणा की पवित्र अग्निशिखा धीरे-धीरे एक सुमहान ज्वाला बन जाती।

× × ×

एक दिन खिड़की के पास बैठे-बैठे नातालिया ने रूडिन से पूछा, "कहिये, आप इस जाड़े में पीटर्सबर्ग में रहेंगे न ?'

—"कैसे कहूँ ?" रूडिन ने उत्तर दिया अपनी गोद में से किताब को नीचे उतार कर। "अगर मेरे पास पैसे हुए तो अवश्य जाऊंगा।"

रूडिन बातें कर रहा था उदासीन हो कर। वह बहुत ही क्लांत था इसलिए उसने दिन भर में कोई काम भी नहीं किया।

—"मैं समझती हूँ उसके लिए आपके पास पैसे हो जायेंगे।"

रूडिन ने अपना मस्तक हिलाया।

—"क्या तुम ऐसा ही समझती हो ?"

उसने भावपूर्ण दृष्टि से एक तरफ देखा।

नातालिया ने कुछ कहना चाहा पर अपने को रोक लिया।

—"देखो !" खिड़की की तरफ संकेत कर रूडिन ने कहना आरंभ किया, "देखा तुमने उस सेब के पेड़ को ? वह तो अपने ही फल के भार से और प्राचुर्य से टूटता जा रहा है। वह प्रतिभा का एक वास्तविक निदर्शन है।"

—"वह इसलिए टूट रहा है कि उसे कोई अवलंबन नहीं मिला।" नातालिया बोली।

—"मैं तुम्हारी बात समझता हूँ नातालिया, लेकिन एक मनुष्य के लिए अपना अवलंबन ढूँढ़ निकालना कोई सहज काम नहीं है।"

—"लेकिन मैं समझती हूँ, दूसरों की सहानुभूति…जब कभी, अपने को औरों से दूर रख कर…" नातालिया अपनी बातों में उलझ गयी, उसका मुखमंडल आरक्त हो उठा। वह अपने को सँभाल कर शीघ्रता से बोल उठी, "और आप जाड़े में इस गाँव में रह कर क्या करेंगे ?"

—"मैं क्या करूँगा ? मैं अपने इस लंबे निबंध को लिख कर पूरा करूँगा। तुम तो इसके सम्बन्ध में जानती ही हो, जीवन और कला की दुःखद परिणति पर यह निबंध लिखा जायगा। उसका खाका उस दिन तुम्हें दिखाया है। मैं उसे तुम्हारे पास भेज दूँगा।"

—"उसे प्रकाशित नहीं करेंगे ?"

—"नहीं !"

—"नहीं ? फिर आप किसके लिए यह परिश्रम करेंगे ?"

—"अगर कहता हूँ तुम्हारे लिए ?"

नातालिया ने दृष्टि नत कर ली।

—"यह बहुत ही महान त्याग होगा।"

बासिस्टोफ उनसे अलग बैठा था। उसने बड़ी नम्रता से पूछा, "आपने क्या कहा—वह निबंध किस विषय पर लिखा गया है ?"

—"जीवन और कला की दुःखद परिणति" रूडिन ने उत्तर दिया "मँसिये बासिस्टोफ भी इसे पढ़ेंगे। लेकिन अभी तक इसके मुख्य उद्देश्य के सम्बन्ध में किसी निश्चय पर नहीं पहुँच पाया, क्यों कि अभी तक प्रेम के दुःखमय अर्थ को ही नहीं समझ सका।"

प्रेम के सम्बन्ध में रूडिन कुछ कहना पसंद करता था, वह अक्सर कहता भी था। कुमारी बोनकोर्ट पहले पहल 'प्रेम' शब्द सुनते ही चौंक पड़ती थी और पुराने दिनों के लड़ाई के घोड़े तुरही की आवाज सुन कर जिस प्रकार अपने कान खड़े कर लेते थे उसी प्रकार मैडम भी यह शब्द सुनते ही अपने कान खड़े कर लेती थी। लेकिन रूडिन के कारण वह धीरे-धीरे उस शब्द से परिचित हो गयी, अब वह चौंकती न थी केवल अपने होंठों को कुंचित कर बार-बार सूँघनी लेती।

"मैं समझती हूँ।"—नातालिया डरती हुई बोली, "व्यर्थ प्रेम ही प्रेम का करुणात्मक रूप है।"

—"हर्गिज नहीं।" रूडिन बोल उठा, "यह प्रेम का एक हास्यकर रूप है। इस प्रश्न का विचार दूसरे ढंग से करना होगा, इसके लिए गहराई तक पहुँचना होगा। प्रेम!—" रूडिन कहता गया, "आदि से अन्त तक केवल रहस्य ही रहस्य है। प्रेम होता है, बढ़ता है फिर समाप्त हो जाता है। प्रेम के होने में आकस्मिकता तो है ही लेकिन निश्चयता भी है, आनन्द भी है जैसा एक नया

सवेरा। फिर प्रेम छिपा रहता है लंबी अवधि तक जैसे राख के नीचे सुलगती हुई आग, जब प्रेम समाप्त होता है उस समय अन्तः-स्थल में एक विनाशमयी ज्वाला भभक उठती है। कभी यह साँप बन कर हृदय को आ कर डँसता है फिर एकाएक अदृश्य हो जाता है। सचमुच प्रेम एक गंभीर समस्या है। फिर आज प्यार कौन करता है—प्यार करने का साहस कौन करता ?"

रूडिन मानो अपनी चिंता के सागर में खो गया।

दूसरे ही क्षण एकाएक उसने अप्रत्याशित प्रश्न किया, "मँसिये वोलीनस्टेव को बहुत दिनों से नहीं देखा ?"

नातालिया गुलाबी-राग से रंग गयी, उसने अपना मुख नीचा कर लिया।

—"मैं नहीं जानती ! बहुत धीरे-धीरे नातालिया बोली।

रूडिन खड़े हो कर बोल उठा, "बड़े ही महान और सज्जन आदमी हैं। रूसी भद्र-समाज के संभवतः वे एक अच्छे उदाहरण हैं।

कुमारी बोनकोर्ट ने अपनी छोट-छोटी फ्रांसीसी आँखों से रूडिन की तरफ वक्र दृष्टि डाली।

रूडिन घर के भीतर चहलकदमी करने लगा था। उसने एका-एक नातालिया की तरफ घूम कर कहा, "तुमने देखा है 'ओक' के उस बहुत भारी पेड़ को, जब उसमें नयी पत्तियाँ आतीं तब पुरानी पत्तियाँ झड़ जाती हैं।"

नातालिया ने धीरे से उत्तर दिया, "हाँ, मैं ने देखा है।"

—"एक सबल हृदय के आगे पुरातन प्रेम की भी यही दशा होती है। प्रेम मर चुका है लेकिन उसका अवशेष वर्तमान है; अब कोई नया प्रेम ही उसे नष्ट कर सकता है।"

नातालिया ने कोई उत्तर नहीं दिया केवल अपने मन से पूछा, "इस कथन का क्या अर्थ हो सकता है ?"

रूडिन क्षण भर चुपचाप खड़ा रहा फिर अपने बालों को पीछे खसका दिया और, बाहर चला गया।

नातालिया अपने घर में गयी। वह देर तक अपने हृदय की आकुलता को दबाये अपने छोटे-से बिस्तर पर बैठी रही। वह वास्तव में रूडिन के अंत के शब्दों पर विचार कर रही थी। एकाएक अपने हाथों को एकत्र कर वह बुरी तरह रो पड़ी। वह क्यों रो पड़ी—एकमात्र भगवान ही जानते थे। वह खुद नहीं समझ सकी कि उसकी आँखों से आँसुओं की ये धाराएँ क्यों बह चलीं। वह बार-बार पोंछती गयी पर आँसुओं की नयी धाराएँ बार-बार बह चलीं मानो बहुत दिनों से रुद्ध किसी उत्स का स्रोत-मुख अचानक खुल गया हो।

× × ×

उसी दिन रूडिन के संबंध में पावलोवना और लेभ्नेनोव के बीच वार्तालाप चल रहा था। पहले पहले पावलोवना लेभ्नेनोव के सभी प्रकार के आक्रमणों को चुपचाप सह रही थी परंतु अंत तक उसे कुछ बोलना ही पड़ा।

पावलोवना लेभ्नेनोव से बोली, "मैं देखती हूँ आप रूडिन से वैसी ही नफरत करते हैं जैसी नफरत पहले करते थे। मैंने सोच-समझ कर ही आपसे उनके विषय में कुछ पूछा नहीं था। लेकिन अब आपने उन्हें समझने का काफी मौका पाया है। मैं पूछती हूँ, आप उनसे नफरत क्यों करते हैं ?"

—"बहुत अच्छा !" सदा की भाँति निरस और जड़ित स्वर में लेभ्नेनोव ने कहा, "देखता हूँ, अब आप अपने धैर्य की रक्षा करने में असमर्थ हैं, लेकिन देखिये, मुझ पर क्रुद्ध न होइयेगा।"

—"अच्छा आप कहिये तो !"

—"मुझे अंत तक कहने तो देंगी ?"

—"आप कहना शुरू तो कीजिये।"

—"ठीक है।" लेभ्नेनोव ने अपने को सोफे पर ढीला छोड़ दिया। "मैं मानता हूँ, मैं उसे फूटी आँखों भी नहीं देख सकता। वह बहुत ही धूर्त है।"

—"मैं भी यही सोचती हूँ!"

—"बहुत ही धूर्त आदमी, लेकिन उसमें कोई सार तत्त्व नहीं है, लेकिन इससे किसी का क्या जाता? हम-सभी में सार तत्त्व नहीं है। वह निष्ठुर है तो अपने पास है। मैं इसलिए उसे बुरा नहीं कहता कि वह निष्ठुर है, वह आलसी है और उचित मात्रा में शिक्षित नहीं है।"

—"रूडिन—उचित मात्रा में शिक्षित नहीं हैं!" एकाएक बोल उठी पाँवलोवना।

—"नहीं। उचित मात्रा में वह शिक्षित नहीं है।" लेभ्नेनोव ने उसी स्वर में पुनर्वार कहा, "वह औरों पर निर्भर कर जीवित रहना चाहता है, ढोंग रचना चाहता है इसलिए उसकी शिक्षा निरर्थक है। उसके इन दोषों की भी तो कोई सीमा है लेकिन वह सबसे बुरा इसलिए लगता है कि वह बर्फ के समान शीतल है।"

—"शीतल? वैसी ज्वालामयी आत्मा?"

—"हाँ शीतल है, बर्फ के समान और वह यह जानता भी है। इसलिए अग्निमय होने का ढोंग रचता है।" लेभ्नेनोव धीरे-धीरे उष्ण होने लगा था, "उसका सबसे बड़ा दोष यह है कि वह एक भयानक खेल खेलने लगा है। लेकिन इससे उसका क्या बिगड़ता—कुछ भी नहीं! न तो वह धेले की बाजी ही लगायेगा और न उसका एक बाल ही बाँका होगा जहाँ और-और अपनी-अपनी जानों की बाजी लगा देंगे।"

—"क्यों—कौन ? आप किसकी बात कह रहे हैं। मैं तो आपकी एक भी बात न समझ सकी।"

—"उसका सबसे बड़ा दोष—वह प्रवंचक है। उसके समान बुद्धिमान आदमी को चाहिये अपनी बातों का कीमत समझे। जो हो, वह बातें इस प्रकार बनाता है कि मालूम पड़ता वह अपनी बातों का कीमत समझता है। वह अच्छा वक्ता है—यह तो आप भी मानेंगी। लेकिन उसकी वाग्मिता इस देश की नहीं है। अगर एक छोटा लड़का इस प्रकार बढ़-चढ़ कर बातें करता है तो उसे माफ किया जा सकता लेकिन उसकी-सी अवस्था में आकर इस प्रकार लंबी-चौड़ी बातें करना और आडंबर दिखाना सचमुच शोभा नहीं देता।"

—"मुझे ऐसा लगता है, कोई कुछ कहते समय भले ही न आडंबर दिखाये पर उसके श्रोता समझते हैं, वह व्यक्ति आडंबर दिखा ही रहा है।"

—"माफ कीजियेगा ! बात ऐसी नहीं है। किसी की बातें सुन कर किसी का खून खौल उठता है पर दूसरे से उससे कहीं अधिक सुन कर भी उधर ध्यान नहीं देता। इसका, क्या कारण है ?"

—"आप ध्यान नहीं देते ?" पावलोवना ने प्रश्न किया।

—"नहीं। मैं ध्यान नहीं देता, हलाँकि मेरे कान काफी बड़े हैं। कारण इसका यह है कि रुडिन की बातें केवल बातें ही रह जायेंगी—वे कभी कामों में रूपांतरित नहीं हो सकतीं, ऊपर से ऐसी बातें तरुण हृदयों को विचलित करती हैं, बर्बाद करती हैं।

—"लेकिन आप यह-सब किसके लिए कह रहे हैं ?"

लेझनेव रुक गया।

—"आप सुनना चाहती हैं यह सब, मैं किसके लिए कह रहा हूँ ? नातालिया के लिए कह रहा हूँ !"

पावलोवना क्षण भर के लिए विस्मित हुई। लेकिन बाद में वह हँसी। बोली, "भला हो आपका! आप कैसी अजीब-अजीब बातें सोचते रहते हैं। अरे, नातालिया तो अभी बच्ची है! खैर, आपकी ही बात मान ली लेकिन नातालिया की माँ—।"

—"उसकी माँ! उसकी माँ तो पहले से ही आत्मकेंद्रिक हैं, उनका सब-कुछ उन्हीं में है। फिर संतानों की शिक्षा-दीक्षा के संबंध में अपनी शक्ति पर उनका इतना आत्मविश्वास है कि ये सब बातें उनको खलती ही नहीं। वे समझती हैं, वे एक लफ्ज कह देंगी—एकबार सम्राज्ञी की भाँति ताक देंगी और सब-कुछ ठीक हो जायगा। अजीब उनका समझना। लेकिन मैदम वास्तव में ऐसा ही समझती हैं, न जाने क्यों? वे अपने को बड़ी ही बुद्धिमती और प्रतिभा की आश्रयदात्री समझती हैं लेकिन वे एक साधारण वृद्धा के अतिरिक्त और क्या हैं! नातालिया अब एक बच्ची नहीं है। मेरी बात मानिये, वह मुझसे और आप से कहीं अधिक गंभीरतापूर्वक सोचा करती है। सचमुच यह कितनी घृणा की बात होगी जबकि उसके समान एक अच्छी, मिलनसार और उत्सुक स्वभाव की लड़की उस अभिनय-चतुर और वाक्-विलासी आदमी के प्रति आकृष्ट होगी। जो कुछ हो, ऐसा होना स्वाभाविक ही है।"

—"वाक्-विलासी! आप रूडिन को वाक्-विलासी समझते हैं?"

—"अवश्य। आप ही कहिये न, मैदम लासुनस्काया के यहाँ उसकी कैसी प्रतिष्ठा है? केवल मूर्तिवत् बैठा रहना, समय-समय पर बड़ी-बड़ी बातें करना और घर के प्रबंध में नाहक हाथ बँटाना तथा पारिवारिक गप-गपोड़े में भाग लेना—भला यह सब किसी सम्मानित व्यक्ति को शोभा देता है?"

पावलोवना विस्मित हो कर थोड़ी देर लेझेनोव को देखती

रही। फिर बोली, "मैं आपकी इन बातों को नहीं मानती।" वह फिर बोली, "आपका मुँह लाल हो उठा है, आप उत्तेजित हैं। इन सब बातों के पीछे अवश्य कोई भेद छिपा है।"

—"मैं भी यही सोचा था। आप अपने विश्वास की कोई सच्ची बात किसी स्त्री से कहिये, वह तब तक शांत नहीं होगी जब तक उसमें से एक भी मामूली और विषय-बहिर्भूत कारण न ढूँढ़ निकालेगी; जिस प्रकार कि आप मेरे कथन का ऐसा ही अर्थ लगा रही हैं—वैसा नहीं!"

लेभ्रेनोव की बातों से पावलोवना चिढ़ गयी। बोल उठी, "वाह, वाह मँसिये लेभ्रेनोव, आप देखती हूँ मँसिये पिगासोव के समान ही नारी-विद्वेषी हो उठे हैं। जैसी आपकी इच्छा। लेकिन आपकी सभी चालाकियों के होते हुए भी अब मैं नहीं मान सकती कि आप किसी भी आदमी को—किसी भी चीज को बहुत थोड़े समय में जान लेते हैं। मैं समझती हूँ आप सब-कुछ गलत समझते हैं। आप के कहने के अनुसार रूडिन तो एक प्रकार से धर्मद्वेषी हैं—।"

—"लेकिन आफसोस इस बात का है कि रूडिन एक धर्मद्वेषी भी नहीं है। धर्मद्वेषी कम से कम यह समझता है कि वह स्वयं क्या है लेकिन यह व्यक्ति भली-भाँति बुद्धि-वृत्ति ले कर भी—।"

—"हाँ हाँ, कहिये, यह व्यक्ति क्या है। सचमुच आप बहुत ही भयानक आदमी हैं, विचार आप में बिंदुमात्र भी नहीं है।"

लेभ्रेनोव बोला, "महाशया! ये आप हैं जिनमें विचारने की शक्ति नहीं है। मैंने रूडिन की कटु समालोचना की है जिस कारण आप इतनी क्रोधित हो उठी हैं लेकिन मुझे उसकी कटु समालोचना करने का अधिकार है। उस अधिकार को प्राप्त करने के लिए मुझे बहुत महँगा दाम चुकाना पड़ा है। उसे अच्छी तरह मैं जानता

हूँ। हम बहुत समय तक एक साथ रह चुके हैं। आपको इसकी याद होगी, एक दिन आप से कहा था, मास्को के उन बीते दिनों के संबंध में किसी दिन आपको बताऊँगा। ऐसा लगता है, मुझे वह सब अभी बताना पड़ेगा। क्या आप उन्हें धीरज धर कर सुन सकेंगी ?"

—"कहते जाइये, कहते जाइये !"

—"तब ऐसा ही हो।"

लेम्भेनोव घर के भीतर धीरे-धीरे चहलकदमी करने लगा। वह बीच बीच में रुकता था और सर झुकाये चुपचाप खड़ा रह जाता।

उसने कहना आरंभ किया, "संभवतः आप जानती हैं कि मेरे बचपन में ही मेरे माँ-बाप की मृत्यु हो गयी थी और मेरे ऊपर कोई बड़ा न था। उस समय मेरी अवस्था सत्रह साल की थी। मास्को में अपनी मौसी के घर पर रहता था और मन में जो भी आता करता था। उस समय मैं एक बेवकूफ और घमंडी नौजवान था, अहंकार और आडंबर का प्रदर्शन खुल कर करता था। विश्वविद्यालय में जा कर भी मेरा लड़कपन वैसा ही बना रहा। जो हो, शीघ्र ही किसी झंझट में फँस गया। मैं आपको उस मुसीबत के बारे में कुछ नहीं बताऊँगा क्योंकि उसकी कोई जरूरत नहीं। जो हो, मुझे झूठ बोलना पड़ा—एक भयानक झूठ ! लेकिन वह छिपा न रहा, मेरा दोष प्रमाणित हुआ और मुझे सबके सामने नीचा देखना पड़ा। मैं अपने को काबू में न रख सका, एक शिशु की भाँति रो पड़ा। यह घटना घटी थी मेरे ही एक मित्र के मकान में जहाँ पर मेरे बहुत से सहपाठी उपस्थित थे। सभी मुझे देख कर हँसने लगे केवल एक को छोड़ कर, जो मेरे हठपूर्ण कपट बर्ताव के कारण औरों से मुझ पर अधिक असंतुष्ट था। संभवतः मेरे

लिए उसके मन में दया आयी। जो हो, वह मुझे मेरा हाथ पकड़ कर अपने घर ले गया।"

—"क्या ये रूडिन थे?" पावलोवना ने प्रश्न किया।

—"नहीं! रूडिन नहीं था। वह अभी जीवित नहीं है। वह एक असाधारण व्यक्ति था, जिसका नाम था पोकोरस्की। थोड़े शब्दों में उसकी वर्णना करना संभव नहीं है, यदि मैं उसकी वर्णना करने लगूँ तो और किसी के बारे में कुछ कहने की इच्छा नहीं रहेगी। उसका हृदय उदार और पवित्र था, उसकी सी बुद्धि मैंने और किसी में नहीं देखी। वह एक पुराने लकड़ी के बने मकान की छत पर की कोठरी में रहता था। वह कोठरी भी कैसी थी, सँकरी और नीची छतवाली। वह व्यक्ति बहुत ही गरीब था, किसी प्रकार लड़कों को पढ़ा कर अपना खर्चा चला लेता था। कभी-कभी ऐसा भी अवसर आता कि वह अपने मित्र को एक कप चाय भी नहीं दे पाता था। उसके पास एक सोफा था जो बीचोबीच इस प्रकार दब गया था कि देखने में एक नाव जैसा हो गया था। इन सब असुविधाओं के होने पर भी उसके घर आगंतुकों की कमी न थी। उसे सभी चाहते थे। उसने सभी का हृदय आकृष्ट किया था। आप इसकी कल्पना नहीं कर सकेंगी कि उसकी उस कम्बख्त छोटी सी कोठरी में जाकर बैठना कितना आरामदेह था। वहीं रूडिन के साथ मेरा पहले-पहल परिचय हुआ। उस समय वह उस राजकुमार से अलग हो चुका था।"

—"पोकोरस्की में ऐसा क्या था जिसे आप असाधारण कह रहे हैं?" पावलोवना ने प्रश्न किया।

—"यह कह कर समझाना कठिन है। काव्य और सत्य—उसके चरित्र में इन दोनों का समावेश था जिस कारण हम उसके प्रति आकृष्ट हुए थे। उसकी बुद्धि-वृत्ति अति मात्रा में स्वच्छ और

विस्तृत होने पर भी उसका स्वभाव एक बच्चे के समान मधुर और मिलनसार था। बच्चों की सी उसकी तरल हास्य-ध्वनि आज भी मेरे कानों में गूँजती है। वही व्यक्ति कभी रात-रात-भर ध्यान-मग्न हुआ सा हो कर बैठ जाता था। उस समय ऐसा लगता था कि सुंदर की सौम्य प्रतिमा के आगे कोई स्थिर दीपक जल रहा है। सचमुच वह हमारी मंडली का सबसे प्रिय और अर्ध पागल कवि था।"

—"वे बातें किस प्रकार करते थे?" पावलोवना ने पुनः पूछा।

- "जब वह आवेश में रहता था उस समय अच्छी तरह बातें करता था। लेकिन उसमें अद्भुत कुछ नहीं रहता था। उसी समय रूडिन उससे बीस गुना अच्छा वक्ता था।"

लेस्क्रेनोव ने अपनी बाहों को मोड़ कर सीने पर रख लिया और चुपचाप खड़ा हो गया। वह कहने लगा, "पोकोरस्की और रूडिन में सादृश्य बहुत ही कम था। रूडिन में उच्छ्वास और आग्रह अधिक था। उसमें वाक्पटुता और उत्साह की अधिकता थी। देखने में वह पोकोरस्की से अधिक गुणी मालूम होता था लेकिन वास्तविक तुलना में रूडिन उसके आगे तुच्छ था। रूडिन अपने मनोभावों को अधिक विस्तार देने में उससे अधिक चतुर और वाद-विवाद में बेजोड़ था, लेकिन मनोभाव उसके अपने न थे वह दूसरों के मनोभावों, विशेष कर पोकोरस्की के मनोभावों का चुराता था। पोकोरस्की देखने में शान्त और भद्र था—दुर्बल भी, लेकिन वह लड़कियों के लिए पागल था, दिन को होली और रात दिवाली मानने की तीव्र अभिलाषा उसमें थी इसलिए वह किसी पर भी अपने को न्यौछावर कर सकता था। दूसरी तरफ रूडिन तेज, साहस और जीवन से पूर्ण था परन्तु उसका हृदय उसी अनुपात में शीतल और कापुरुष था। लेकिन जब उसके गर्व पर आघात लगता तब वह भयानक उत्तेजित हो उठता था। वह

दूसरों को अपने वश में करने के लिए प्राणों की बाज़ी लगा कोशिश करता था फिर उसके साधारण सिद्धान्त तथा भावनाएँ आकर्षक थीं और इस कारण वह सचमुच बहुतों पर प्रभाव विस्तार करने में समर्थ भी हुआ था। परन्तु सच तो यह था कि कोई भी उसे चाहता न था, जो हो, मैं उसके प्रति आकृष्ट था। लोग उसकी प्रतिभा के सम्मुख झुकते थे परन्तु पोकोरस्की के आगे स्वेच्छा से आत्मसमर्पण करते। कभी रूडिन किसी से बात करने या तर्क करने से इन्कार नहीं करता था। रूडिन का अध्ययन विस्तृत न था, फिर भी वह पोकोरस्की से और हम लोगों से अधिक ही पढ़ा था। उसका मस्तिष्क था सुसंबद्ध, स्मृति-शक्ति थी तीव्र और इन्हीं गुणों से वह तरुण मस्तिष्कों को प्रभावित करता था। तरुण चाहते हैं तर्क और फिर निष्पत्ति, निष्पत्ति किसी भी मूल्य पर—चाहे वह मिथ्या ही क्यों न हो! लेकिन एक सही माइने में विवेचक व्यक्ति ऐसा नहीं करेगा। आप तरुणों से कह कर देखिये कि आप सम्पूर्ण सत्य की खोज नहीं दे सकतीं क्योंकि स्वयं उसे नहीं जानतीं, देखेंगी, वे आगे आपकी बात सुनने से इन्कार कर देंगे। लेकिन आप उन्हें धोखा भी नहीं दे सकतीं और तब तक नहीं दे सकतीं जब तक आप ही को न इसका थोड़ा-बहुत विश्वास हो कि आप सत्य को जानती हैं। लेकिन रूडिन में यह विशेषता थी और इसीसे वह हम पर प्रभाव विस्तार करने में समर्थ हुआ था। मैंने अभी कहा न, वह अधिक पढ़ा न था, फिर भी उसने दर्शन की किताबों को पढ़ा था और उसका मस्तिष्क भी इतना ग्रहणशील था कि वह जो कुछ पढ़ता तुरन्त उसके तत्त्व को समझ जाता था और उस विषय की गहराई तक पहुँच कर वहाँ से खंडन की स्वच्छ और उज्ज्वल युक्तियों के बाने-ताने से विरुद्ध मत का विशाल पर्दा गठित करता था जिस पर चिंता-जगत का भिन्न क्षितीज प्रतिबिंबित

होता। यहाँ कह देना ठीक होगा उस समय हम लोगों की मंडली हरे-भरे तरुणों से गठित थी जिनका अध्ययन अधूरा था। दर्शन, कला, शिक्षा और जीवन—ये सब हमारे निकट कुछ शब्द मात्र थे जिनका सैद्धान्तिक मूल्य ही संभव था। ये शब्द हमारे लिए आकर्षक थे, भव्य थे लेकिन बहुत विच्छिन्न और असंलग्न। हम उनके और जागतिक सिद्धान्तों के पारस्परिक संबंध को नहीं समझते थे—समझने की शक्ति हम में नहीं थी, फिर भी हम आपस में इनकी असम्बद्ध आलोचना करते और उन्हें समझने की कोशिश करते थे। रूडिन की बातों को सुनते ही हमें ऐसा लगा कि उनका पारस्परिक संबंध हमारे निकट स्पष्ट हो गया है तथा उनके ऊपर का वह पर्दा हट गया है। हलाँकि वह मौलिक कुछ नहीं कहता था, लेकिन इससे क्या! हम ने जो-कुछ जाना था उसका एक क्रमबद्ध रूप गठित हो गया, जो यहाँ-वहाँ बिखेरा पड़ा था, एकाएक एकत्र होकर एक नवीन भाव-सौध का निर्माण हुआ, सब-कुछ का सूक्ष्मातिसूक्ष्म अंश भी रोशन हो उठा, 'असंभव' शब्द मृत और जड़ होकर रह गया. युक्तिसंगत रूप और सौंदर्य सर्वत्र दिखाई पड़ा, सब-कुछ स्पष्ट और आलोकग्राही हो उठा, जीवन की प्रत्येक घटना के साथ प्रत्येक घटना का संबंध स्थापित हो गया। एक प्रकार की पवित्र भीति और मधुर आवेग का अनुभव हुआ। हम अपने को जीवित आधार समझने लगे। ऐसा लगा, किसी महान कारण को पूर्ण करने के लिए हम शाश्वत सत्य के परिवाहक हैं! ये बातें तुम्हें अजीब सी नहीं लग रही हैं?"

—"नहीं!" पावलोवना ने धीरे-धीरे उत्तर दिया। "क्यों ऐसा लगेगा? आपकी सभी बातों को नहीं समझ सकी लेकिन वे अजीब-सी तो नहीं लगीं।"

लेझेनोव कहता गया, "उसके बाद हम अधिक अनुभवी हुए।

और, अब वह-सब-कुछ लड़कपन सा लगता है। लेकिन, फिर कहता हूँ, इसलिए उस समय हम रूडिन के निकट बहुत-कुछ ऋणी थे। पोकोरस्की सभी संशयों से अतीत और उससे अधिक महान था। उसीने हमारे अन्दर साहस और तेज फूँक दिया लेकिन अधिक समय वह उदासीन और मौन रहता था। उसके मन में ओजः था प्रचुर परिमाण में लेकिन उसका शरीर था दुर्बल परंतु जब वह अपना पंख फैला देता उस समय नील नभ के उच्चतम स्तर को पहुँच जाता था। परन्तु रूडिन, वह देखने में सुन्दर और सुपुरुष था लेकिन सभी प्रकार की नीचताओं से पूर्ण। वह स्वयं बातों का एक बतंगड़ था तथा हर काम में हस्तक्षेप करने और उसे सजा-धजा कर विश्लेषित करने की ऐकांतिक प्रवृत्ति उसमें थी। इस प्रकार उसके कामों तथा जिम्मेदारियों की कोई सीमा न थी। वह स्वभाव से एक कूटनीतिज्ञ था। वह उस समय जिस प्रकार था उसीकी वर्णना कर रहा हूँ। दुर्भाग्य से न उसमें आज भी विशेष परिवर्तन आया और न उसका मतवाद ही परिवर्तित हुआ—पैंतीस वर्ष की आयु में उपनीत होकर भी। लेकिन सभी इस संबंध में कुछ नहीं कह सकते।"

—"बैठ जाइये।" पावलोवना ने कहा, "आपकी जल्दी-जल्दी चहलकदमी को देखते-देखते मेरा सिर चकराने लगा है।"

—"मुझे यह अच्छा लगता है।" लेभेनोव बोला, "उसके बाद संयोग से पोकोरस्की की मंडली का ही एक बन गया। उस समय मेरी दशा कैसी हुई कह रहा हूँ, मानो मुझे नया जनम मिला। मैं धीरे-धीरे विनयी, अनुसंधित्सु, अध्ययन-प्रिय, सुखी और श्रद्धासंपन्न हो उठा। ऐसा लगा कि मैं किसी पवित्र कार्य में नियुक्त हो गया हूँ। सचमुच, जब उन दिनों की बैठकों और सम्मेलनों की बात याद आती है उस समय अपने समक्ष यह मानना ही पड़ता

है कि उनमें बहुत कुछ सौंदर्य था, हृदयग्राह्य था। जरा अपने मनमें इसकी कल्पना तो कीजिये, एक मोमबत्ती को घेर कर चार-पाँच तरुण बैठे-बैठे कड़ी चाय और स्वादहीन दोबारा तपायी गयी रोटी के टुकड़े खा रहे हैं! लेकिन, अगर आप उस समय हमारे मुख की तरफ देखतीं और हमारी बातों को सुनतीं! हरेक की आँखें उत्साह से जल रही हैं, हरेक के गाल तमतमा उठे हैं और हरेक दिल इस प्रकार से धड़क रहा है कि ईश्वर के संबंध में अथवा, सत्य, काव्य और भविष्य के संबंध में चर्चाएँ चल रही हैं। यदि हमारी आलोचनाएँ कुछ देर के लिए बेतुकी और बेकार की हो जाती हैं तो क्या हुआ। जो हो, पोकोरस्की उस समय पाँव पर पाँव धर कर अपना विवर्ण गाल हथेली पर रख कर बैठा रहता और उसकी आँखों से अपूर्व ज्योति-छटा निर्गत होती। रूडिन घर के बीचोबीच खड़े होकर जो कुछ कहना होता, कहता—भलीभाँति कहता, उस समय ऐसा लगता कि तरुण डेमोस्थिनिस उमड़ते हुए सागर के किनारे खड़े होकर समस्त संसार के लिए बोल रहा हो। परिपाटीहीन कवि स्टाबोटीन बीच-बीच में अचानक कुछ बोल उठता था जिस प्रकार एकाएक नींद से उठा हुआ आदमी बड़बड़ा उठता है। हमारा वयस्क साथी शिलर जो एक जर्मन पादरी का पुत्र था और जिसकी निरन्तर मौनता ने उसे उच्चकोटि के भावुक होने का सम्मान दिया था, चुपचाप बैठ कर साग्रह रूडिन की बातों को सुनता था और हँसमुख सीतोव जो हमारी मंडली का एरिस्टोफेनस था उसकी बातों को सुन कर उसका बड़प्पन मान लेता था और उसकी खुशी से हँसता था। दो-तीन नवागंतुक उसकी बातों को सानन्द और साग्रह निगलते थे। चुपके से चोरी-चोरी रात बीत जाती थी मानो उसे पंख लग गये थे। उसके बाद आता धूमिल सवेरा और हम एक दूसरे से अलग होते। उस समय हमारा हृदय

रहता था विचलित, सुखी, सरल और शांत तथा हम विशेष प्रकार की शांतिमयी क्रांति की मिठासपूर्ण अनुभूति अपने में पाते थे। अब भी अपने मानस-नेत्रों के सम्मुख देखता हूँ, मैं एकाकी सुनसान सड़कों पर चल रहा हूँ—हृदय विचलित—एक नवीन विश्वास से दृष्टि उठा कर आकाश के तारों को देखता हुआ चला जा रहा हूँ—ऐसा लग रहा है, वे मेरे निकट आ गये हैं अब मैं उन्हें निकट से समझ सकूँगा ! आह। वह समय कितना मधुर था; मैं किसी भी मूल्य पर नहीं मान सकता कि वे दिन बीत चुके हैं—उनके लिए भी नहीं जिनका जीवन पतन के मार्ग पर बढ़ता गया। कितनी ही बार वैसे लोगों से—मेरे पुराने साथियों से मुलाकात हुई है जो पशुत्व के स्तर को पहुँच चुके हैं लेकिन आज भी पोकोरस्की का नाम सुनते ही उनके हृदय की सुप्त सुकुमार वृत्ति का क्षीण अवशेष जाग उठता है जैसे एक धूलि-मलिन अँधेरे घर में एक भूली हुई इत्र की शीशी का काग खुल गया हो।"

लेझेनोव निरव हो गया, उसका वर्णहीन मुखमंडल तमतमा उठा।

—"लेकिन कब और क्यों आप रूडिन से झगड़ पड़े थे ?" पावलोवना ने विस्मित नेत्रों से उसकी तरफ देखते हुए पूछा।

—"मैं उससे झगड़ नहीं पड़ा था केवल उससे दूर हो गया जब विदेश में उसे अच्छी तरह जान सका कि वह वास्तव में क्या था। यद्यपि इसके पहले मास्को में रहते समय ही उससे झगड़ पड़ने का प्रत्येक कारण मौजूद था क्योंकि उसने मुझ पर बहुत ही नीच चाल चली थी।"

—"वह चाल क्या थी ?"

—"वह चाल ? लेकिन आपके सामने कैसे कहूँ ? मैं उसके

योग्य नहीं दिखाई पड़ता फिर भी मैं बहुत जल्दी प्रेम करने लगता था।"

—"आप ?"

—"हाँ। क्या यह अद्‌भुत लग रहा है ? लेकिन बात ऐसी ही थी। जो हो, मैं एक सुन्दरी तरुणी के प्रेम में फँस चुका था—आप मेरी तरफ इस प्रकार क्यों देख रही हैं ? मैं आपसे अपने बारे में इससे भी आश्चर्यजनक बातें सुना सकता हूँ !"

—"क्या मैं वे सब सुन सकती हूँ ?"

—"हाँ। बात कुछ ऐसी थी। उन दिनों मास्को में रहते समय मैं उससे एक गुप्त स्थान में मिलित होता था, किससे यह तो समझ रही होंगी, बगीचे के अंतिम छोर पर एक तरुण लाइम वृक्ष के साथ। मैं उसकी तरुण और ऋजु डाली से आलिंगन करता और मुझे ऐसा लगता कि मैं संपूर्ण प्रकृति को अपने बाहु-बंधन में जकड़ चुका हूँ। मेरा हृदय फूल उठता, झंकृत हो उठता और ऐसा लगता की प्रकृति की समस्त मधुरता उससे टपक रही हो। ऐसा अद्‌भुत मैं था। केवल यही नहीं। संभवतः आप सोच रही हैं कि मैं कविता लिखता था या नहीं ? हाँ, मैं कविता जरूर लिखता था। यहाँ तक कि मैंने मैनफ्रेड के अनुकरण में एक नाटक भी लिख डाला था। उस नाटक के चरित्रों में एक दानव का भी चरित्र था जिसके वक्ष पर खून की निशानी थी, उसके अपने खून की नहीं बल्कि मानवता के खून की। हाँ ! लेकिन इसमें विस्मित होने की क्या बात है ? जो हो, मैं आपको एक प्रेम-कहानी सुना रहा हूँ। मुझसे एक लड़की का परिचय हुआ—।"

—"और आपने लाइम वृक्ष से चोरी-चोरी मिलना छोड़ दिया ?"

—"हाँ ! वह लड़की बहुत ही कोमलप्राणा और अच्छी थी,

उसकी आँखें उज्ज्वल और चमकीली थीं तथा उसका कंठस्वर बहुत ही मीठा था।"

—"आपने उस लड़की की बड़ी अच्छी वर्णना दी।" पावलोवना अद्भुत हँसी हँस कर बोली।

—"सचमुच आप बहुत ही कठिन समालोचक हैं।" लेझेनोव बोला, "जो हो, वह लड़की अपने बूढ़े बाप के पास रहती थी। मैं विस्तार-सहित सब-कुछ नहीं कहूँगा केवल इतना ही कहूँगा कि वह लड़की सचमुच दयालु थी, इतनी दयालु कि आधा गिलास चाय माँगने पर तीन-चौथाई गिलास भर कर देती थी। उससे पहली मुलाकात के तीन दिन बाद ही मैं उसके लिए पागल हो उठा और सातवें दिन तक अपने को रोक न सका—रूडिन के सामने दिल की बातें खोल कर कह गया। सचमुच नौजवानों के लिए अपना प्यार छिपा कर रखना असंभव होता है और मैं हमेशा रूडिन के सामने ही अपने को हलका करता था। उस समय मैं पूर्णतया रूडिन से प्रभावित था और उसके प्रभाव ने एक नहीं, कई प्रकारों से मेरा फायदा ही पहुँचाया था। वही पहला आदमी था जिसने मुझसे घृणा नहीं की बल्कि मुझे एक सच्चा इंसान बनाना चाहा। मैं पोकोरस्की को पूजता था उसकी हार्दिक पवित्रता के लिए मेरे मन में श्रद्धा थी परंतु रूडिन के साथ मेरा एक दृढ़ संपर्क स्थापित हो गया था। जब उसने मेरे प्रेम के बारे में सुना उसने मुझे अनिर्वचनीय उत्साह से थाम लिया, अभिनंदित किया, मुझे गले से लगा लिया और मेरी नवीन मर्यादा के संबंध में मुझे तुरंत शिक्षित और सचेतन करने लग गया। मैं असीम आग्रह से उसकी बातों को सुनता गया। लेकिन आप तो जानती हैं बातें करने में वह कितना तेज है। उसकी बातों का मेरे ऊपर असाधारण प्रभाव पड़ा। अपने ही सामने मेरी प्रतिष्ठा आश्चर्यजनक रूप से

बढ़ गयी, मैं गंभीर हो उठा—इतना गंभीर कि हँसना ही भूल गया। मैं इस सावधानी से अपने को ले कर चलने-फिरने लगा जैसे कि मेरे अंदर सुधा से परिपूर्ण एक पात्र रखा है और मैं डरने लगा कहीं वह लुढ़क न जाय! सचमुच मैं उस समय बहुत ही सुखी हो उठा जब देखा वह लड़की विशेष अनुग्रह की दृष्टि से मुझे देखती है। रूडिन ने मेरी प्रणयिनी से परिचित होना चाहा, मैं समझता हूँ, मैंने ही उसे उससे परिचित कराना चाहा।"

—"अच्छा! अब मैं सब समझ गयी।" पावलोवना बीच में बोल पड़ी, "रूडिन ने आपकी प्रेयसी को आपसे छीन लिया और उसी लिए आप उसे आज भी क्षमा नहीं कर सकते। मैं दावे के साथ कहती हूँ, ठीक ही समझ सकी।"

—"हार जायेंगी। आप भूल कर रही हैं। रूडिन ने न तो मुझसे मेरी प्रणयिनी छिनी और न इसकी इच्छा ही उसे थी। उसने मेरे सभी सुखों का अंत कर दिया लेकिन आज ठंढे दिमाग से सब-कुछ सोच कर उसे धन्यवाद देने को तैयार हूँ। परंतु उस समय मैं पागल-सा हो उठा था। रूडिन ने मुझे बिंदुमात्र भी दुःख देना नहीं चाहा, उसने इसके विपरीत कुछ चाहा था। तितलियों को जिस प्रकार बकसे के भीतर पीन से अटकाने की आदत लोगों में होती है उसी प्रकार प्रत्येक आवेग को चाहे वह उसका अपना हो या दूसरे का, वह उन्हें अपनी विशेष आदत के कारण हमारे में अटकाना चाहता था, वह बलात् हमारे पारस्परिक संबंध को और हमारे पारस्परिक आवश्यक बर्तावों को पूरी स्वेच्छाचारिता से विश्लेषित करता तथा हमारी भावनाओं और कल्पनाओं की व्याख्या करता था। वह हमारी प्रशंसा करता, समालोचना करता और जब उस पर सनक सवार होती तब हमारे साथ पत्र-व्यवहार भी करता था। अंत तक वह हमारे में गड़बड़ी पैदा करने में समर्थ

हुआ ! शायद ही मैं उस तरुणी से शादी करता क्योंकि उतनी विवेचना मुझ में थी, लेकिन हम कुछ महीने तो हँसी-खुशी से एक साथ बिता सकते । जो हो, हम आकुल हो कर तड़फड़ाने लगे और हमारे बीच का संबंध खिंचाव-तनाव के कारण प्रयास-साध्य हो उठा। सचमुच वह स्थिति कितनी भयानक थी। और, उसका अंत हुआ रूडिन के द्वारा; एक सुंदर प्रातःकाल को उसने स्वयं-प्रेरित हो कर मुझ से आ कहा कि एक मित्र होने के नाते उसका यह कर्तव्य है कि उस लड़की के वृद्ध पिता के निकट सब-कुछ खोल कर कह देना और, उसने वैसा किया भी।"

—"किया ?" पावलोवना चिल्ला उठी।

—"हाँ। और देखिये, वह भी मेरी सम्मति ले कर, यही तो सब से आश्चर्य का विषय था। मुझे आज भी याद है उस समय मेरे दिमाग की कैसी गड़बड़ीपूर्ण स्थिति थी ! मेरी आँखों के सामने दुनिया घूमने लगी थी, अस्थिर हो उठी थी जिस प्रकार कैमरे की अस्पष्ट तस्वीर में सफेद काला और काला सफेद दिखाई पड़ता है। जो मिथ्या था वह सत्य जान पड़ा और कल्पना कर्तव्य के रूप में दिखाई पड़ी। आह ! उन दिनों की स्मृतिँ आज भी मुझे चंचल बना देती है। परंतु रूडिन श्रांत नहीं हुआ—कभी भी नहीं। सभी प्रकार के संशयों और विभेदों के भीतर से वह उड़ता हुआ चला जाता जिस प्रकार अबाबील ताल के ऊपर से उड़ती हुई चली जाती।"

—"और इस प्रकार आप उस लड़की से अलग हो गये ?" पावलोवना ने अपने सुंदर मस्तक को लज्जा से एक तरफ इषत् झुका कर अपनी भौंहो को उठाया और कहा।

—"हाँ, हम एक दूसरे से बिछुड़ गये—कितना दर्दभरा था वह बिछुड़ना—कितना विसदृश, कितना आवरणहीन, आवश्यक

रूप से आवरणहीन। मैं रोया, वह रोयी, फिर हमारे बीच कैसी-कैसी बातें हुईं कह नहीं सकता। हमें एक कड़ी गाँठ खोलनी पड़ी। दर्दनाक था वह काम, लेकिन करना पड़ा। जो हो, संसार की हर बुराई में भलाई छिपी हुई होती है। उसकी शादी एक धनी युवक से हो गयी और वह सुखी ही है।"

—"लेकिन आप को मानना ही पड़ेगा कि आप अभी तक रूडिन को क्षमा न कर सके।" पावलोवना ने कुछ कहना चाहा।

—"नहीं!" लेभेनाव ने उसे रोक दिया और कहा, "क्यों? रूडिन जब विदेश को गया मैं एक शिशु के समान रोने लगा। लेकिन मेरे हृदय में उसका बीज उसी समय बो गया था। जब विदेश में उसके साथ साक्षात् हुआ उस समय मेरी उम्र अधिक थी और रूडिन को उसके सच्चे रूप में देख सका।"

—"आपने उनमें क्या आविष्कार किया?"

—"वही, जो घंटे भर पहले कहा। लेकिन उसके संबंध में काफी आलोचना हुई, शायद अब सब कुछ ठीक हो जायगा। मैंने केवल आपको इतना बताना चाहा कि अगर उसकी कटु समालोचना मैं करता हूँ तो वह उसको न समझने के कारण नहीं। नातालिया के संबंध में मैं कुछ आगे नहीं कहना चाहता, आप केवल अपने भाई साहब की तरफ थोड़ी निगाह रखियेगा!"

—"क्यों?"

—"क्यों! आप उसकी तरफ एक बार अच्छी तरह देखिये। क्या आप ने अब तक उसमें कुछ नहीं देखा?"

पावलोवना ने अपनी आँखें नीची कर लीं।

—"आप ठीक कह रहे हैं।" वह धीरे से बोली, "हाँ, वे कुछ दिन से खोये हुए से हैं। लेकिन आप क्या सचमुच समझते हैं—?"

—"चुप। शायद वह आ रहा है।" लेभेनाव ने मृदु स्वर में

कहा, "और नातालिया, विश्वास कीजिये, अब बच्ची नहीं रही, लेकिन दुर्भाग्य से अनुभवहीन है। मैं कहता हूँ सुन लीजिये, एक दिन वह लड़की जरूर हम लोगों को हैरत में डालेगी।"

—"कैसे ?"

—"आप नहीं जानतीं ऐसी ही लड़कियाँ पानी में डूब कर अथवा जहर खा कर आत्महत्या करती हैं। आप उसकी भोली आँखों को देख कर भूलिये नहीं, उसका स्वभाव बहुत ही भावप्रवण है।"

—"समझी ! आप तो कवियों की सी उड़ती हुई कल्पना करने लगे। मैं समझती हूँ आप जैसे शीतल प्रकृति के मनुष्य के सामने मैं ही ज्वालामुखी की भाँति प्रतीत हो सकती।"

—"नहीं, नहीं !" लेझनोव ने मुस्कुरा कर कहा, "चरित्रसंपर्कित यदि कुछ कहना पड़े तो आप में कुछ कहने लायक है ही नहीं। इसलिए ईश्वर को धन्यवाद दीजिये !"

—"यह किस प्रकार की शिष्टता हुई ?"

—"नहीं, बात मानिये, यह आपका सबसे बड़ा अभिनंदन हुआ।"

वोलीनस्टेव ने घर के भीतर आकर संशयपूर्ण दृष्टि से अपनी बहन को और लेझनोव को देखा। वह पहले से दुबला दिखाई पड़ा। पावलोवना और लेझनोव ने एक साथ उसे संबोधित किया, परंतु वह उसके उत्तर में उनकी तरफ देखते हुए धीरे-धीरे हँसने लगा, पिगासोव ने ऐसी हँसी के संबंध में कभी कहा था एक डरे हुए खरगोश की हँसी। लेकिन संसार में कौन ऐसा है जो अपने जीवन में कभी विषण्ण न दिखाई पड़ा हो। वोलीनस्टेव को उस समय ऐसा लग रहा था कि नातालिया उससे दूर चली जा रही है और पाँवों के नीचे से धरती खिसक रही है।

रूडिन—७

दूसरे दिन रविवार था। नातालिया कुछ देर से उठी। शनिवार के दिन नातालिया अधिकतर समय चुपचाप थी। वह अपने आँसुओं के कारण मन ही मन लज्जित थी, फिर नींद भी अच्छी तरह हुई नहीं। उसने अपनी साज-सज्जा मामूली तौर से की और अपने छोटे पियानो के सामने जा कर बैठ गयी। उसने बहुत धीरे-धीरे दो-एक सुर बजाए ताकि कुमारी बोनकोर्ट की नींद न टूटने पाए। उसके बाद वह पियानो की ठंढी चाभियों पर ललाट रख कर बहुत देर तक निश्चल पड़ी रही। वह सोचने लगी, तल्लीन हो कर सोचने लगी, स्वयं रूडिन के बारे में नहीं बल्कि उसने जो कुछ कहा है उसके बारे में। वोलीनस्टेव की मुख-छवि भी बार-बार उसके मानस-नेत्रों के सामने उद्भासित होने लगी। वह जानती थी कि वह उससे प्यार करता है परंतु वह उसे हमेशा अपने मन से अलग करती गयी। वह एक अपरिचित उत्तेजना के वश में हो गयी।

काफी देर बाद उसने उठ कर अपना पोशाक बदला और नीचे गयी, वहाँ अपनी माँ का शीघ्रता से अभिवादन कर अकेली ही बगीचे में टहलने के लिए गयी। पानी बरसाने के लिए घटाएँ बार-बार घिर आयीं फिर भी दिन रौद्र-दीप्त और उज्वल रहा। दिन भर गर्मी भी काफी रही। कुहरे के समान हलके बादल स्वच्छ आकाश के निचले भाग से तेजी से आने-जाने लगे पर उससे सूर्य का तेज मंद नहीं पड़ा। खेतों पर दो-एक बार पानी की दो-चार बौछारें भी अचानक झड़ पड़ीं। बड़ी-बड़ी चमकती हुई पानी की

बूदों के पृथ्वी पर पड़ने से अजीब किस्म की खरखराहट की आवाज हुई जैसे हीरे के टुकड़े बरस रहे हों। पानी की बूँदों की झिलमिली में से सूरज अधिक चमकने लगा। हवा के झोंकों से काँपती हुई लंबी-लंबी घासें पिपासार्त हो कर आर्द्रता पान कर रही थीं। वर्षा के जल से धोये हुए वृक्षों की पत्तियाँ मानो क्लांत होकर काँपने लगीं। चिड़ियाँ अविराम चहक रही थीं। उनका उच्छ्वसित निर्भीक कल कूजन वारि-वर्षण की मृदु कलध्वनि और मधुर रोल के साथ एकात्म हो कर और भी आनन्ददायक हो उठा। धूलिबहुल पथों से भाप निकलने लगी और चारों तरफ धूलि पर जलबिंदुओं के द्रुत पतन के चिह्न अंकित हो गये। दूसरे ही क्षण आकाश मेघ-मुक्त हो गया, हवाएँ सरसाने लगीं, घासें नीली-सुनहली छटाओं को पा कर चमकने लगीं। पत्तियाँ भींग कर मानो आपस में लिपट गयीं. डालियों में से छन कर सूरज की किरणें धरती पर आने लगीं। हवाओं में एक सुमधुर गंध आ गयी।

नातालिया जब बगीचे में गयी उस समय आकाश प्रायः मेघ-मुक्त हो चुका था। आकाश के कोने-कोने में मानो शांति और सजीवता भर गयी—वह शांति और सजीवता जो मानव-मन में छिपी सहानुभूति और अदृश्य वासना की मधुर क्रांति ला देती है।

नातालिया तालाब के किनारे-किनारे चलने लगी, पथ के दोनों बगल रूपहली 'पापलर' के पेड़ थे। एकाएक धरती में से निकलने की भाँति रूडिन नातालिया के सामने आकर खड़ा हो गया।

नातालिया कुछ विस्मित हुई। रूडिन ने उसके मुख की तरफ देखा।

—"तुम अकेली हो ?" रूडिन ने पूछा।

—"हाँ, अकेली हूँ।" नातालिया ने उत्तर दिया। "लेकिन केवल एक मिनट के लिए बाहर आयी थी। मुझे अभी लौट चलना है।"

—" मैं तुम्हारे साथ चलूँगा !"

वह नातालिया के आसपास चलने लगा।

—"आज तुम परेशान नजर आ रही हो।" रूडिन ने धीरे-धीरे कहा।

—"मैं ? लेकिन मैं तो अभी कहने जा रही थी कि आप ही परेशान नजर आ रहे हैं।"

—"हो सकता है—मुझे अक्सर ऐसा होता है। मेरे लिए यह साधारण सी बात है लेकिन तुम्हारे लिए नहीं।"

—"क्यों ? क्या आप समझते हैं, मेरे लिए दुःखित होने का कोई कारण नहीं हो सकता ?"

—"तुम्हारी उम्र में किसी को भी जीवन का आनन्द उठाना चाहिए।"

नातालिया बोली नहीं, दो-चार कदम चुपचाप आगे बढ़ गयी।

—"द्मित्री नीकोलेवीच !"

—"क्या ?"

—"याद है आपको, पिछले दिन आपने किसी की तुलना 'ओक' के पेड़ से की थी ?"

—"हाँ है। लेकिन उससे क्या ?"

रूडिन के अनजाने में नातालिया ने एक बार उसकी तरफ देखा।

—"आपने वैसी तुलना क्यों की थी—आप उससे क्या समझाना चाहते थे ?"

रूडिन ने मस्तक नीचा किया और बहुत दूरी पर कुछ देखने लगा।

—"नातालिया !" उसने अपने अद्भुत संयत और अर्थपूर्ण ढंग से कहना प्रारंभ किया जो श्रोताओं को इसका अनुमान करने को बाध्य करता है कि वह अपने हृदय-भार का दसवाँ हिस्सा भी

हलका नहीं कर रहा है। वह कहता गया, "तुमने देखा है कि मैं अपने अतीत के बारे में प्रायः कुछ कहता ही नहीं। कुछ ऐसी हृदय-तंत्रियाँ हैं जिन्हें मैं छूता ही नहीं। मेरा हृदय—वहाँ क्या हो रहा है, कौन जानना आवश्यक समझेगा। सबको दिखाने के लिए उसे बाहर खींच कर दिखाने को मैं अपमान समझता हूँ। लेकिन मैं तुम्हारे निकट उन्मुक्त हो सकता हूँ—तुमने मेरे विश्वास को प्रोत्साहित किया है। मैं तुम्हारे निकट यह नहीं छिपा सकता कि मैंने भी औरों के समान प्यार किया है और प्यार करके दुःख उठाया है। कब और कैसे ? यह सुन कर क्या होगा ! लेकिन बहुत से दुःखों और सुखों से मेरे हृदय का परिचय हो चुका है।"

रूडिन एक क्षण के लिए चुप हो गया, फिर कहने लगा, "मैंने कल जो कहा था वह कुछ सीमा तक मेरे ऊपर प्रयोज्य हो सकता है मेरी वर्तमान दशा में। लेकिन उसके विषय में पुनः कुछ कहना अनावश्यक है। जीवन की कोई भी स्थिति मेरे लिए अधिक स्थायी नहीं होती। मेरे लिए जो कुछ है वह है धूप से तपी और गर्द से भरी सड़क पर जीवन की भारी गाड़ी को एक स्थिति से दूसरी स्थिति तक खींच ले जाना। मेरे जीवन के लक्ष्य को कब पहुँचूँगा—अंत तक पहुँच पाऊँगा कि नहीं, ईश्वर ही जानते हैं।—छोड़ो इन सब को, आओ हम तुम्हारे बारे में बातें करें।"

—"क्या ऐसा हो सकता है, दमित्री नीकोलेवीच", नातालिया ने उसे रोक कर कहा, "कि आप इस जीवन से कुछ भी आशा नहीं करते ?"

—"नहीं, नहीं। मैं तो बहुत-कुछ आशा करता हूँ, पर अपने लिए नहीं ! कार्यकारिता अथवा उससे प्राप्त सुख को मैं नहीं भूल सकता, परंतु सुख को मैं भूल चुका हूँ। मेरे अरमानों, सपनों और सुखों में कुछ है नहीं। प्रेम—" रूडिन ने इस शब्द का

उच्चारण कर अपने कंधों को झकझोरा। "प्रेम मेरे लिए नहीं है—मैं उसके योग्य नहीं। जो नारी प्रेम करती है उसे अपने प्रियतम को पूर्ण रूप से पाने का अधिकार है लेकिन मैं तो पूर्ण रूप से आत्मसमर्पण नहीं कर सकता। फिर प्रेम को जीत सकता है यौवन; मैं तो बूढ़ा हो चला—मैं कैसे किसी के हृदय में आकर्षण उत्पन्न कर सकता ? अगर ईश्वर की कृपा से अपने को किसी प्रकार सँभाल कर रख सका तो काफी है।"

—"समझ गयी।" नातालिया धीरे-धीरे बोली, "जो एक महान लक्ष्य के पाने के लिए प्राण की बाजी लगाता है वह कब तक अपने बारे में सोच सकेगा ? क्या एक नारी वैसे मनुष्य का आदर नहीं कर सकती ? मेरे ख्याल से अहंकारी लोगों पर ही स्त्रियाँ रुष्ट होती हैं। सभी युवक, आप यौवन की बात कर रहे थे, अहंकारी हैं। जब वे प्यार करते हैं उस समय भी वे अपने को ले कर ही व्यस्त रहते हैं। लेकिन मेरी बात मानिये, स्त्रियाँ केवल आत्मदान का आदर ही करना नहीं जानतीं बल्कि वे स्वयं आत्म-दान करना भी जानती हैं।"

नातालिया के गालों पर गुलाबी राग छा गया, उसकी आँखें उज्ज्वल हो उठीं। रूडिन से परिचय होने के पूर्व वह इतना दीर्घ और आवेगपूर्ण भाषण करना नहीं जानती थी।

रूडिन ने कोमल हँसी हँस कर कहा, "मैं ने तुम से स्त्रियों के जीवन के कर्तव्यों के संबंध में केवल एक ही बार कुछ बताया था। मेरा अभिमत तो तुम जानती ही हो कि एकमात्र 'जोयान-ऑफ-आर्क' ही फ्रांस को बचा सकती थी, परंतु मेरे कथन का लक्ष्य यह नहीं है। मैं ने तुम्हारे संबंध में कुछ कहना चाहा था। अभी तुम जीवन के द्वार पर खड़ी हो, तुम्हारे भविष्य-जीवन के संबंध में आलोचना करना जितना आनंददायक है तुम्हारे लिए उतना लाभ-

दायक भी। सुनो, मैं तुम्हारा मित्र हूँ, एक भाई के समान ही तुम्हारे बारे में यत्न लेता हूँ। इसलिए मेरे इस प्रश्न को तुम युक्तिहीन नहीं समझोगी। कहो, तुम्हारा हृदय पूर्णतया मुक्त है ?"

नातालिया के अंग-अंग सिहर उठे। उसने कुछ कहा नहीं। रूडिन रुक गया, नातालिया भी चुपचाप खड़ी हो गयी।

—"क्या मुझसे नाराज हो गयी ?" रूडिन ने पूछा।

—"नहीं।" नातालिया ने उत्तर दिया, "लेकिन ऐसी आशा नहीं की थी।"

—"जो हो।" रूडिन कहता गया, "तुम्हें इसका जवाब देने की आवश्यकता नहीं, मैं तुम्हारे मन की बातों को जानता हूँ।"

नातालिया चकित-दृष्टि से उसे देखती रही।

—हाँ, हाँ। मैं जानता हूँ वे कौन हैं। मैं यह भी कहूँगा कि तुम इससे श्रेष्ठतर मनोनयन नहीं कर सकती थी। वे बहुत ही अच्छे आदमी हैं। वे तुम्हारा आदर कर सकेंगे, जीवन ने उन्हें पंगु नहीं बनाया, उनकी आत्मा सरल और उज्ज्वल है। वे तुमको सुखी कर सकेंगे।"

—"आप किसकी बात कर रहे हैं ड्रमिट्री नीकोलेवीच ?"

—"ऐसा लगता है, तुम कुछ भी नहीं जानती। मैं वोलीनस्टेव की बात कर रहा हूँ क्या मैं ने ठीक नहीं कहा ?

नातालिया ने अपना मुख फेर लिया। वह अति मात्रा में विस्मित हो गयी थी।

—"क्या वे तुमसे प्यार नहीं करते ? बोलो ! वे तुमसे अपनी आँखें अलग नहीं कर सकते ! उनकी आँखें हर समय तुम्हारा ही अनुसरण करती हैं। क्या इससे किसीका प्रेम छिप सकता है ? तुम्हारी माँ को देख कर भी ऐसा लगता है कि वे उनका ही समर्थन करती हैं। अब रही तुम्हारी बात—।"

—"डूमिट्री नीकोलेवीच !" नातालिया धीरे-धीरे बोली। उसने अपनी घवड़ाहट को छिपाने के लिए पास की झाड़ी की तरफ हाथ बढ़ाया। "सचमुच इसके संबंध में कुछ कहना मेरे लिए कठिन है। लेकिन, फिर भी आप भूल कर रहे हैं।"

—"तुम कहती हो, मैं भूल कर रहा हूँ।" रूडिन ने दोहराया, "लेकिन मुझे ऐसा नहीं लगता। मैं तुम्हें बहुत दिनों से नहीं जानता, फिर भी तुम्हें अच्छी तरह जानता हूँ। फिर यह अद्भुत परिवर्तन जो तुम्हारे में देख रहा हूँ इसका क्या कारण है ? डेढ़ महीने पहले तुम जैसी थी अब तो वैसी नहीं हो। नहीं नातालिया, तुम्हारा हृदय मुक्त नहीं है।"

—"संभवतः।" नातालिया ने बहुत धीरे कहा कि सुनाई नहीं पड़ा। "लेकिन फिर भी आप निस्संदेह भूल कर रहे हैं।"

—"लेकिन यह कैसे संभव ?" रूडिन ने पूछा।

—"मुझे जाने दीजिये। दया कीजिये, मुझसे इस बारे कुछ न पूछिये।" वह शीघ्रता से घर की तरफ बढ़ने लगी। एका-एक जो भावावेग उसके हृदय में जाग उठा उससे वह मन ही मन भीत हो उठी।

रूडिन ने आगे बढ़ कर उसे रोक लिया। उसने नातालिया से प्रार्थनापूर्ण स्वर में कहा, "नातालिया ! यह वार्तालाप इस प्रकार अंत नहीं हो सकता। यह मेरे लिए भी उतना ही प्रयोजनीय है नहीं तो मैं कैसे तुम्हें समझ सकूँगा।"

—"मुझे जाने दीजिये !" नातालिया ने पुनः कहा।

—"नातालिया ! ईश्वर के नाम पर तुम्हें बताना ही पड़ेगा ?" रूडिन की हार्दिक उत्तेजना उसके मुखमंडल पर प्रकट हुई। वह फीका दिखाई पड़ा।

—"आप सब-कुछ समझते हैं, आपने मुझे भी समझा

होगा !" नातालिया बोली। उसने अपना हाथ छुड़ा लिया और किसी तरफ दृक्पात किये बिना जाने लगी।

—"केवल एक बात—!" रूडिन ने पुकार कर कहा।

नातालिया रुकी, पर घूम कर उसने देखा नहीं।

—"पिछले दिन मैं ने जो उपमा दी थी उसका क्या तात्पर्य है तुमने पूछा था। आज मैं उसका तात्पर्य तुम्हें बताऊँगा। हमारे बीच कोई गलतफहमी नहीं रहनी चाहिये। मैं ने उस समय अपने बारे में कहा था—तुम्हारे बारे में कहा था।"

—"मेरे बारे में ! क्या ?"

—'हाँ तुम्हारे बारे में। फिर कहता हूँ, मैं कोई गलतफहमी उत्पन्न करना नहीं चाहता, अब तुम समझ रही हो किस अनुभूति —किस नवीन अनुभूति के बारे में मैं कह रहा था जिसे प्रकट कर कहने का साहस आज भी मेरे में नहीं था।"

नातालिया ने सहसा हाथों से अपना मुख आच्छादित कर लिया और दौड़ती हुई घर की तरफ चली गयी।

रूडिन के साथ वार्तालाप की इस अप्रत्याशित सीमा को पहुँच कर वह इतनी विस्मित और विचलित हुई कि वह वोलीनस्टेव की बगल से दौड़ती हुई निकल गयी पर उसने उसे एक क्षण के लिए देखा भी नहीं। वोलीनस्टेव एक वृक्ष के सहारे चुपचाप खड़ा था। पंद्रह मिनट पहले वह मैदम लासुनस्काया के घर आया था और गृहकर्त्री को बैठने के कमरे में अकेली देख उससे दो-चार बातें कर के ही नातालिया को ढूँढ़ने निकल पड़ा। वह एक प्रेमिक की सहज बुद्धि के द्वारा परिचालित हो कर सीधे बगीचे में आया और उन लोगों के सम्मुख ठीक उसी समय उपनीत हुआ जब नातालिया ने रूडिन के हाथों से अपना हाथ खींच लिया। वोलीनस्टेव की आँखों के सामने संसार अंधकारमय दिखाई पड़ा।

उसने एक बार नातालिया को देख लिया फिर अपने स्थान से यों ही दो-चार कदम आगे बढ़ आया। रूडिन ने उसके पास पहुँच कर ही उसे देखा। उनकी आँखें मिलीं, पारस्परिक अभिवादन के बाद वे दो दिशाओं में चलने लगे।

दोनों ही अपने मन में सोचने लगे, यहीं इसका अंत नहीं है।

वोलीनस्टेव बगीचे के अंतिम प्रांत तक चला गया। वह अपने को दुःखित और पीड़ित महसूस करने लगा। जैसे, उसके हृदय पर एक प्रकाण्ड भार रखा था। क्षण-क्षण में उसका रक्त क्रोध से चंचल होने लगा। पुनः झींसी बरसने लगी। रूडिन अपने घर में चला गया। वह भी विचलित हो उठा था, उसके दिमाग में विभिन्न चिंताएँ भीषण वेग से चक्कर काटने लगी थीं। शीतल प्रकृति का व्यक्ति भी अप्रत्याशित रूप से तरुण और पवित्र हृदय के निकट संपर्क में आ कर विचलित हो उठता है।

खाने के टेबुल के सामने सब कुछ उलझा हुआ-सा लगा। नातालिया समस्त समय मृतवत् विषण्ण दिखाई पड़ी। वह किसी प्रकार अपने स्थान पर बैठी रही और एक क्षण के लिए भी उसने किसी की तरफ देखा नहीं। और दिनों की भाँति वोलीनस्टेव नातालिया के पास ही बैठा था। वह बलात् नातालिया से कुछ कहने की कोशिश करने लगा। पिगासोव भी निमंत्रित हुआ था, वही सबसे अधिक बोला। बातों ही बातों में उसने अपना मत प्रकट किया कि मनुष्यों दो को वर्गों में विभाजित किया जा सकता है, लंबी दुमवाला और छोटी दुमवाला। मनुष्यों की दुम छोटी हो जाती है या तो उनके जन्मगत कारण से अथवा उनकी अपनी भूलों से। छोटी दुमवाले मनुष्य सचमुच अभागे होते हैं। वे कभी जीवन में सफल नहीं होते क्योंकि वे अपने पर से विश्वास खो देते हैं। केवल भाग्य जिनका साथ देता है उसी

की दुम लंबी और मोटी होती है। वे छोटी दुमवाले मनुष्यों से बुरे हो सकते हैं दुर्बल हो सकते हैं लेकिन वे अपने ऊपर विश्वास रखते हैं। जब अपनी दुम को वे फैलाते हैं तब सभी उनकी प्रशंसा से उच्छ्वसित हो उठते हैं। लेकिन यह तो आप लोग मानेंगे कि यह बड़े ही आश्चर्य की बात है कि यह जो दुम है, शरीर का सबसे अनावश्यक अंग है। दुम में कौन सी अच्छाई है? फिर भी सभी आप का विचार आप की दुम को देख कर ही करेंगे।"

—"मैं स्वयं—" पिगासोव ने दीर्घश्वास छोड़ कर कहा, "एक छोटी दुम का अधिकारी हूँ और सबसे परेशान करनेवाली बात यह है कि मैं ने ही उसे काट कर छोटा किया है।"

रूडिन ने आवश्यक समझ कर कहा, "बहुत पहले ला रोची-फोकल्ड ने जो कहा था आप उसी को भिन्न शब्दों में कहना चाहते हैं कि आप अपने में विश्वास रखिये तो और लोग भी आप पर विश्वास रखेंगे। लेकिन इसमें दुम कहाँ से आ गयी!"

—"हरेक को अपनी इच्छा के अनुसार अपना अभिमत व्यक्त करने का अधिकार है!" वोलीनस्टेव ने तीखे स्वर में कहा, उसकी आँखें चमक उठीं। "आप स्वेच्छाचारिता की बात कर रहे हैं। अगर आप मुझसे पूछते हैं तो मैं कहूँगा तथाकथित बुद्धिमान लोगों की स्वेच्छाचारिता से बढ़ कर बुरी चीज संसार में कुछ और नहीं है। उन्हें खामोश कर देना चाहिये।"

वोलीनस्टेव के सहसा इस प्रकार फट पड़ने से सभी चुप हो गये, उनके विस्मय की कोई सीमा न रही। रूडिन ने वोलीनस्टेव की आँखों की तरफ देखा पर अधिक देर तक उसकी तरफ देख न सका। उसने हँस कर अपना मुँह फेर लिया और एक भी शब्द का उच्चारण नहीं किया।

'वाह ! तुम भी छोटी दुमवाला हो', पिगासोव ने मन ही मन कहा। नातालिया का कलेजा मुँह तक आ गया था। मैदम लासुनस्काया विमूढ़ की भाँति वोलीनस्टेव को देखने लगी। उसी ने सर्वप्रथम निरवता तोड़ी। उसने अपने मित्र मंत्री महोदय के एक असाधारण कुत्ते के संबंध में कहना आरम्भ कर दिया।

भोजन समाप्त होते ही वोलीनस्टेव तुरन्त जाने लगा। नातालिया से विदा माँगते समय वह अपने को रोक न सका, बोला, "तुम इतनी घबड़ाई हुई क्यों नजर आती हो जैसे कि तुम ने कोई दोष किया है। तुम्हें कोई भी दोषी नहीं कह सकता।

नातालिया उसकी बातों को समझ न सकी। जब वोलीनस्टेव जाने लगा तब वह केवल उसकी तरफ देखती रही।

चाय पीने के पहले रूडिन नातालिया के पास गया और उसकी टेबुल पर झुक कर समाचार-पत्र देखने के बहाने बहुत धीरे-धीरे कहने लगा, "यह सब एक स्वप्न के समान लग रहा है, है न ? मैं तुम से एक बार एकांत में मिलना चाहता हूँ, हो सका तो एक मिनट के लिए भी !"

कुमारी बोनकोर्ट की तरफ घूम कर रूडिन ने कहा, "यह है वह निबंध जिसे आप ढूँढ़ रही थीं।"

फिर नातालिया की तरफ घूम कर उससे कहा, "बकायन के झुरमुटों के पास आज दस बजे के समय आने की कोशिश करना, मैं वहाँ तुम्हारी प्रतीक्षा करूँगा।"

रूडिन ने पिगासोव के निकट पराजय मान ली। उस सांध्य बैठक पर पिगासोव का ही आधिपत्य रहा। उसने मैदम लासुनस्काया का यथेष्ठ मनोरंजन किया। पहले उसने अपने एक प्रतिवेशी भार्यावश बूढ़े के बारे में कहा कि वह बूढ़ा इस प्रकार स्त्रीभावापन्न हो उठा था कि छोटे से गड्ढे को पार करते समय भी अपने कोट

को इस ढंग से उठा लेता था जैसे औरतें अपने घाघरे का छोर उठा लेती हैं। उसके बाद उसने एक दूसरे ग्रामीण सज्जन के बारे में बताया कि वह व्यक्ति पहले विश्व-बंधुत्व का समर्थक था और बाद में चित्तोन्माद नामक रोग का शिकार हुआ, अब उसे एक महाजन बनने का इरादा है।

—"विश्व-बन्धु होने के नाते आप करते क्या हैं?" पिगासोव ने एक बार उस व्यक्ति से पूछा था।

उस व्यक्ति ने उसके उत्तर में कहा था, "उसी पुरानी रीति का पालन, अपनी कानी उँगली का नाखून बढ़ा कर रखता हूँ।"

मैदम लासुनस्काया बहुत हँसी जब पिगासोव ने प्रेम के संबंध में अपना अभिमत व्यक्त करते हुए कहा कि उसने भी स्त्रियों में कोमल भावना संचारित की थी और उसे चाहनेवाली किसी जर्मन महिला ने उससे कहा था, 'मेरे अच्छे पिगासोव!' मैदम लासुनस्काया हँसी परन्तु पिगासोव ने कोई झूठ नहीं कहा था। सचमुच उसे अपनी विजयों पर गर्व करने का अधिकार है। उसने यह भी कहा कि किसी भी स्त्री को प्रेम के वश करने से कोई और सरल काम नहीं है। केवल लगातार उस स्त्री से कहना पड़ेगा कि उसके होंठों में स्वर्ग की सुधा है, आँखों में शांति है और दूसरी स्त्रियाँ उसके आगे कुछ भी नहीं हैं। फिर क्या देखना, ग्यारहवें दिन से वह स्वयं इस बात पर विश्वास करने लगेगी कि उसके होंठों में स्वर्ग की सुधा, आँखों में शांति है और वह उस प्रशंसाकारी से प्रेम करने लगेगी। होता भी ऐसा ही है। कौन जानता? पिगासोव ठीक भी तो कह सकता था।

साढ़े नौ बजते ही रूडिन बकायन के झुरमुटों के पास पहुँच गया। आकाश की वर्णहीन गहराइयों में से छोटे-छोटे तारें दिखाई पड़ने लगे थे। पश्चिम दिगंत में उस समय भी लोहितराग

था। आकाश की स्वच्छता और उज्ज्वलता नष्ट नहीं हुई थी। भोजपत्र के वृक्षों की काँपती हुई डालियों की झिलमिली में से आधा चाँद स्वर्णाभ दिखाई पड़ने लगा था। दूसरे बड़े-बड़े वृक्ष अंधकार के दैत्यों के समान दिखाई पड़ रहे थे। उनके कठोर दीर्घ शरीरों के बीच-बीच जो शून्य स्थान थे वे उनकी हजारों आँखों के समान दीख पड़ने लगे। एक भी पत्ता नहीं काँप रहा था। भटकटैया और बकायन के पौधे उष्ण वातावरण में अपनी डालियों को फैला कर मानो सावधानी से कुछ सुन रहे थे। पास का वह मकान अंधकार में अद्भुत दिखाई पड़ने लगा, उसकी बड़ी-बड़ी आलोकोज्ज्वल खिड़कियाँ लाल धब्बों के समान दिखाई पड़ रही थीं। वह संध्या सचमुच शांत और मनोरम थी लेकिन उसकी उस शांति में कोई भी आकुल अनुराग की आर्त ध्वनि सुन सकता था।

रूडिन ने अपनी बाहों को मोड़ कर सीने पर रखा और ध्यानपूर्वक कुछ सुनने लगा। उसका हृदय बड़ी तेजी से स्पंदित हो रहा था। वह साँस रोक कर खड़ा हो गया। अंत तक उसे हलके पर बेचैन पाँवों की आहट सुनाई पड़ी। दूसरे ही क्षण झुरमुट के पास नातालिया दिखाई पड़ी।

रूडिन शीघ्रता से उसके पास गया और उसके हाथ हाथों में ले लिये। बेचारी के हाथ बर्फ के समान ठंढे थे।

—"नातालिया!" उत्तेजित पर मृदु स्वर में कहा, "मैंने तुम्हें बुलाया था—। कल तक प्रतीक्षा करना भी मेरे लिए असंभव हो गया। मैं तुमसे कुछ ऐसी बातें कहूँगा जिन्हें कहने की आशा कभी नहीं की। आज सवेरे तक मुझे इसकी धारणा न थी कि मैं तुमसे प्यार करता हूँ।"

नातालिया के हाथ उसके हाथों में एक क्षण के लिए काँप उठे ।

—"मैं तुमसे प्यार करता हूँ ।" उसने पुनः कहा, "अद्भुत लगता है, इतने दिन कैसे अंधा बना रहा ! बहुत पहले ही मुझे समझ जाना चाहिये था कि मैं तुमसे प्यार करता हूँ । लेकिन तुम, तुम नातालिया—?"

नातालिया को मानो साँस लेने में तकलीफ होने लगी थी। उसने अंत तक किसी प्रकार से कहा, "देख तो रहे हो, मैं आयी हूँ !"

—"हाँ, लेकिन यह तो कहो कि तुम मुझसे प्यार करती हो !"

—"शायद !" नातालिया ने मृदु स्वर में उत्तर दिया ।

रूडिन उसके हाथों की उष्णता महसूस करने लगा । उसने उसे वक्ष के समीप लाने की कोशिश की ।

नातालिया ने घबड़ा कर चारों तरफ देख लिया ।

—"मुझे जाने दो । मुझे डर लग रहा है । शायद कोई हमारी बातों को सुन रहा है । ईश्वर के नाम पर कहता हूँ, तुम जरा सावधान हो जाना, वोलीनस्टेव तुम पर संदेह करता है ।"

—"छोड़ो उसकी बात । आज शाम को उसकी बातों का जवाब तक नहीं दिया । आह नातालिया ! अभी मैं कितनी सुखी हूँ । अब कोई भी हमें अलग नहीं कर सकता ।"

नातालिया ने उसकी आँखों पर आँखें रख कर कहा, "मुझे जाने दो ।" उसने पुनः मृदु स्वर में कहा, "मैं अवश्य जाऊँगी !

—"एक क्षण—" रूडिन ने कहा ।

—"नहीं । मुझे जाने दो ।"

—"क्या तुम मुझसे डर रही हो ?"

—"नहीं । लेकिन मुझे अभी जाना पड़ेगा ।"

—"तो एक बार फिर कहो—"

—"तुमने कहा,—तुम सुखी हो ?" नातालिया ने पूछा।

—"हाँ। मैं संसार का श्रेष्ठ सुखी हूँ। क्या इसमें कोई संदेह है ?"

नातालिया ने अपना मस्तक उठाया। उसका तरुण, दीप्त और सुन्दर मुखमंडल झुरमुट की हलकी छाँहों में, सांध्य गगण के क्षीण आलोक में कितना कामनापूर्ण दिखाई पड़ा।

नातालिया बोली, "तो सुन लो, मैं तुम्हारी होकर ही रहूँगी।"

—"हे ईश्वर !" रूडिन प्रायः चिल्ला पड़ा।

इतने में नातालिया चली गयी थी। रूडिन क्षण भर चुपचाप खड़ा रहा फिर धीरे-धीरे झुरमुट में से बाहर निकला। चाँद की रोशनी में उसका मुख दिखाई पड़ा। उसके होठों पर हलकी हँसी थी।

—"मैं सुखी हूँ।" उसने अपने मन में कहा, "हाँ, मैं सुखी हूँ।" वह इस प्रकार दोहराता गया मानो अपने को यकीन दिला रहा था।

वह सीधा हो कर खड़ा हो गया, अपने घुँघराले बालों को पीछे खसका दिया फिर खुशी से अपनी भुजाओं को आंदोलित करते हुए बगीचे में चला गया।

इतने में बकायन के झुरमुट खड़खड़ा कर दो भागों में बँट गये और पांडालेवस्की दिखाई पड़ा। उसने सावधानी से चारों तरफ देखा फिर अपने होठों को कुंचित कर मस्तक हिलाया और अर्थपूर्ण ढंग से बड़बड़ाया, "मैदम यह सब जरूर जानेंगी।"

वह अदृश्य हो गया।

———

रूडिन—८

वोलीनस्टेव जब घर को लौट आया उस समय वह इतना विषण्ण और मलिन दिखाई पड़ा और अपनी बहन की बातों का जवाब इतनी शीघ्रता से और उदासीनता से दिया तथा अपने कमरे का दरवाजा बंद कर बैठ गया कि पावलोवना ने लेझेनोव को बुलाने का निश्चय किया। जब कोई आफत आती उस समय वह उसी पर निर्भर करती थी। लेझेनोव ने कहला भेजा कि वह दूसरे दिन को आयेगा।

दूसरे दिन सवेरे तक वोलीनस्टेव के मिजाज में कोई परिवर्तन नहीं आया। उसने चाय पीने के बाद कुछ काम से बाहर जाने का विचार किया पर उसके बदले में वह घर में ही बैठा रहा। वह एक सोफे पर लेट गया और एक पुस्तक पढ़ने लगा; ऐसा वह शायद ही कभी करता था। सचमुच साहित्य के लिए उसके मन में विशेष रुचि न थी और कविताओं के नाम सुनते ही वह डरता था। 'कविता के समान दुर्बोध' उसका एक मुहावरा था। वह अपने कथन के समर्थन में कवि एबुलत का एक पद उद्धृत करता था।

पावलोवना ने अपने भाई की तरफ घबड़ा कर देखा पर उसने उससे कुछ पूछा नहीं। इतने में एक गाड़ी आ कर बाहर दरवाजे के पास खड़ी हुई। पावलोवना ने अपने मन में अनुमान किया, यह लेझेनोव होगा। एक नौकर अंदर आया और उसने रूडिन का आगमन सूचित किया।

वोलीनस्टेव ने फर्श पर पुस्तक फेंक दी और अपना मस्तक उठा कर पूछा, "कौन?"

—"दृमित्री नीकोलेवीच रूडिन।" नौकर ने पुनः कहा।

वोलीनस्टेव सहसा खड़ा हो गया। उसने आदेश दिया, "उन्हें अंदर आने कहो।" उसने पावलोवना की तरफ घूम कर कहा, "और तुम भी बहन थोड़ी देर के लिए बाहर चली जाओ!"

—"लेकिन क्यों?—" पावलोवना ने जानना चाहा।

—"अनेक कारण हैं।" वोलीनस्टेव ने कुछ उत्तेजित हो कर कहा, "मैं जो कहता हूँ, करो।"

रूडिन अंदर आया। वोलीनस्टेव ने घर के बीचांबीच खड़ा हो कर रूडिन के प्रति सामान्य अभिवादन जताया पर रूडिन के साथ हाथ नहीं मिलाया।

—"आप निश्चय ही मेरी प्रतीक्षा नहीं कर रहे थे।" रूडिन ने सर्वप्रथम यह कहा और खिड़की पर अपनी टोपी रखी। उसके होंठ इषत् कुंचित हुए। वह अपने को सहज-सरल नहीं बना पा रहा था। फिर भी उसने अपनी मानसिक अशांति के छिपाने की बड़ी चेष्टा की।

—"सचमुच आप के आने की आशा नहीं की" वोलीनस्टेव ने उत्तर दिया, 'कल रात को जो घटना घटी उससे यही आशा कर रहा था कि कोई दुत आपके निकट से कोई संदेश लायेगा।"

—"आप क्या कहना चाहते हैं समझ गया और इस स्पष्ट भाषण के लिए आपको धन्यवाद देता हूँ।" रूडिन ने बैठते हुए कहा, "और यह अच्छा ही है। जो हो, मैं आप जैसे सम्मानित व्यक्ति के निकट स्वयं आया।"

—"इस प्रकार सम्मान देने की क्या जरूरत थी?" वोलीन-स्टेव ने उत्तर दिया।

—"मेरे आगमन का उद्देश्य आपके निकट व्यक्त करना चाहता हूँ।"

—"हम एक दूसरे से परिचित हैं, फिर आप क्यों नहीं आयेंगे ? और यही तो पहला अवसर नहीं है कि आप ने मुझे इस प्रकार सम्मानित किया।"

—"जिस प्रकार एक सम्मानित व्यक्ति के निकट दूसरे सम्मानित व्यक्ति का आना होता है मैं उसी प्रकार आपके निकट आया।" रूडिन ने पुनः कहा, "आप की विचारबुद्धि से मेरा कुछ निवेदन है, आप पर मेरा पूरा भरोसा है।"

—"आखिर बात क्या है ?" वोलीनस्टेव ने पूछा। वह अभी तक घर के बीच में चुपचाप खड़ा था और रूडिन की तरफ अप्रसन्न दृष्टि से देखते हुए अपनी मुँछों पर ताव दे रहा था।

—"क्षमा कीजियेगा। मैं अवश्य उसी बारे में बातें करने आया हूँ। जो घट चुका है। फिर उस के बारे एकाएक वार्तालाप शुरू कर देना आपके लिए कठिन होगा।"

—"क्यों ?"

—"क्योंकि इसमें एक तृतीय व्यक्ति भी जड़ित है।"

—"यह तीसरा व्यक्ति कौन है ?"

—"वोलीनस्टेव, आप जानते हैं, मेरा अभिप्राय किससे है।"

—"मैं नहीं जानता ड्रमिट्री नीकोलेवोच !"

—"तब आप चाहते हैं—!"

—"मैं चाहता हूँ आप अकारण की अटकलबाजी बंद कर दीजिये।" वोलीनस्टेव बोला। उसका क्रोध बड़ी तेजी से बढ़ रहा था।

रूडिन ने अपनी भौंहे कुंचित कीं।

—"ठीक है, हम अकेले हैं, मैं आप से जो कहूँगा, उसका अनुमान आप लगा चुके हैं।"

वोलीनस्टेव ने असहिष्णुता से अपने कन्धों को झकझोरा।

—"मैं कहना चाहता हूँ, मैं नातालिया से प्रेम करता हूँ और नातालिया भी मुझसे प्रेम करती है। इसका कारण मेरे पास मौजूद है।"

वोलीनस्टेव का मुखमंडल फीका पड़ गया पर उसने कुछ भी नहीं कहा। वह खिड़की के पास जा कर रूडिन की तरफ पीछा करके खड़ा हो गया।

—"आप जानते हैं, यदि मुझे यह विश्वास न होता—।" रूडिन ने कहा।

—"सच कहता हूँ।" वोलीनस्टेव एकाएक कह उठा, "मुझे बिंदुमात्र भी सन्देह नहीं है। जो हो, आपको सफलता मिले, लेकिन मैं यह नहीं समझ सका कि यह समाचार आप क्यों मेरे पास लाये। मुझे इसमें क्या करना है? मैं यह नहीं जानना चाहता कि आप किससे प्यार करते हैं और कौन आपसे प्यार करती है? मैं यह सब नहीं जानना चाहता।"

वोलीनस्टेव केवल खिड़की से बाहर देखता रहा। उसका कंठ-स्वर बैठ-सा गया।

रूडिन अब खड़ा हो गया।

—"अब मैं कहूँगा कि आपके निकट आने का निश्चय मैंने क्यों किया, क्यों मन में यह विचार किया कि आपसे कुछ भी छुपाने का अधिकार मुझे नहीं है चाहे वह हमारा पारस्परिक मनोभाव क्यों न हो। आपके लिए मेरे मन में असीम स्नेह है और इसीलिए आपके निकट मैं आया। न मैंने चाहा और न हमारे में से किसी ने चाहा कि कपट कर आपको धोखे में डालूँ। नातालिया के लिए आपका क्या मनोभाव है जानता हूँ। विश्वास कीजिये, मैं अपना वास्तविक मूल्य जानता हूँ। मैं जानता हूँ नातालिया के हृदय में आपके लिए जो स्थान है उसे प्राप्त करने की योग्यता मुझ में किस मात्रा में है। लेकिन अंत तक यदि भाग्य

में यही बदा था तो कपट कर, ढोंग रच कर क्या होगा ? फिर हम अपनी गलतफहमियों को सब के सामने इस प्रकार प्रकट नहीं करेंगे जिस प्रकार पिछले दिन भोजन के समय करने लगे थे। बताइये वोलीनस्टेव, हम ऐसा करेंगे ?"

वोलीनस्टेव ने अपनी बाहों को मोड़ कर अपने सीने पर इस प्रकार रखा कि वह अपने आवेग को संयत कर रहा था।

—"वोलीनस्टेच !" रूडिन कहता गया, "मैं ने आपको दुःख पहुँचाया है मैं उसका अनुभव कर रहा हूँ, लेकिन आप कृपया हमें समझने की कोशिश तो कीजिये। हमारे पास कोई दूसरा उपाय नहीं है जिससे हम यह प्रमाणित कर सके कि आप के लिए हमारे मन में कितनी श्रद्धा है। आपके साधु और महान स्वभाव का सम्मान हम कर सकते हैं लेकिन हमारे पास दूसरा उपाय कहाँ है ? किसी दूसरे व्यक्ति से इस प्रकार निष्कपट—पूर्णतया निष्कपट व्यवहार करने से बड़ी भूल होती लेकिन आप के आगे हमारा यह एक कर्तव्य हो जाता है। सचमुच यह सोच कर हम सुखी हैं कि हमारा राज आपके हाथ है।"

वोलीनस्टेव बलात् हँसा।

—"मेरे प्रति आपके इस विश्वास के लिए आपको धन्यवाद!" वोलीनस्टेव बोला। फिर भी आप यह जान लीजिये कि मैं न तो आप का राज ही जानना चाहता और न मेरा राज ही आपको बताना चाहता। जो हो, आप मेरी बातों में इस प्रकार हस्तक्षेप कर रहे हैं जैसे कि वे आप की निजी हों। लेकिन महाशय, मैं समझता हूँ आप केवल अपनी ही बात नहीं कह रहे हैं। क्या नातालिया आपके मेरे यहाँ आने के तथा इसके उद्देश्य के बारे में कुछ जानती है ?"

रूडिन इस प्रश्न से थोड़ा घबड़ा गया।

—"मैं ने अपने उद्देश्य के संबंध में नातालिया से कुछ नहीं कहा था लेकिन मैं समझता हूँ वह मेरे अभिप्राय से सहमत होगी।"

—"फिर तो बड़ा अच्छा है!" वोलीनस्टेव ने एक क्षण रुक कर कहा और उँगलियों से खिड़की के शीशे को बजाने लगा। "मैं आप से सच कहता हूँ, यह और भी अच्छा होगा यदि आप मेरा सम्मान थोड़ा किया करें। सच तो यह है कि मैं आप के दिये सम्मान को बहुत ही थोड़ा महत्त्व देता हूँ। लेकिन अभी आप मुझसे क्या चाहते हैं?"

मैं कुछ नहीं चाहता, अगर चाहता हूँ तो आपके समक्ष एक प्रार्थना उपस्थित करना चाहता कि आप मुझे धोखेबाज और धूर्त न समझिये। मैं चाहता हूँ, आप मुझे जानिये। मुझे आशा है मेरी आंतरिकता पर आप का संदेह अधिक दिन स्थायी नहीं होगा। मैं आप से मित्रतापूर्वक विदा लेना चाहता हूँ और चाहता हूँ, पहले जैसे आपसे हाथ मिलाने।"

रूडिन वोलीनस्टेव के पास गया।

—"माफ कीजियेगा!" रूडिन की तरफ देखते हुए वोलीनस्टेव दो कदम पीछे हट गया। "मैं आपके उद्देश्य का उचित विचार करना चाहता हूँ। मैं कहता हूँ वे बहुत अच्छे हैं, खुश करनेवाले हैं लेकिन मेरे समान एक साधारण व्यक्ति सब-कुछ मोटे तौर पर समझना चाहेगा, आपके दिये कल्पित रूपों को नहीं। क्योंकि वह आप जैसे महान व्यक्ति के दिमागी दौड़ान के अनुसरण करने में असमर्थ है। जो आप के लिए आंतरिकता है वह उसके लिए धूर्तता और नीचता हो सकता है जो आपके लिए सहज और सरल है वह उसके लिए जटिल और अस्पष्ट हो सकता है। आप उन बातों का गर्व करते जिन्हें हम छिपाना चाहते हैं। फिर बताइये, आपको समझना हमारे लिए कैसे संभव है! माफ कीजियेगा, एक मित्र

के रूप में मैं आप का ग्रहण नहीं कर सकता और न आप से हाथ ही मिला सकता। यह नीचता का परिचय हो सकता है लेकिन दुर्भाग्य से मैं स्वयं नीच हूँ।"

रूडिन ने खिड़की पर से अपनी टोपी उठा ली।

उसने दुःखित हो कर कहा, "वोलीनस्टेव, विदाय! मेरा अनुमान ही गलत था। आपके निकट मेरा आना सचमुच अद्भुत है, लेकिन मुझे इसकी उम्मीद थी कि आप—।"

वोलीनस्टेव कुछ विचलित हो उठा।

रूडिन कहता गया, "क्षमा कीजियेगा, मैं इस बारे में अब कुछ कहना नहीं चाहता। मैं ने हर तरह से विचार करके देखा, आपने ठीक ही किया है क्यों कि आपके लिए कोई दूसरा रास्ता ही खुला नहीं था। जा रहा हूँ, कम से कम मुझे एक बार के लिए —अंतिम बार के लिए यह कहने का मौका दीजिये कि मैं निर्दोष हूँ, आपकी विवेचना पर मुझे अब भी पूर्ण विश्वास है—"

—"बस कीजिये!" वोलीनस्टेव गुस्से के मारे काँप उठा। "मैं ने कुछ ऐसा नहीं किया जिसके लिए आप बलात् मुझ पर विश्वास कर सकते हैं। मेरी विवेचना पर निर्भर करने का अधिकार आपको नहीं है!"

रूडिन कुछ कहनेवाला था लेकिन उसने कुछ कहा नहीं, झुक कर विदाय अभिवादन किया और मानो सब-कुछ वहीं समाप्त करके निकल गया। वोलीनस्टेव एक सोफे पर जा कर बैठ गया और मुँह फेर कर घर की दीवार को देखने लगा।

—"क्या अंदर आ सकती हूँ?" उसे बाहर से पावलोवना की आवाज सुनाई पड़ी।

वोलीनस्टेव ने तुरंत कोई उत्तर नहीं दिया केवल धीरे से अपने मुख को हाथों से पोंछ लिया।

—"नहीं पावलोवना।" उसने जिस स्वर में उत्तर दिया वह उसका अपना न था। उसने कहा, "मुझे थोड़ी देर अकेला रहने दो।"

आधे घंटे बाद पावलोवना पुनः दरवाजे के पास आयी। उसने कहा, "लेझेनोव आये हैं। आप उनसे मुलाकात करेंगे?"

—"हाँ। उन्हें आने दीजिये" वोलीनस्टेव ने उत्तर दिया।

लेझेनोव अन्दर आया। उसने सोफा के पास एक आराम कुर्सी पर बैठ कर पूछा, "क्या तुम्हारी तबीयत ठीक नहीं है?"

वोलीनस्टेव केहुनी का सहारा ले कर बैठ गया और देर तक अपने मित्र की तरफ देखता रहा, फिर रूडिन से जो बातालाप हुआ था उसका प्रत्येक शब्द उस के सामने दोहराता गया। इसके पहले उसने नातालिया के सम्बन्ध में अपने मनोभाव के बारे में लेझेनोव से कुछ भी नहीं कहा था, हलाँकि वह इसका संदेह करता था कि लेझेनोव के निकट कुछ भी छिपा नहीं है।

—"नहीं भाई! यह सचमुच आश्चर्य की बात है।" वोली-नस्टेव ने जब अपना कथन समाप्त किया तब लेझेनोव ने कहा। "सचमुच मैं उससे और भी आश्चर्यजनक कुछ उम्मीद करता था। लेकिन यह क्या! खैर, उसने अपना परिचय दिया है।"

—"सच कहता हूँ।" वोलीनस्टेव उत्तेजित हो कर चिल्ला उठा, "यह केवल निर्लज्जता है। क्यों, मैं तो उसे खिड़की के बाहर ही ढकेल देता। पता नहीं वह अपना गर्व जताने आया था अथवा मुझसे डर गया था? पता नहीं वह क्यों आया, मेरे समान एक के सामने आने का साहस किया!"

वोलीनस्टेव अपने सर के पीछे हाथ रख कर चुप हो गया।

—"नहीं मेरे दोस्त! बात यह नहीं है।" लेझेनोव ने शांत स्वर में उत्तर दिया, "तुम मेरी बात पर विश्वास नहीं कर सकोगे

लेकिन मैं कहता हूँ वह बुरा उद्देश्य ले कर नहीं आया था। तुम यह नहीं देखते कि उसने कितनी सरलता और महानता का परिचय दिया, लंबी-चौड़ी बातें बनाने का कितना अच्छा मौका पाया। वह अपनी वाक्पटुता को जाहिर कर सका; वह वास्तव में जो चाहता है और जिसके बिना वह जीवित नहीं रह सकता। सच पूछो तो, उसकी जबान ही उसका दुश्मन है, लेकिन अनुगत भी।"

—"कितनी धीरता से आया और बातें किया, उसकी कल्पना हम नहीं कर सकते।"

—"यह तो है ही। वह अपने कोट का बटन भी इस प्रकार लगता है कि किसी महान कर्तव्य का पालन कर रहा हो। जी चाहता है उसे किसी निर्जन टापू पर छोड़ दूँ और दूर से देखूं 'वहाँ वह करता क्या है! वह सरलता पर किस प्रकार भाषण करता है!"

वोलीनस्टेव ने कहा, "भगवान के नाम पर बताओ, इसका क्या मतलब है—यह भी कोई दर्शन है क्या?"

—"हाँ, एक प्रकार से यह दर्शन ही है, लेकिन यह कुछ भिन्न प्रकार का है। लेकिन तुम सभी मूर्खताओं की व्याख्या दर्शन की सहायता से नहीं कर सकते!"

वोलीनस्टेव ने उसकी तरफ देखा।

—"क्या तुम्हें ऐसा नहीं लगता कि ये बातें सारी की सारी झूठ हैं।"

—"नहीं भाई! खैर, इस संबंध में हम बहुत आलोचना कर चुके। अब आओ, हम धूम्र-पान करें और तुम अपनी बहन को बुलाओ। उसके रहने से बातें करना भी अच्छा लगता और चुप रहना भी आसान होता। फिर वह हमें थोड़ी चाय भी पिलायेगी।"

पावलोवना अंदर आयी। लेफनोव ने उसका हाथ थाम लिया और उसे साग्रह चूमा।

× × ×

रूडिन घर को लौटा एक विचित्र और उलझी हुई मानसिक स्थिति ले कर। वह स्वयं अपने ऊपर क्रुद्ध हो उठा था। उसने अपनी अक्षमनीय और लड़कों की सी मूर्खता के लिए अपने को तिरस्कृत किया। किसी ने ठीक ही कहा है कि अपनी की हुई भूल के लिए पश्चात्ताप करने से बढ़ कर कुछ और कष्टदायक नहीं हो सकता।

रूडिन के मन में अनुशोचना जागी। उसने अपने दाँतों को दबा कर कहा, "न जाने किस शैतान ने मुझे उस जमींदार के निकट जाने को मजबूर किया। यह भी यह अद्भुत ख्याल था, एक दुर्विनीत के सामने अपने को अपमानित करने के लिए खुला छोड़ देना।"

उधर मैदम लासुनस्काया के यहाँ भी कोई असाधारण घटना घट रही थी। गृहकर्त्री सवेरे दिखाई नहीं पड़ी और भोजन में भी सम्मिलित नहीं हुई। केवल मात्र पांडालेवस्की को उसके घर में जाने की अनुमति मिली। उसी ने बताया कि मैदम के सर में दर्द हो गया है। रूडिन नातालिया को भी एक क्षण के लिए नहीं देख सका, नातालिया दिन भर कुमारी बोनकोर्ट के साथ अपने घर में बैठी रही। भोजन-कक्ष में जब नातालिया से रूडिन का साक्षात्कार हुआ उस समय नातालिया ने इस प्रकार विषण्ण दृष्टि से उसकी तरफ देखा कि उसका दिल बैठ गया। उसके चेहरे में इतना परिवर्तन आ गया था, मानो पिछले दिन कोई दुर्घटना घटी है। अभावित आशंकाओं ने रूडिन को घेर लिया। उसने अपने को बासिस्टोफ के साथ वार्तालाप में नियुक्त रखना चाहा। उससे देर

तक बातें भी हुईं। सचमुच उस उत्साही और उच्छ्वासमय युवक में पवित्र विश्वास और सुखमय आशाएँ थीं। शाम को एक दो घंटे के लिए मैदम लासुनस्काया बैठने के कमरे में आयी। उसने रूडिन के साथ सदय व्यवहार ही किया परंतु अपने को अलग रख कर। मैदम ने थोड़ी हँसने की कोशिश की, थोड़ा कटाक्ष किया और थोड़ा नकिया कर अथवा थोड़ा संकेतों का सहारा ले कर बातों का क्रम जारी रखा। आज के दिन उसका उठना-बैठना एक राज-घराने की स्त्री के समान हुआ। जो हो, वह रूडिन के प्रति किंचित उदासीन दिखाई पड़ी। 'इस पहेली का क्या हल है' रूडिन ने मैदम के गर्वोन्नत मस्तक की तरफ वक्र दृष्टि से देख कर मन ही मन कहा।

रूडिन को इस पहेली के उत्तर के लिए अधिक देर प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ी। प्रायः आधी रात को जब वह अंधेरे में बरामदे से अपने घर में जा रहा था उस समय सहसा किसी ने उसके हाथ में एक चिट्ठी दे दी। उसने घूम कर एक लड़की को जाते हुए देखा। उसने अनुमान किया, यह नातालिया की नौकरानी होगी। घर में जा कर उसने अपने नौकर को जाने को कहा और उस चिट्ठी को खोल कर पढ़ा। उसमें नातालिया के हस्ताक्षर में लिखा था :

कल भोर में ठीक साढ़े छः बजे, उसके बाद नहीं, ओक के पेड़ों के पीछे 'आवदुखिन' पोखरे के पास आना। किसी और समय आना अकारण होगा। यही हम लोगों की आखिरी मुलाकात होगी और यह भी न हो सकेगी अगर…आना। हम एक निश्चय कर ही लेंगे।

पुनश्च—अगर मैं नहीं आती तो समझ लेना हम एक दूसरे

को फिर नहीं देख सकेंगे। यदि ऐसा हुआ तो तुम्हें सूचित करूँगी।

रूडिन चिन्तित हो उठा। वह चिट्ठी को हाथ में लिये देर तक सोचता रहा फिर उसे तकिये के नीचे रख दिया। फिर कपड़े बदल कर सो गया और देर तक जागता रहा। उसे गहरी नींद नहीं आयी और पाँच बजने के पहले ही वह उठ गया।

आवदुखिन तालाब, जिसके किनारे नातालिया रूडिन से मिलनेवाली थी, बहुत दिन पहले ही सूख गया था। तीस साल पहले उसके किनारे टूट-फूट गये और तभी से वैसे ही पड़े हैं। केवल गीले कीचड़ से भरे उस विशाल गड्ढे के चौरस निचले भाग को देख कर तथा टूटे-फूटे किनारों का अवशेष देख कर वहाँ एक तालाब के होने का अनुमान किया जा सकता है। पहले इस तालाब के किनारे एक जमींदार का मकान था परन्तु वह भी बहुत पहले नष्ट-भ्रष्ट हो चुका। केवल दो विशाल देवदार के पेड़ उस स्थान का संकेत कराते थे। उनकी फैली हुई सदा-हरित् डालियों के शीर्ष पर हवा अनादि काल से सरसराती और विषादभरे स्वर में रोती रही। अनुमान किया जाता है इन दो पेड़ों के नीचे कभी भयानक पाप कार्य सम्पादित हुआ था जिसकी रहस्यमय कथाएँ आज भी ग्राम के अधिवासियों के मुख से प्रचारित होती थीं। ऐसा कहा भी जाता था कि किसी का जीवन-नाश किये बिना उन दोनों पेड़ों में से एक भी नहीं गिरेगा। उस स्थान पर और एक पेड़ था देवदार का, जो एक तूफान के आते गिर पड़ा था और उससे एक छोटी लड़की की मृत्यु हो गयी थी। कहा जाता था उस पुराने तालाब के चारों तरफ प्रेतात्माओं का निवास है। वह स्थान सच-मुच मनुष्यों द्वारा परित्यक्त था। रौद्रकरोज्ज्वल दिन में भी वहाँ अँधेरा छाया रहता था। चारों तरफ बहुत से पुराने ओक के पेड़ थे जिनमें बहुतों के पत्ते झड़ गये थे और बहुत से पेड़ सूख गये थे। इससे वह स्थान और भी निर्जन और उदास दिखाई पड़ता

था। जहाँ-तहाँ छोटे-मोटे पेड़-पौधों के बीच विशाल ओक वृक्षों के धूसर शरीर भयानक दैत्यों के समान दिखाई पड़ रहे थे। यह दृश्य कितना अशुभ था। ऐसा लगता था कि चक्रान्तकारी बूढ़े किसी नवीन चक्रांत के रचने के लिए एकत्र हुए हैं। इन वृक्षों के पीछे एक पतली और विलीयमान पगडंडी चली गयी थी। विशेष आवश्यकता न पड़ने पर कोई आवदुखिन तालाब के पास नहीं जाता। नातालिया ने स्वेच्छा से यह जनमानवहीन स्थान मनोनीत किया। यह स्थान मैदम लासुनस्काया के निवास-स्थान से आधे मील की दूरी पर था।

रूडिन जिस समय आवदुखिन तालाव के पास पहुँचा उस समय सूर्यदेव अच्छी तरह निकल चुका था फिर भी यह सवेरा आनन्दहीन था। सारा आकाश दूध के समान सफेद और गाढ़े मेघों से आच्छादित था। हवा इन मेघों को लेकर इधर-उधर दौड़ने लगी। कुछ तेजी से हवा के चलने के कारण उसमें से सर-सराहट की आवाज तथा गंभीर गर्जन निकले। रूडिन जंगली पेड़-पौधों से पूर्ण उस तालाब के किनारे चहलकदमी करने लगा। उसका मन चंचल हो उठा। ये मिलन, ये नवीन आवेग उसके निकट उत्तेजक प्रतीत हुए परन्तु साथ ही साथ मन को पीड़ित भी करने लगे विशेष कर रात की घटना के बाद। रूडिन को ऐसा लगा कि अब सब-कुछ की समाप्ति निकट आने लगी है जिससे उसका हृदय विचलित हो उठा। फिर भी उसने जिस प्रकार दृढ़ निश्चयता के साथ सीने पर बाहों को मोड़ कर रखा था और चारों तरफ देखते हुए टहल रहा था उससे उसके मनोभाव का पता लगाना संभव न था। पिगासोव ने एक बार ठीक ही कहा था कि रूडिन एक चीनी गुड़िये के समान है जिसका मस्तक हमेशा शरीर से बड़ा ही होता है। लेकिन केवल मस्तिष्क के द्वारा ही कोई नहीं जान

पाता कि उसके अंदर क्या हो रहा है चाहे वह मस्तिष्क कितना ही शक्तिशाली क्यों न हो ! रूडिन धूर्त और तीक्ष्ण बुद्धि का अधिकारी होकर भी पूरी निश्चयता के साथ यह नहीं कह सकता कि नातालिया उससे प्रेम करती है या नहीं अथवा उसका यह तड़पना वास्तविक है कि नहीं और वह यह भी नहीं कह सकता कि नातालिया से बिछुड़ने के बाद भी वह तड़पा करेगा। किसी के प्रेम से खेलने की मनोवृत्ति जो उसमें नहीं है यह सभी कहेंगे फिर क्यों उसने उस बेचारी लड़की से ऐसा किया ? फिर क्यों उससे मिलने के लिए अपने हृदय में भय और संकोच छिपाये प्रतीक्षा करने लगा ? इस प्रश्न का केवल एक ही उत्तर था कि वासनाशून्य व्यक्तियों के सिवाय कोई और इतनी आसानी से विमोहित नहीं होता।

रूडिन जिस समय तालाब के किनारे चहलकदमी कर रहा था उसी समय नातालिया खेतों में से तथा भींगी घासों में से आती दिखाई पड़ी।

—"नातालिया, नातालिया। तुम्हारे पाँव भींग जायेंगे।" उसकी नौकरानी माशा ने कहा। वह नातालिया के समान तेज नहीं चल पा रही थी।

नातालिया ने उसकी बातों पर ध्यान नहीं दिया। वह उतनी ही शीघ्रता से चलने लगी।

—"ओफ् ! यदि वे हमें देख लें तो क्या होगा !" माशा ने अपना कथन जारी रखा। "बड़े आश्चर्य की बात हुई की हम मकान से निकल सकीं। अगर कुमारी बोनकोर्ट जाग पड़ी तो क्या होगा ? ईश्वर को धन्यवाद कि अब अधिक दूर नहीं है—वह देखो, वे महाशय हमारी प्रतीक्षा कर रहे हैं।" उसकी दृष्टि रूडिन पर पड़ते ही उसने शीघ्रता से कहा। रूडिन बाँध के ऊपर मूर्तिवत खड़ा था।

माशा फिर बोली, "वे वैसे खुले स्थान में खड़े होकर क्या

कर रहे हैं उनको नीचे गड्ढे में उतर कर खड़ा होना चाहिए था।"

नातालिया रुक गयी।

—"माशा! तुम यहीं देवदार के झुरमुट में खड़ी रहो।" नातालिया बोली और तालाब की तरफ शीघ्रता से बढ़ गयी।

रूडिन उसे देख कर आगे बढ़ आया और विस्मित हो कर रुक गया। उसने इसके पहले नातालिया के मुख पर ऐसा भावावेग नहीं देखा था। उसकी भौंहें कुंचित थीं, होठ निबद्ध थे और आँखें मानो स्थिर लक्ष्य पर निविष्ट थीं।

—"डूमिट्री नीकोलेवीच रूडिन।" नातालिया ने कहा, "हमारे पास नष्ट करने को अधिक समय नहीं है। मैं केवल पाँच मिनट के लिए आयी हूँ। माँ को सब-कुछ का पता चल गया है। परसों पांडालेवस्की ने हमारा पीछा किया था और हमारे मिलने के बारे में सब-कुछ माँ को बताया है। वह तो हमेशा से मेरी माँ का भेदिया है। कल माँ ने मुझे बुलाया था।"

—"ओफ्।" रूडिन के मुख से निकला, "फिर क्या हुआ। तुम्हारी माँ ने क्या कहा?"

—"वे मुझ पर क्रोधित नहीं हुईं और मुझे डाँटा भी नहीं केवल इतना कहा कि मेरा यह काम बच्चों का-सा हुआ है।

—"बस इतना ही कहा?"

—"हाँ! उसने और भी कहा कि तुम से विवाहित देखने के पहले ही मुझे मृत देखेंगी।"

—"उन्होंने ऐसा कहा?"

—"हाँ। उन्होंने यह भी कहा कि तुम मुझसे विवाह करना नहीं चाहते केवल मुझसे प्रेम का अभिनय कर रहे हो क्योंकि अब तुम्हें इसकी अभिलाषा नहीं रह गयी। उन्होंने तुमसे यह-सब उम्मीद नहीं किया था और इसलिए उन्होंने अपने को दोषी

ठहराया कि तुम्हें मुझसे अक्सर मिलने-जुलने दिया। उन्होंने मेरी सद्बुद्धि पर निर्भर किया था पर मैंने उन्हें इस प्रकार चकमा दिया। उन्होंने इस प्रकार न जाने क्या-क्या कहे मुझे याद नहीं।"

नातालिया ने यह सब अद्भुत पर निरस स्वर में कहा।

—"और तुम ने, तुमने उनसे क्या कहा नातालिया?"

—"मैं उनसे क्या कहा? नातालिया ने दोहराया। "अभी तुम क्या करना चाहते हो?"

—"ओफ्! ओफ्!" रूडिन के मुख से निकला। हे ईश्वर तुम इतने निष्ठुर हो। कितना शीघ्र और सहसा यह आघात हुआ! क्या तुम कहती हो तुम्हारी माँ अभी भी क्रोधित हैं?"

—"हाँ! वे तुम्हारी एक भी न सुनेंगी!"

—"कितना बड़ा अन्याय है! क्या अब कोई आशा न रही?"

—"नहीं!"

—"लेकिन हम कैसे इतने अभागे हो सकते? कितना बड़ा शैतान है, यह पांडालेवस्की! नातालिया, तुम पूछ रही हो अब मुझे क्या करने का विचार है? लेकिन मेरा सर चकरा रहा है—मैं कुछ सोच नहीं सकता, केवल इतना अनुभव कर सकता कि भयानक दुःख मुझे सता रहा है। मुझे तुम्हारी धीरता देख आश्चर्य हो रहा है!"

—"तुम इसे मेरी धीरता कहते हो?"

रूडिन तालाब के किनारे चहलकदमी करने लगा, नातालिया उसे अपलक देखती रही।

—"तुम्हारी माँ ने कुछ और पूछा नहीं?" अन्त तक रूडिन ने जानना चाहा।

—"उन्होंने पूछा, क्या मैं तुम से प्यार करती हूँ!"

—"अच्छा। तुम ने क्या कहा?"

नातालिया एक क्षण के लिए रुकी।

—"मैंने झूठ नहीं कहा।—"

रूडिन ने उसका हाथ थाम लिया।

—'हर समय हर बात में तुम इतनी महान हो, उदार हो! ओह! स्त्रियों का हृदय विशुद्ध सोना है। क्या सचमुच तुम्हारी माँ ने हमारे विवाह का घोर विरोध किया?"

—"हाँ! मैंने तुम से कहा न, मेरी माँ ने कहा कि तुम मुझसे शादी करना नहीं चाहते!"

—"फिर वे मुझे एक धोखेबाज समझती हैं। लेकिन मैंने उसके लिए क्या किया है। रूडिन ने हाथों से अपना सर थाम लिया।

—"डमिट्री नीकोलेवीच रूडिन! नातालिया ने उससे कहा, "हम समय बर्बाद कर रहे हैं। सुन लो, मैं तुम्हें नहीं देख सकूँगी। मैं यहाँ आँसू लेकर नहीं आयी, शिकायत लेकर नहीं आयी। तुम तो देख रहे हो, नहीं रो रही हूँ। मैं तो तुम्हारे निर्देश के लिए आयी हूँ।"

—"लेकिन मैं तुम्हें कौन-सा निर्देश दे सकता हूँ, नातालिया?"

—"कौन-सा निर्देश! तुम एक पुरुष हो; मैं तुम पर निर्भर करने आयी हूँ; मैं अन्त तक तुम पर निर्भर करती रहूँगी। अब बताओ, तुम्हारा उद्देश्य क्या है?"

—"मेरा उद्देश्य! तुम्हारी माँ ने तो मुझसे कहा है कि वे अब तुम्हारे साथ किसी प्रकार का संपर्क नहीं रक्खेंगी। लेकिन तुमने तो मेरे प्रश्न का उत्तर नहीं दिया।"

—"कैसा प्रश्न?"

—"तुम्हारे विचार से अब हमें क्या करना चाहिये?"

—"अब हमें क्या करना चाहिये?" रूडिन ने दोहराया। "हम सब-कुछ शान्तिपूर्वक सह लेंगे।

—"हम शान्तिपूर्वक सब-कुछ सह लेंगे!" नातालिया ने धीरे से उन शब्दों को दोहराया, उसके होंठ फीके पड़ने लगे।

—"हम भाग्य के अभिशापों का शान्तिपूर्वक सहन करेंगे।" रूडिन कहता गया, "इसके सिवाय हम कर ही क्या सकते? मैं अच्छी तरह जानता हूँ वह कितना कटु होगा, कितना दर्दनाक और असहनीय होगा! लेकिन तुम्हीं जरा सोचो नातालिया, मैं एक दरिद्र आदमी हूँ। मानता हूँ, मुझ में काम करने की शक्ति है और, अगर मैं धनी ही होता तो क्या तुम मेरे लिए अपनी माँ के क्रोध, परिवार के विच्छेद को सह सकती? नहीं नातालिया, यह सोचा भी नहीं जा सकता। मुझे ऐसा लगता है हमारे प्रारब्ध में मिलन नहीं लिखा है और जिस सुख का सपना मैंने देखा था वह मेरे लिए नहीं है।"

नातालिया ने सहसा हाथों में अपना मुँह छिपा लिया और रोने लगी। रूडिन उसके पास गया।"

—"नातालिया! मेरी नातालिया!" वह उत्तेजित हो क कह उठा, "भगवान के लिए नातालिया रोओ नहीं, मुझे यातना न दो, धीरज धरो।"

नातालिया ने अपना मस्तक उठाया।

वह बोली, "तुम मुझे धीरज धरने कह रहे हो।" उसकी आँखें आसुओं के कारण चमकने लगीं।

—"मैं उस कारण नहीं रो रही हूँ जो तुम सोच रहे हो। मैं उसके लिए दुःखित नहीं हूँ; मैं इसलिए दुःखी हूँ कि मैंने तुम्हें समझने में गलती की थी। अफसोस! क्यों मैं तुम्हारे निकट आयी थी निर्देश के लिए, ऐसे अवसर पर तुम्हारे मुख से पहली बात निकली शान्तिपूर्वक सब कुछ सहन कर लो! तो तुम अपने स्वतन्त्रता, बलिदान आदि के आदर्शों का इस प्रकार कार्यरूप देते हो?"

नातालिया का कण्ठ-स्वर रुक गया।

व्याकुल होकर रूडिन कहने लगा, "लेकिन नातालिया, भूलो नहीं, मैं उन बातों का अस्वीकार नहीं करता—केवल—।"

—"तुमने मुझसे पूछा"—नातालिया के स्वर में नयी शक्ति आयी, "कि मैंने अपनी माँ को क्या उत्तर दिया जब उन्होंने मुझसे कहा कि वे मुझे तुमसे विवाहित देखने से मुझे मृत देखना अधिक पसन्द करेंगी। मैंने उनसे कहा, किसी दूसरे से विवाह करने के पहले मरना ही पसन्द करूँगी—और तुम कह रहे हो, सब कुछ शान्तिपूर्वक सह लो! मेरी माँ ने फिर ठीक ही कहा कि तुमने मुझसे कपट किया क्योंकि विवाह के लिए तुम्हारे मन में कोई रुचि नहीं है।"

—"मैं सौगन्ध खाकर कहता हूँ, नातालिया—" रूडिन बोला, "हम मिलकर इस बारे में सोचेंगे और देखेंगे, क्या किया जा सकता है।—"

—"तुम आत्मदान के सम्बन्ध में प्रायः कहा करते थे—" नातालिया उसे रोक कर कहने लगी, "लेकिन तुम अगर आज इसी समय कहते, 'मैं तुमसे प्यार करता हूँ लेकिन तुमसे विवाह नहीं कर सकता। भविष्य के सम्बन्ध में कोई निश्चित उत्तर नहीं दे सकता केवल मेरी बाँह पकड़ लो और मेरे साथ चलो' तो मैं तुम्हारे साथ चली जाती; मैं कुछ भी करने के लिए तैयार होती। लेकिन बातों और कामों में बहुत फर्क होता है; जो हो, तुम अब भीत दिखाई पड़ रहे हो जैसे परसों भोजन के समय वोलीनस्टेव को देख कर डर गये थे।"

रूडिन के मुख से मानो खून छलक उठा। नातालिया के अनुरागपूर्ण आक्षेप ने उसे अति मात्रा में प्रभावित किया था, लेकिन उसके अन्तिम वाक्य से रूडिन की आत्मश्लाघा को ठेस पहुँचा।

—"तुम अभी अति मात्रा में क्रोधित हो नातालिया।" रूदिन ने कहा, "इस समय नहीं समझ सकोगी कि तुमने अपनी बातों से मुझपर कितना बड़ा आघात किया। मुझे आशा है, समय आने पर तुम मेरा सुविचार कर सकोगी। तुम नहीं समझ सकोगी कि उस सुख का विसर्जन देने के लिए मुझे कितना मूल्य चुकाना पड़ा है, जिसे पाने के लिए, तुम्हीं कह रही हो, मुझे किसी भी कृतज्ञता का बन्धन स्वीकार नहीं करना पड़ता। इस संसार में तुम्हारी मानसिक शान्ति से बढ़ कर मेरे लिए कोई और प्रिय संपद नहीं है। अगर मैं अपने लिए उस ख को पाना चाहता तो मनुष्यों में सब से नीच मैं ही होता।"

—"हो सकता है।" नातालिया बोली, "हो सकता है तुम ठीक कर रहे हो और मैं नहीं जानती कि मैं क्या कह रही हूँ। फिर भी अभी तक तुम पर विश्वास रखती हूँ, तुम्हारी हर बात पर विश्वास रखती हूँ। केवल मेरा अनुरोध है, भविष्य में आप कुछ भी सोच-समझ कर ही कहियेगा, अनर्गल नहीं। मैंने तुमसे जब कहा कि तुम से प्यार करती हूँ उस समय मुझे उस शब्द का सम्यक अर्थ ज्ञात था और मैं उसके लिए सब कुछ करने को तैयार थी। अब, तुमने जो शिक्षा मुझे दी उसके लिए तुम्हें धन्य-वाद देकर तुमसे विदा माँग लेना ही बाकी रह गया।"

—"रुक जाओ नातालिया, भगवान के लिए रुक जाओ, मैं प्रार्थना करता हूँ, रुक जाओ। मैं सौगन्ध खाकर कहता हूँ, तुम्हारी आँखों में घृणित होने के योग्य कोई काम मैंने नहीं किया। तुम मेरी स्थिति को समझने की कोशिश करो। मैं तुम्हारे लिए और अपने लिए उत्तरदायी हूँ। अगर मैं पूर्ण आन्तरिकता से प्यार न करता तो इसी क्षण तुम्हें मेरे साथ भाग चलने की सलाह देता। आज नहीं तो कल, कभी न कभी तुम्हारी माँ तुम्हें क्षमा करतीं

ही—और उसके बाद—लेकिन मेरे सुख के बारे में सोचने के पहले—।"

रूडिन ने अपने को रोका। नातालिया उसे देखती रही, उसकी दृष्टि एक क्षण के लिए हटी नहीं—स्थिर रही। उसकी उस दृष्टि से मानो रूडिन किंकर्तव्यविमूढ़ हो उठा।

—"तुम अपने को सम्मानित व्यक्ति प्रमाणित करने के लिए यथाशक्ति कोशिश कर रहे हो लेकिन उसके सम्बन्ध में मुझे कोई सन्देह नहीं है। सोच-समझ कर काम करने की शक्ति तुममें नहीं है क्या मैंने उसी को निश्चित रूप से जानना चाहा? क्या मैं उसी के लिए यहाँ आयी हूँ!"

—"मुझे यह आशा न थी नातालिया!"

—"ओफ! आखिर तुमने यह कहा। हाँ, तुम्हें ऐसी आशा न थी कि बात यहाँ तक बढ़ जायगी, तुम मुझे नहीं जान सके थे। लेकिन इसके लिए घबड़ाओ नहीं। तुम मुझसे प्यार नहीं करते और मैं भी किसी को प्यार करने के लिए मजबूर नहीं कर सकती।"

—"मैं तुमसे प्यार करता हूँ।" रूडिन ने कहा।

नातालिया सीधी खड़ी हो गयी।

—"हो सकता है! लेकिन तुम किस प्रकार मुझसे प्यार करते हो? तुम अपनी बातों को याद करो, डमित्री नीकोलेवीच रूडिन! याद करो, तुमने मुझे क्या-क्या कहे थे। पूर्ण समता के बिना प्रेम सम्भव नहीं है। तुम मेरे लिए अति मात्रा में महान् हो, मैं तुम्हारे साथ शोभा नहीं दे सकती। मुझे अपनी उचित सजा मिल चुकी है। तुम्हारे सामने अनेक योग्यतर कार्य पड़े हैं।—आज का दिन मैं कभी नहीं भूलूँगी। विदाय।—"

—"नातालिया तुम जा रही हो ? क्या हम इस प्रकार बिछुड़ सकते हैं ?"

उसने नातालिया के लिए अपने हाथ बढ़ाये। नातालिया रुक गयी, मानो उसके प्रार्थना भरे स्वर से वह विचलित हुई।

—"नहीं !" अन्त तक नातालिया बोली ! "मुझे ऐसा लगता कि मेरे हृदय का सञ्चय नष्ट-भ्रष्ट हो गया है। मैं यहाँ आ कर तुम्हारे सामने प्रलाप बक रही थी लेकिन अब मेरी चेतना लौट आयी है। तुम्हीं ने तो कहा कि ऐसा नहीं हो सकता। ओफ् ! यहाँ आते समय मैंने अपने से तथा अपने अतीत से विदा माँग लिया था, लेकिन इसके बाद क्या हुआ ? यहाँ आ कर मैंने क्या पाया ? एक मरा हुआ हृदय। तुमने कैसे जाना कि मैं अपने परिवार का विरह नहीं सह सकूँगी। 'तुम्हारी माँ इसका समर्थन नहीं करतीं—यह कितना भयानक है'—अब तक केवल तुम्हारे मुख से यही सुनती रही। क्या तुम्हीं डूमिट्री रूडिन हो ? नहीं ! विदाय। यदि तुम मुझसे प्यार करते तो इसी क्षण उसका अनुभव कर सकती।—नहीं, नहीं, विदाय।"

वह अति द्रुतता से घूम कर माशा के पास दौड़ती हुई गयी जो घबड़ा कर बड़ी देर से उसे लौटने के लिए संकेत कर रही थी।

—"यह तुम हो, जो डर गयी, मैं नहीं।" रूडिन ने चीत्कार कर कहा।

उसके प्रति ध्यान न दे कर नातालिया खेतों को तय करते हुए घर की तरफ चलने लगी। वह बिना किसी सङ्कट के अपने सोने के कमरे में पहुँच गयी लेकिन वह मुश्किल से चौखट को पार सकी थी कि नहीं, उसकी सारी शक्ति लुप्त हो गयी और वह माशा की गोद में मूर्च्छित हो कर गिर पड़ी।

रूडिन बाँध पर देर तक खड़ा रहा। अन्त तक उसकी

चिन्ताशक्ति लौट आयी और वह अपने पथ से लौट चला। वह अपना पथ धीरे धीरे तय करने लगा। वह बहुत ही लज्जित और व्यथित हुआ था। वह अपने मन में सोचने लगा, 'कैसी अद्‌भुत लड़की, और उम्र केवल सत्रह साल की! नहीं, मैं उसे समझ नहीं सका, सचमुच वह बड़ी अद्‌भुत है, अद्‌भुत है उसकी मानसिक शक्ति। उसने ठीक ही कहा कि वह मेरे प्रेम से भी योग्यतर प्रेम पाने की योग्यता रखती है। क्या मैं उससे उस प्रकार प्रेम कर सका था?' रूडिन ने अपने आप से पूछा, "क्या मैं उसको प्यार नहीं करता? क्या इन सब का अन्त इस प्रकार होगा! सचमुच, मैंने उसके सामने अपने को कितना नालायक साबित किया।"

एक चारपहिये की घोड़ा-गाड़ी के आने की आवाज सुन रूडिन ने अपनी आँखें उठायीं। अपनी पुरानी गाड़ी को हाँकते हुए लेझ्नेव आ रहा था। उन्होंने कुछ कहे बिना एक दूसरे से अभिवादन-विनिमय किया और रूडिन मानो सहसा कुछ सोच कर मैडम लासुनस्काया के मकान की तरफ द्रुत चलने लगा।

लेझ्नेव ने उसका रास्ता छोड़ दिया और उसकी चलमान मूर्ति को एक टक देखता रहा। फिर न जाने क्या सोच कर अपने घोड़े को वोलीनस्टेव के घर चलने के लिए मोड़ा। वह रात भर वहीं था। उसने जा कर देखा वोलीनस्टेव सो रहा था। उसने नौकरों से उसे जगाने से मना किया और चाय की प्रतीक्षा में बरामदे में बैठ कर अपना 'पाइप' जलाया।

—:※:—

रूडिन—१०

वोलीनस्टेव प्रायः दस बजे सो कर उठा और यह सुन कर बहुत विस्मित हुआ कि लेझेनोव बरामदे में बैठा है, उसने उसे अपने घर में बुला भेजा।

—"क्या बात है?" उसने उससे पूछा, "तुम तो घर जा रहे थे न?"

—"हाँ, लेकिन रास्ते में रूडिन से भेंट हो गयी वह अकेला कहीं जा रहा था। वह बहुत ही विचलित दिखाई पड़ा जिस कारण मैं यहाँ लौट आने का निश्चय किया।"

—"तुम कहना चाहते हो, रूडिन से तुम्हारी भेंट हो गयी इसलिए लौट आये?"

"—देखो, सच तो यह है कि मैं क्यों लौट आया, मैं स्वयं नहीं जानता। हो सकता है तुम्हारी याद आयी और तुम से एक बार भेंट करने की इच्छा हुई। मुझे घर लौटने की इतनी जल्दी नहीं है।"

वोलीनस्टेव हँसने लगा—कटु हँसी।

—"मेरे बारे में सोचे बिना तुम रूडिन के बारे में सोच नहीं सकते, है न?—वहाँ कौन है?" वोलीनस्टेव ने पुकार कर कहा, "चाय लाना!"

दोनों मित्र चाय पीने लगे। लेझनोव ने अपने काम-काज के बारे में आलोचना शुरू की।

इसी बीच एकाएक वोलीनस्टेव उत्तेजित हो उठा और अपनी

आराम कुर्सी से उछल कर टेबुल पर इस वेग से आघात किया कि तश्तरियाँ और प्यालियाँ झनझना उठीं।

— "नहीं !" उसने कहा, "अब मैं ऐसा नहीं होने दूँगा ! मैं उस धूर्त आदमी को मुझे गोली मार देने के लिए कहूँगा अथवा मैं उसके ज्ञान से भरे मस्तक को गोली से उड़ा दूँगा।"

—"वाह् वाह्। इस तरह चिल्ला क्यों रहे हो ! लो मेरा 'पाइप' ही गिर गया। तुम्हें आज हो क्या गया है ?"

—"मै उसका नाम तक नहीं सुन सकता। उसका नाम सुनते ही मेरा खून खौल उठता है।"

—"खामोश, मेरे भाई खामोश ! इससे तुम्हें स्वयं लज्जित होना पड़ेगा। लेझेनोव ने मृदु फटकार के साथ कहा, "अब छोड़ो उसकी बात !"

—"उसने मेरा अपमान किया है, "वोलीनस्टेव कहता गया और घर के भीतर चहलकदमी करता गया। "उसने मेरा अपमान किया है, मैं यह खुद कहूँगा। पहले पहल मैं उतना समझ न सका था, सच पूछो तो मै उसे देख भौंचका सा हो गया था, क्यों कि सब कुछ अभावित था। लेकिन अब मैं उसे बताऊँगा कि उसने बहुत बुरे आदमी को छेड़ा है। मै उस कम्बख्त को इस प्रकार गोली स उड़ा दूँगा जैसे कि कोई तीतर को गोली से उड़ा देता है।"

—"सचमुच ! इससे तुम्हारा बड़ा फायदा होगा। लेकिन तुम्हारी बहन तुम्हारे उस काम को कितना पसंद करेगी उस बारे अभी कुछ नहीं कहूँगा। क्योंकि अभी तुम इतने गुस्से में हो कि अपनी बहन की बात सोच ही नहीं सकते। फिर किसी दूसरे की भी बात सोचो, क्या तुम समझते हो उसे मारने से ही सब-कुछ ठीक हो जायगा ?"

वोलीनस्टेव उछल कर आराम कुर्सी पर बैठ गया।

—"फिर मैं कहीं चला जाऊँ! मैं यहाँ रह कर जो दुःख पा रहा हूँ वह तुम नहीं समझ सकते। मैं क्या करूँ समझ में नहीं आ रहा है।"

—"तुम कहते हो तुम चले जाओगे। लेकिन वह दूसरी बात है। अगर कहीं जाना चाहते हो तो जा सकते हो। मैं तो कहूँगा, चलो, हम दोनों एक साथ कहीं चले जाँय—काकेशस अथवा थूक्रेन में। वहाँ जा कर उनका प्रसिद्ध खाना 'गाल्लूस्की' खायेंगे। सचमुच, तुमने बड़ी अच्छी सलाह दी।"

"—लेकिन बहन को किसके पास छोड़ जाऊँगा?"

—"क्यों। क्या पावलोवना हमारे साथ नहीं जा सकती? मैं कहता हूँ, अगर पावलोवना भी चलती है तो बहुत ही अच्छा होगा। उसकी देख भाल मैं करूँगा, उसका भार मैं लेता हूँ। उसे किसी बात की कमी नहीं होगी। मैं उस से कह दूँगा, कि हर रात उनके वातायन के नीचे हम प्रेम के गीत गाया करेंगे। फिर तुम्हें और मुझे क्या देखना, हम दोनों को तो एक नयी जिन्दगी मिल जायगी। हमारे गाड़ीवान पर इत्र छिड़काऊँगा और हमारे पथ पर फूल बिखेर दूँगा। फिर हम इतना आनन्द मनायेंगे कि जब लौट आयेंगे उस समय कूप्पे के समान मोटे हो कर लौट आयेंगे। फिर क्या देखना, नेक नजरों के तीर हमें छेद कर हमारे दिल तक नहीं पहुँच पायेंगे।"

—"तुम्हें तो हर समय मजाक सूझता है।"

—"अरे नहीं। मैं तो कह रहा हूँ कि तुमने बड़ी अच्छी सलाह दी।"

—"नहीं ये बेकार की बातें हैं। मैं उससे लड़ूँगा, मैं उससे लड़ना चाहता हूँ।"

—"फिर ऐसा कहते हो। आज तुम बहुत गुस्से में हो।"

इतने में एक नौकर एक चिट्ठी लाया।

—"किसने चिट्ठी भेजी ?" लेझेनोव ने पूछा।

—"द्मित्री नीकोलेवीच रूडिन ने, मेदम लासुनस्काया का एक नौकर यह चिट्ठी लाया था।"

—"रूडिन ने चिट्ठी भेजी ?" वोलीनस्टेव ने दोहराया, "किसके लिए ?"

—"आप के लिए महाशय।"

—"मेरे लिए ? तो दो मुझे !"

वोलीनस्टेव ने मानो वह चिट्ठी छीन ली, फिर शीघ्रता से उसे फाड़ कर उसके भीतर क्या लिखित था पढ़ने लगा। लेझेनोव वोलीनस्टेव की तरफ साग्रह देखता रहा। चिट्ठी को पढ़ते-पढ़ते वोलीनस्टेव के मुखमण्डल पर विस्मय तथा प्रसन्नता छाने लगी। वोलीनस्टेव ने मानो अलसा कर दोनों हाथ ढीले छोड़ दिये।

—"क्या लिखा है ?" लेझेनोव ने पूछा।

—"पढ़ो इसे।" वोलीनस्टेव ने धीरे से कहा और उसके हाथ में चिट्ठी दे दी।

लेझेनोव उसे पढ़ने लगा।

रूडिन ने लिखा था।

प्रिय वोलीनस्टेव,

मैं आज मैदम लासुनस्काया का मकान छोड़ कर चला जा रहा हूँ, हमेशा के लिए जा रहा हूँ। सम्भवतः यह सुन कर आप विस्मित होंगे विशेष कर गत दिवस की घटना के बाद। मेरे चले जाने के कारणों को मैं आपको समझा कर नहीं कह सकता फिर भी मेरे चले जाने का समाचार आपको दे देना आवश्यक समझता हूँ। आप मुझे नहीं चाहते थे। आप मुझे बहुत बुरा समझते थे।

मैं अपने को निर्दोष प्रमाणित करना नहीं चाहता, समय ही वह कार्य करेगा। मेरा अभिमत है, किसी भ्रांत धारणा के वशीभूत व्यक्ति को उसकी भ्रांत धारणा के बारे में कुछ कहना निष्फल और निरर्थक है। जो मुझे समझ सकेगा, वह मुझे अवश्य क्षमा करेगा लेकिन जो नहीं समझ पायेगा वह कैसे क्षमा करेगा ?—लेकिन उसकी निन्दा मुझे विचलित नहीं कर सकती। मैंने आपको समझने में भूल की थी आप मेरी दृष्टि में महान और उदार हैं। मैं समझता हूँ आप अपनी परिपार्श्विकताओं को छोड़ कर और ऊपर उठ सकते हैं। मैंने आपके बारे में भूल की थी। खेद की बात है वह न तो मेरी पहली भूल थी और न अन्तिम। जो हो, मैं चला जा रहा हूँ। प्रार्थना करता हूँ, आप सुखी हों। मुझे आशा है, आप मेरी इस प्रार्थना को पूर्णतया स्वार्थहीन ही समझेंगे। आशा करता हूँ, अब आप सुखी हो सकेंगे। सम्भवतः समय आने पर मेरे सम्बन्ध में आपकी धारणा भी बदल जावगी। मैं नहीं जानता, फिर हम एक दूसरे को देख सकेंगे कि नहीं, लेकिन हर समय बना रहूँगा।

आप का आन्तरिक शुभार्थी,

द्मित्री रूदिन।

पुनश्चः—दो सौ रूबल जो मैंने आप से उधार लिये थे अपने गाँव में पहुँच कर ही आप के निकट भेज दूँगा। और, आप से प्रार्थना करता हूँ आप इस चिट्ठी के बारे में मैदम लासुनस्काया कुछ भी न कहिये।

पुनः पुनश्चः—अन्तिम लेकिन आवश्यक अनुरोध : मैं चला जा रहा हूँ लेकिन मैं जो आपसे मिलने गया था उसके सम्बन्ध में नातालिया से कुछ भी न कहिये।

—"कहो, अब तुम क्या कहना चाहते हो" लेभ्मेनोव ने उस पत्र को पढ़ कर समाप्त किया कि वोलीनस्टेव ने उससे पूछा।

—"अब मैं क्या कहूँगा ?" लेभ्मेनोव ने कहा। अब क्या! गाल पर हाथ रख कर विस्मय के मारे भगवान का नाम लो। वह चला गया, मैं कहता हूँ, अच्छा हुआ। लेकिन आश्चर्य की बात यह रही कि तुम्हारे निकट एक पत्र लिखना भी उसने अपना कर्तव्य समझा। वह तुम से मिलने भी आया इसी कर्तव्य को पूरा करने के लिए। हर बात को ऐसे लोग अपना कर्तव्य समझ बैठते हैं। और, कोई न कोई कर्तव्य अथवा ऋण हमेशा ये लोग अपने ऊपर ले रखते हैं।" लेभ्मेनोव ने हँसते हुए उस पत्र के 'पुनश्च' की तरफ संकेत कर पुनः कहा।

—"फिर उसकी शब्द-योजनाओं को भी देखो।" वोलीनस्टेव चिल्ला कर कह उठा, "उसने मेरे बारे में भूल की थी, वह समझता है, मैं अपनी पारिपार्श्विकताओं को छोड़ कर और ऊपर उठ सकता हूँ। ओफ् ! कैसी बेकार की बातें ! यह तो एक कविता से भी बढ़ कर है।"

लेभ्मेनोव ने कोई उत्तर नहीं दिया लेकिन उसकी आँखें एक क्षण के लिए चमक उठीं।

वोलीनस्टेव उठा। उसने कहा, "अभी मैं मैदम लासुनस्काया के यहाँ जाऊँगा। मैं इन सब का मतलब जान कर ही रहूँगा।"

—"जरा रुको, मेरे भाई ! जरा उसे चले तो जाने दो। फिर उसके पीछे क्यों दौड़ रहे हो ? वह तो हमेशा के लिए चला ही जा रहा है, अब क्या चाहते हो ? इससे अच्छा है, अभी जाओ और थोड़ा सो लो। मेरे ख्याल से रात भर तुम करवटें ही बदल रहे थे। लेकिन जो हो, अब तुम्हारा सब कुछ ठीक हो जायगा।"

—"लेकिन ऐसा कैसे कह रहे हो ?"

—"हाँ मुझे ऐसा ही लग रहा है। सचमुच, अभी तुम जरा लेट जाओ, मैं तुम्हारी बहन के पास जा कर बैठता हूँ।"

—"मुझे सोने की इच्छा नहीं है! क्यों मैं सोऊँगा। मेरा तो दौड़ने को जी चाहता है। जाऊँ, जरा खेतों तक दौड़ता हुआ जाऊँ।" वोलीनस्टेव ने अपना कोट सम्भाल कर कहा।

—"यह भी अच्छी बात है। जाओ, जरा बाहर घूम आओ।"

लेझेनोव पावलोवना के घर की तरफ गया।

× × ×

लेझेनोव ने जा कर देखा, पावलोवना अपने कमरे में बैठी है। पावलोवना ने उसका उच्छ्वसित स्वागत किया। वह लेझेनोव को देखते ही खुश होती थी। लेकिन आज उसके मुख पर चिन्ता का आभास था। परसों रूडिन के आने से वह कुछ चिन्तित हो पड़ी थी।

—"आप ने मेरे भाई साहब को देखा?" उसने लेझेनोव से से पूछा "वे आज कैसे हैं?"

—"वे अच्छे हैं, जरा खेतों में गये हैं।"

पावलोवना एक क्षण के लिए चुप रही। उसने अपने रूमाल की कशीदाकारी को देखते हुए पूछा, "कृपा करके कहिये, किस अभिप्राय से—!"

—"रूडिन आये थे?" लेझेनोव बीच ही बोल उठा। "कहता हूँ, वह आया था अलविदा करने।"

पावलोवना ने मस्तक उठा कर देखा।

—"वे अलविदा करने आये थे?"

—"हाँ! क्या आपने अभी तक नहीं सुना? वह तो मैदम लासुनस्काया का मकान छोड़ कर चला जा रहा है।"

—"चले जा रहे हैं?"

—"हाँ, सदा के लिए, कम से कम उसके कहने के अनुसार।"

—"लेकिन मैं नहीं समझ सकी, इतनी बातों के हो जाने पर—।"

—"अरे वह दूसरी बात है। उसका मतलब निकालना असम्भव है, लेकिन बात कुछ ऐसी ही है। सम्भवतः दोनों में कुछ अनबन हुई है। उसने रस्सी को खींचा था कसकर इसलिए वह टूट गयी।"

पावलोवना बोली, "लेमेनोव, कुछ भी मेरी समझ में नहीं आ रहा है। मालूम पड़ता, आप मुझसे मजाक कर रहे हैं।"

—"ईश्वर के नाम पर कहता हूँ—नहीं! मैं कहता हूँ, वह चला जा रहा है और उसने अपने मित्रों को इस बारे में पत्र भी लिखा है। खैर, एक तरह से अच्छा ही हुआ। लेकिन उसके चले जाने से हमारा एक बढ़िया कार्यक्रम बिगड़ गया, अभी अभी उसके सम्बन्ध में आपके भाई साहब से बातें हो रही थीं।"

—"कार्यक्रम! कैसा कार्यक्रम?"

—"वह यह है कि मैं आपके भाई साहब से एक 'प्रमोद-भ्रमण' का प्रबन्ध करने के लिए कह रहा था उसमें आप भी होतीं। आपकी देखभाल का भार मुझ पर होता।"

—"कितना अच्छा होता।" पावलोवना ने ताना मार कर कहा; "मैं अभी से उसकी कल्पना कर सकती हूँ कि किस प्रकार मेरी देखभाल करते। आप तो मुझे खाने वगैरह ही मार डालते!"

—"आप इसलिए ऐसी कह रही हैं कि आप मुझे नहीं जानतीं। क्या आप मुझे काठ का उल्लू समझती हैं? क्या आप नहीं जानतीं कि मैं शक्कर के समान गल सकता हूँ और घुटने के बल बैठे दिन बिता सकता हूँ?

—"सचमुच, आपकी वह दशा देखने की अभिलाषा मुझे है।"

एकाएक लेभ्नेनोव खड़ा हो गया, "अगर मेरी वैसी दशा देखना चाहती हैं तो मुझ से शादी कर लीजिये फिर उस सौभाग्य से वंचित न होंगी।"

पावलोवना लाल हो उठी।

—"क्या आप यही कह रहे हैं?" पावलोवना कुछ घबड़ा कर बोली।"

—"हाँ मैं यही कह रहा हूँ, जिसे मैंने हजार बार कहना चाहा और जो बात मेरी जबान पर थी। आखिर वह बात निकल पड़ी मेरे मुख से, अब आप जो चाहे कर सकती हैं? लेकिन अभी मैं आपको घबड़ाहट में नहीं डालना चाहता इसलिए मैं जा रहा हूँ। अगर आप मेरी पत्नी बनना स्वीकार करती हैं, अगर आपको मेरा यह प्रस्ताव अच्छा लगता है तो मुझे बुला लिजियेगा, मैं समझ जाऊँगा। अभी मैं जा रहा हूँ!"

पावलोवना ने लेभ्नेनोव को रोकना चाहा परन्तु वह शीघ्रता से बाहर चला गया। वह घर ही में अपनी टोपी छोड़ कर बगीचे में चला गया और वहाँ एक छोटे फाटक के सहारे खड़ा हो गया। उसकी आँखें कहीं दूर निबद्ध थीं।

—"महाशय लेभ्नेनोव।" पीछे से नौकरानी की आवाज सुनाई पड़ी, "मेरी मालकिन आपको बुला रही हैं, आपसे वे मिलना चाहती हैं, कृपया अन्दर आइये।"

लेभ्नेनोव एकाएक घूम पड़ा। उसने उस नौकरानी को विस्मित कर उसका मस्तक पकड़ लिया और उसका ललाट चूमा। फिर वह पावलोवना के पास गया।

—:※:—

रूडिन—११

लेभेनोव से साक्षात् करने के बाद रूडिन सीधे अपने घर को लौट आया और फिर उसने कमरे के दरवाजे बन्द कर दो चिट्ठियाँ लिखीं : एक वोलीनस्टेव के नाम (जिससे पाठक परिचित हैं) और दूसरी नातालिया के नाम। दूसरी चिट्ठी को उसने बहुत देर बैठ कर लिखा, उसने उसमें बहुत काट-छाँट की और कहीं-कहीं दो बारा लिखा। फिर उसने एक बढ़िया लिखने के कागज पर उसकी नकल की फिर उसे जितना हो सका छोटा करके मोड़ा और अपने जेब में रख लिया। उसके मुख पर विषाद छाया हुआ था। वह घर के भीतर चहलकदमी करने लगा। अन्त तक वह खिड़की के पास जाकर एक आराम कुर्सी पर बैठ गया और उसने अपना चिबुक हथेली पर रखा। धीरे-धीरे उसकी आँखें भींग उठीं—वह उठा। उसने अपने कोट के बटन लगा लिये, फिर नौकर को बुला कर उसे मैदम लासुनस्काया से पूछ आने के लिए भेजा कि वह मैदम से एक बार साक्षात् कर सकता है कि नहीं।

नौकर शीघ्र ही लौट आया, उसने कहा कि मैडम उससे मिलना चाहती है। रूडिन मैडम के पास गया।

मैडम लासुनस्काया रूडिन से अपने पढ़ने के कमरे में मिली जैसे कि वह दो महीने पहले मिली थी। जो हो, इस बार वह अकेली न थी, पांडालेवस्की भी वहाँ बैठा था—सदा की भाँति मिलनसार, प्रसन्न, अनुरागी और साफ-सुथरा।

मैदम ने सविनय रूडिन का स्वागत किया। रूडिन ने भी सविनय उसका अभिवादन किया। लेकिन मैदम तथा पांडालेवस्की के होठों पर हँसी की जो छटा थी उसे देख कर मनुष्य-स्वभाव का कोई भी अध्ययनकारी यह बता सकता था कि उनके बीच कोई ऐसी अप्रीतिकर बात अवश्य हुई है जो व्यक्त नहीं की जा सकती। रूडिन जानता था कि मैदम उस पर प्रसन्न नहीं है और मैदम सोच रही थी कि रूडिन को सब कुछ मालूम हो गया है।

पांडालेवस्की द्वारा रूडिन की की गयी निंदा से मैदम सचमुच विचलित हो उठी थी, उसके अभिजात्य पर आघात लगा था। रूडिन जैसे एक गरीब, परिचयहीन व्यक्ति ने उसकी पुत्री से गुप्त प्रणय स्थापित करने का साहस किया था। डारया मीखेलोवना लासुनस्काया की पुत्री से गुप्त प्रणय!

—"मानती हूँ, वह बहुत ही बुद्धिमान और प्रतिभावान है, लेकिन उससे क्या! इसका मतलब यह नहीं कि कोई भी मेरा जामाता बन सकता है!" मैदम ने यह युक्ति दिखायी थी।

—"मैं तो बड़ी देर तक अपनी आँखों पर विश्वास ही न कर सका था। सचमुच, अगर कोई व्यक्ति अपनी स्थिति को नहीं समझ सकता तो कैसी शर्म की बात होती।" पांडालेवस्की ने कहा था।

मैदम क्रोध में आकर नातालिया को भला-बुरा बहुत कुछ कहा था।

मैदम ने रूडिन को बैठने के लिए कहा। रूडिन बैठा। लेकिन वह पहले का रूडिन नहीं था, जो प्रायः इस मकान का मालिक ही था, न तो वह एक पूर्व परिचित मित्र के समान ही दिखाई पड़ा, बल्कि वह अब एक नये अतिथि के समान था—एक अनाहूत अतिथि के समान। लेकिन यह सब एक क्षण में हो गया—मानो

तरल जल क्षण भर में जम कर वर्फ में परिणत हो गया।

—"मैं आपको धन्यवाद देने आया हूँ मैदम, "रूडिन ने कहा" आपकी अतिथिपरायणता के लिए धन्यवाद देने। मेरे छोटे से गाँव से कोई खबर आयी है इसलिए मैं आज ही अवश्य चला जाऊँगा।

मैदम ने रूडिन की तरफ ध्यान पूर्वक देखा। उसने अपने मन में सोचा कि रूडिन सब कुछ जान गया है। जो हो यह अच्छा ही हुआ, उसने मुझे अप्रीतिकर कैफियत के झमेले से बचा लिया। ईश्वर इन बुद्धिमान लोगों का भला करें।

—"सचमुच ?" मैदम ने प्रकटकर कहा,"लेकिन यह कैसी बात हुई ! जो हो, अगर आपको जाना ही पड़े तो जाड़े में मास्को जा कर वहाँ आपकी प्रतीक्षा करूँगी, हम शीघ्रही यहाँ से जानेवाले हैं।"

—"कह नहीं सकता मैदम, मास्को में जा सकूँगा कि नहीं। अगर जा सका तो आपसे साक्षात् करना मेरा एक कर्तव्य होगा।"

अब पांडालेवस्की के सोचने की बारी थी। वह अपने मन में सोचने लगा, क्यों जी कल तक तो तुम इस मकान का मालिक बने बैठे थे लेकिन आज यह कैसी बातें कर रहे हो। उसने अपने स्वाभाविक नपे तुले स्वर में कहा, "संभवतः आपके गाँव से कोई दुस्समाचार आया है ?"

—"हाँ !" रूडिन ने रूखे स्वर में उत्तर दिया।

—"संभवतः अच्छी फसल नहीं हुई ?"

—"नहीं। दूसरा कारण है।—विश्वास कीजिए मैदम, आपके यहाँ रह कर मुझे जो आनन्द मिला है उसे कभी नहीं भूलूँगा।" रूडिन ने कहा।

—"और मैं भी। आपसे परिचित होकर मुझे भी जो आनन्द मिला हमेशा उसकी याद करती रहूँगी।—आप कब जा रहे हैं ?"

—"आज ही, भोजन करके—।"

—"इतनी जल्दी! जो हो, आपकी यात्रा आनंददायक हो, ऐसी प्रार्थना करती हूँ। अगर आपका काम शीघ्र ही खत्म हो जाता है तो आप चले आइयेगा, कुछ दिन यहाँ और रहने का विचार है।"

रूडिन ने आसन छोड़ते हुए कहा, "संभवतः नहीं आ सकूँगा। इसलिए आप मुझे अवश्य क्षमा करेंगी। और, आपका ऋण मैं अभी इसी क्षण परिशोध नहीं कर सकता लेकिन गाँव में पहुँचते ही—।"

—"अरे महाशय रूडिन, उसका उल्लेख न कीजिये!" मैडम ने उसे रोक कर कहा। "खैर, अभी क्या समय होगा?"

पांडालेवस्की ने अपने जेब से मीने का काम की हुई सोने की छोटी घड़ी निकाली और सावधानी से अपने सफेद कड़े कालर पर अपना रक्तिम गाल न्यस्त कर समय देखा।

—"दो बज कर तैंतीस मिनट हुए हैं।" उसने कहा।

—"अच्छा अब कपड़े बदलने का समय हो गया है," मैडम ने कहा, "अच्छा द्मिट्री रूडिन, विदाय।"

रूडिन कमरे से निकल गया।

रूडिन और मैडम लासुनस्काया में जो वार्तालाप हुआ, वह अद्भुत प्रकार का था। इसी प्रकार अभिनेता अपनी-अपनी भूमिकाओं की पूर्व-प्रस्तुति करके मंच पर आते हैं अथवा राजनीतिक पहले से निश्चित किये हुए वाक्यों का आदान-प्रदान सभा-स्थल में आ कर करते हैं।

अब रूडिन अपने अनुभव से जान गया कि किस प्रकार से समाज के लोग किसी व्यक्ति-विशेष का परित्याग करते हैं, केवल परित्याग नहीं बल्कि जब किसी का प्रयोजन समाप्त हो जाता है उस समय उसे इस प्रकार तुच्छता से दूर फेंकते हैं जैसे नाच के

बाद दस्ताने, मिठाई लपेटने के कागज अथवा हारी हुई लाटरी के टिकट फेंके जाते हैं ।

रूडिन ने शीघ्रता से जाने की प्रस्तुति की और अधीरता से विदाय के क्षण की प्रतीक्षा करने लगा । मैडम लासुनस्काया के मकान के सभी उसके जाने की बात सुन कर विस्मित हुए । नौकर-चाकर सभी विमूढ़ हो उसकी तरफ देखने लगे । बासिस्टोफ ने अपने दुःख को छिपाने का प्रयत्न नहीं किया । नातालिया रूडिन से दूर ही रही । उसने रूडिन के सामने आना स्वीकार नहीं किया । जो हो, रूडिन नातालिया के हाथ में वह पत्र देने में समर्थ हुआ । भोजन के समय मैडम ने पुनः रूडिन से कहा कि मास्को के लिए रवाना होनेके पहले वह रूडिन को एक बार देखना चाहती है परंतु रूडिन ने कोई उत्तर न दिया । पांडालेवस्की ने उससे बातें करने की कोशिश की । रूडिन को भी बार-बार उसके ऊपर झपटने तथा उसके लाल लाल और मोटे-ताजे चेहरे की मरम्मत घूसे से करने की इच्छा हुई । कुमारी बोनकोर्ट धूर्तता भरी दृष्टि से बार-बार रूडिन को देखती रही, कभी कभी होशियार बूढ़े शिकारी कुत्ते की आँखों में ऐसी दृष्टि पायी जाती है । मानो वह अपने आपसे कह रही थी 'हाँ ! अब तुम्हें मजा चखना पड़ा है ।'

अंत तक छः बजे, रूडिन की गाड़ी दरवाजे के पास आ कर खड़ी हुई । अब वह शीघ्रता से सब के निकट विदाय माँगने लग गया । उसका हृदय भारी और पीड़ित हो उठा । इस तरह यह मकान छोड़ने की उम्मीद उसने नहीं की थी । उसे ऐसा लगा कि वह निकाला जा रहा है । एक बार वह अपने मन में सोचने लगा, 'यह कैसा हो रहा है । ये कैसी चिंताएँ मेरे दिमाग को घेर रही हैं । जो होना था, हुआ । अच्छा ही हुआ ।' रूडिन जब झुक-झुक कर सब के निकट विदाय-संभाषण जता रहा था उस समय उसके मस्तिष्क में

ऐसी ही चिंताएँ उमड़ रही थीं। उसने अन्तिम बार के लिए नातालिया को देख लिया। मन मसोस कर रह जाने के सिवाय वह और कर ही क्या सकता था? नातालिया की दर्द और विछोह भरी दृष्टि मानो उसे धिक्कार रही थी!

रूडिन शीघ्रता से जीने पर से उतरने लगा और नीचे आकर अपनी गाड़ी में उछल कर बैठ गया। बासिस्टोफ स्वेच्छा से उसके साथ आया था, अब उसे कुछ दूर पहुँचा देने के लिए बासिस्टोफ उसके साथ गाड़ी के भीतर बैठ गया।

रूडिन ने उससे कहा, "तुम्हें याद है" उस समय देवदार-शोभित चौड़ी सड़क पर गाड़ी आ गयी, "जब डान कुइकजोट ड्यूक-पत्नी के दरबार से चला जा रहा था उस समय उसने अपने साथी से क्या कहा था? उसने कहा था, स्वतंत्रता ही एक मात्र मूल्यवान उपहार है जिसे भगवान ने मनुष्यों को दिया है। वही सुखी है जिसे भगवान ने रोटी का एक टुकड़ा दिया है और वह उस रोटी के टुकड़े के लिए और किसी के निकट नहीं केवल ईश्वर के निकट ही कृतज्ञ है। उस समय डान कुइकजोट को जैसा अनुभव प्राप्त हुआ था इस समय मुझे भी वैसा अनुभव प्राप्त हो रहा है। प्रार्थना करता हूँ बासिस्टोफ, एक दिन तुम्हें भी यह अनुभव प्राप्त हो।"

रूडिन की बातों ने बासिस्टोफ का हृदय स्पर्श किया। उसने रूडिन का हाथ थाम लिया और उस युवक का सरल हृदय उत्साह से स्पंदित होने लगा। अगली सराय तक पहुँचने के पूर्व पर्यन्त रूडिन केवल मनुष्यों के अहंकार और सच्ची स्वतंत्रता के तात्पर्य के संबंध में कहता गया। उसने बहुत सी सच्ची बातें स्वाभाविक आग्रह और आंतरिकता से कहीं और जब विदाय की घड़ी आयी बासिस्टोफ अपने को रोक न सका; रूडिन को गले से लगा कर

आँसू बहाने लगा । रूडिन की आँखों से भी आँसू की धाराए बहीं परंतु वह बासिस्टोफ से बिछुड़ने के कारण नहीं रो रहा था बल्कि ये उसके अभिमान के आँसू थे ।

* * *

नातालिया अपने कमरे में जा कर रूडिन का पत्र पढ़ने लगी । उसने लिखा था—

प्रिय नातालिया,

मैं ने जाने का निश्चय कर लिया है । मुझे कोई दूसरा उपाय नहीं है । मैं ने निकाले जाने के पूर्व ही जाने का निश्चय कर लिया । मेरे चले जाने से सब कुछ ठीक हो जायगा और कोई मेरे लिए दुःखित भी नहीं होगा । क्यों होगा ? होता ऐसा ही है लेकिन क्यों मैं तुम्हें यह पत्र लिख रहा हूँ ?

संभवतः मैं तुम्हारे निकट से सदा के लिए चला जा रहा हूँ और, मैं जिस योग्य हूँ अगर उससे भी तुम मुझे बुरा समझती हो तो मेरे खेद का अंत न होगा । इसीलिए मैं तुम्हारे निकट यह पत्र लिख रहा हूँ । न तो मैं अपने को निर्दोष ही साबित करना चाहता और न किसी को दोषी, अगर दोष किसी का है तो बस मेरा ही । मै अपने बर्तावों का विश्लेषण जहाँ तक हो सका तुम्हारे निकट करूँगा । पिछले दो- चार दिनों की घटनाएँ सचमुच आकस्मिक और अभावित्त थीं ।

हमारा आज का यह गुप्त साक्षात्कार हमेशा के लिए मेरे सामने शिक्षा का एक विषय-सा बना रहेगा । हाँ, तुम्हीं ने ठीक कहा था । मैं समझता था कि मैं तुम्हें जानता हूँ, लेकिन नहीं । इस जीवन में अनेक प्रकारों के लोगों से मिल चुका हूँ, अनेक स्त्रियों से और लड़कियों से मित्रता भी हुई लेकिन उनमें तुम्हीं प्रथम हो जिसका हृदय

यथार्थ में उदार और पवित्र है। मैं तुम्हें देख कर विस्मित हो गया, तुम्हारा प्राप्य तुम्हें न दे सका। पहली बार देखते ही मैं तुम्हारे प्रति आकृष्ट हो गया था संभवतः यह तुम जानती होगी। मैं तुम्हारे पास घंटों तक रहा पर तुम्हें पहचान न सका। सच कहता हूँ मैं तुम्हें जानने की कोशिश नहीं की और अब भी मैं अपने मन में सोचता हूँ कि मैं सचमुच तुम से प्यार करने लगा था, जिस पाप का परिणाम अब भोग रहा हूँ।

और एक बार मैंने एक स्त्री से प्यार किया था और उस स्त्री ने भी मुझसे प्यार किया। उसके प्रति मेरा मनोभाव सरल नहीं था, उसका मनोभाव भी मेरे प्रति सरल न था और उससे अच्छा ही हुआ कि उसका स्वभाव सरल न था। परन्तु उस समय मुझे वास्तविक सत्य का ज्ञान नहीं हुआ था। सत्य के सम्मुख खड़े होकर भी मैंने उसे नहीं देखा। अब मैं उसे देख रहा हूँ लेकिन काफी देर हो गयी है। अतीत को लौटने का कोई उपाय नहीं रह गया। हमारे जीवन एक सूत्र में बँध सकते थे लेकिन अब वे कभी नहीं बँधेगे। अब मैं कैसे कह सकता कि मैं भी तुम्हारे साथ सच्चा प्यार करने में समर्थ था—आंतरिक प्रेम, कल्पना का नहीं—लेकिन यह कैसे हो सकता जब मैं स्वयं यह नहीं कह सकता कि मैं उस प्रेम के योग्य हूँ या नहीं।

प्रकृति ने मुझे बहुत-कुछ दिया था—यह मैं ही जानता हूँ और झूठी नम्रता के कारण मैं उसे तुमसे नहीं छिपाना चाहता, विशेष कर इस समय, इस कटु अनुभव तथा अपमान के मुहुर्त में। हां, प्रकृति ने मुझे बहुत-कुछ दिया था लेकिन मैं अपनी प्रतिभा के योग्य किसी काम के किये, बिना, अपना चिह्न पीछे छोड़े बिना ही संसार से मिट जाऊँगा। मेरे सभी संपद यों ही बर्बाद हो जायेंगे। मैं जिस कार्य का प्रारंभ कर रहा हूँ मैं उसका फल नहीं देख सकूँगा।

मेरे अन्दर एक बहुत बड़ा अभाव है, कह नहीं सकता वह कैसा अभाव है। संभवतः मेरे अन्दर कुछ ऐसा अभाव है जिसके कारण मैं लोगों का हृदय चञ्चल नहीं कर सकता, स्त्रियों का हृदय जीत नहीं सकता; केवल किसी की बुद्धि-वृत्तिपर आधिपत्य विस्तार करना अनिश्चित भी है और निरर्थक भी है। मेरा भाग्य स्वयं अद्भुत और हास्यकर है। मैं अपने को पूर्णतया उत्सर्ग करना चाहता, पूर्ण आंतरिकता के साथ उत्सर्ग करना चाहता लेकिन फिर भी वैसा करने को मैं अशक्त हूँ! मैं जानता हूँ, मैं किसी मूर्खतापूर्ण काम के करने में ही अपने को समाप्त कर दूँगा जिसमें मेरा बिन्दु मात्र भी विश्वास न होगा। ओफ्! पैंतिस साल की उम्र में भी कुछ नये सिरे से करने का प्रयत्न कर रहा हूँ!

इसके पहले मैंने और किसी के निकट अपने को इतना प्रकट नहीं किया—यह मेरा अंगीकार है।

जो हो, मैंने अपने बारे में बहुत कुछ कहा। अब मैं तुम्हारे बारे में कुछ कहना चाहता हूँ, तुम्हें कुछ उपदेश देना चाहता हूँ, क्योंकि मैं तुम्हारे किसी और काम में नहीं आ सकता।—तुम्हारी अवस्था कम है, लेकिन जितने दिन भी तुम जीवित रहोगी हमेशा अपने हृदय की प्रेरणा का अनुगमन करना, न अपनी अथवा किसी और की बुद्धि वृत्ति का। विश्वास करो, जीवन का दायरा जितना सरल और संक्षिप्त होता है उतना ही अच्छा। जीवन के किसी नये रूप का आविष्कार करना कोई महान कार्य नहीं है बल्कि जीवन के प्रत्येक पहलू की समय से पूर्णता-प्राप्ति ही जीवन का लक्ष्य होनी चाहिए। अपनी तरुणाई में जो तरुण है वह सुखी है—लेकिन देख रहा हूँ मेरा यह उपदेश तुम पर नहीं बल्कि मुझ पर अधिक प्रयुक्त हो सकता है।

सच कहता हूँ नातालिया, मैं अपनी स्थिति से बहुत ही असुखी हूँ। तुम्हारी माँ के प्राणों में मैंने जिस भावना को संजीवित किया उसके स्वरूप से अपने को वञ्चित नहीं किया। जो हो, मैंने आशा की थी कि कुछ काल के लिए तो मुझे आश्रय मिल ही गया लेकिन अब मुझे पुनः गृहहीन होकर दर-दर भटकना पड़ेगा। तुम्हारी बातें, तुम्हारी मधुर उपस्थिति और तुम्हारी बुद्धि-दीप्त उत्सुक दृष्टि का अभाव—जिसका अनुभव मैं अपने हृदय से कर रहा हूँ—कैसे और किसके द्वारा दूर होगा ? अब मैं अकेला हूँ अपने को कोसने के लिए, लेकिन यह तुम्हें मानना ही पड़ेगा कि अदृष्ट हमारे साथ कटु परिहास करने लगा है। सात दिन पहले भी मैंने अनुमान नहा किया था कि मैं तुमसे प्यार करता हूँ। लेकिन परसों शाम को बगीचे में तुमने मुझसे यह कहा—लेकिन तुम्हारी कही हुई बातों की याद तुम्हें दिलाने से क्या फायदा ? और आज, आज मैं चला जा रहा हूँ—लज्जित, अपमानित होकर चला जा रहा हूँ, जाते समय तुम्हारे समक्ष दर्दभरी कैफियत छोड़ता जा रहा हूँ और भविष्य के लिए अन्तहीन निराशा। मेरे दोषों का भयानक उदाहरण तुम्हारे सामने उपस्थित है फिर भी तुम सचेत नहीं होती। जो हो, मैं बेवकूफों की तरह बहुत कुछ कह लेता हूँ—मैं बहुत ही वाचाल हूँ लेकिन अब वह कह कर क्या होगा ! मै तो सदा के लिए चला जा रहा हूँ।

(यहाँ रूडिन ने वोलीनस्टेव से साक्षात्कार होने की बातें लिखी थीं परन्तु दो बारा सोच कर वे पंक्तियाँ काट दीं और वोलीनस्टेव के पत्र में दूसरा पुनश्च जोड़ दिया।)

आज सवेरे तीव्र व्यङ्ग के साथ तुमने कहा था कि मैं ही इस दुनियाँ में अकेला रह गया अपने से भी योग्यतर कामों में नियुक्त

करने के लिए। अफसोस ! अगर मैं सचमुच अपने को उन कामों में नियोजित करता और अपने इस आलस्य को आखिरकार दूर भगाता। लेकिन नहीं, मैं हमेशा ही अपूर्ण बना रहूँगा जैसा कि मैं सदा से हूँ। मेरी पहली बाधा ही मुझे पूर्णरूप से बेकार बना देगी। तुम्हारे और मेरे बीच जो कुछ घटित हुआ उससे तो यही प्रमाणित होता। अगर मैं अपने प्रेम की बलि आगामी कर्तव्यों और लक्ष्यों के लिए देता तो कितना अच्छा होता! लेकिन नहीं, मैं तो सरासर अपने उत्तरदायित्व को देख कर ही डर गया और इसीलिए मैं तुम्हारे योग्य नहीं हूँ। अपने लिए तुम्हें तुम्हारे परिवेश से अलग कर दूर ले जाने के योग्य मैं नहीं हूँ। हो सकता है, यह सब अच्छा ही हुआ। संभवतः इस परीक्षा से गुजर कर मैं और भी पवित्र और सबल इन्सान बन सकूँगा।

मैं तुम्हारे परिपूर्ण कल्याण के लिए ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ। विदाय। कभी कभी मुझे अपने स्मरण में लाना। आशा करता हूँ भविष्य में मेरे सम्बन्ध और भी कुछ सुन सकोगी।

नातालिया ने रूडिन के पत्र को थामे हाथों को अपनी गोद पर ढीला छोड़ दिया और बहुत देर तक इस प्रकार चुपचाप बैठी रही। उसकी निविष्ट आँखें केवल फर्श को देखती रहीं। सभी युक्तियों से भी स्पष्ट प्रमाण इस पत्र ने दिया कि रूडिन वास्तव में उससे प्रेम नहीं करता और उस दिन सबेरे रूडिन से बिछुड़ने के समय नातालिया ने संयोगवश जो कुछ कहा था वह ठीक था कि रूडिन उससे वास्तविक प्रेम नहीं करता। लेकिन इससे भी विशेष सांत्वना न मिली। वह स्पंदन-रहित हो कर बैठी रही और उसे ऐसी प्रतीति हुई कि घने अंधकार की उत्ताल तरंगें उमड़-उमड़ कर उसे घेर रही हैं और वह एक चेतनाहीन जड़ के समान असहाय अवस्था में उस अन्धकार के समुद्र में डूबती जा रही है।

मोह से मुक्ति पाने की प्रथम अनुभूति सदा ही दुःखदायिनी होती है। लेकिन एक आंतरिकता से पूर्ण हृदय कभी आत्म-वञ्चना में आश्वासन नहीं ढूँढ़ता, दांभिकता और दीनता से उसका परिचय नहीं होता—यह सब उसके लिए असहनीय होता है।

नातालिया को अपने बचपन की याद आयी जब वह शाम को टहलने निकला करती थी। उस समय न जाने क्यों उसके पाँव दीप्त आकाश की छटा से आलोकित स्थान को ही चले जाते थे। अन्धकार से उसका दम घुटने लगता था। अस्तगामी सूर्य के प्रकाश से उज्ज्वल आकाश-खण्ड के प्रति ही उसका आकर्षण बना रहता था अन्धकार के प्रति नहीं। लेकिन अब उसका भविष्य जीवन अन्धकारमय दिखाई पड़ा और उसका अतीत जीवन आलोकित।

नातालिया की आँखों में आँसू भर आये। लेकिन हर समय अश्रु-प्रवाह शान्ति नहीं देता। अश्रु-प्रवाह सुखकर और कल्याणकर तभी होता है जब वर्षों हृदय में रुद्ध रहने के पश्चात् उमड़ उठता है और एक बार उमड़ उठने के बाद ही वह रुद्ध प्रवाह कोमल और सहज धाराओं में परिवर्तित होता है। तभी अन्तर की भाषाहीन तीव्र व्याथा शांत होती है। लेकिन ठंढे आँसू भी हैं जो धीरे धीरे बहते हैं जो दुःख के भयानक और अचल भार से निष्पेषित हृदय से निर्गत होते हैं।, वे शांति नहीं लाते—सांत्वना नहीं लाते। भयानक गरीबी ही ऐसा आँसू बहा सकती है और सचमुच वह अभी तक असुखी नहीं है जिसने इस प्रकार आँसू नहीं बहाया। नातालिया को आज इसका प्रथम अनुभव मिला।

दो घंटे बीत गये। नातालिया किसी प्रकार अपने देह-भार

को खींच कर खड़ी हुई। आँखें पोंछ लीं, फिर उसने एक मोमबत्ती जला कर उसकी लौ में रूडिन के पत्र को जलाया और उसकी राख खिड़की के बाहर फेंक दी। फिर उसने पुशकिन की एक किताब खोली और जो पंक्तियाँ आँखों के सामने आयीं उन्हीं को पढ़ने लगी। वह अक्सर ऐसे अवसरों पर ऐसा ही करती थी। उसने जो पंक्तियाँ पढ़ीं उसका भावार्थ निम्नलिखित है।

जिसने प्रेम किया, वह तो बीते दिनों के भूतों से ग्रस्त हो गया। सुख उसके लिए नहीं है। उसके लिए बीते दिनों की याद साँप के डसने के समान होती और पश्चात्ताप की अग्नि से उसका हृदय जला जाता।

नातालिया कुछ क्षण के लिए चुपचाप खड़ी रही। उसने एक बार अपने को दर्पण में देख लिया। उसके होंठों पर शीतल हँसी दिखाई पड़ी। उसने कुछ सोच कर दो बार सर हिलाया फिर नीचे बैठने के कमरे में आयी।

मैदम लासुनस्काया ने नातालिया को देखते ही अपने पढ़ने के कमरे में बुला लिया और अपनी बगल में बिठा लिया, फिर उसके गालों पर थपकी देते हुए मैदम ने देर तक अपनी पुत्री की आँखों को देखती रही, विस्मित हो कर देखती रही, ध्यान से देखती रही। मैदम लासुनस्काया मन ही मन घबड़ा उठी, उसे ऐसा लगा कि वह अपनी सन्तान को अब तक नहीं पहचान सकी थी। जब पांडालेवस्की ने रूडिन और नातालिया के साक्षात्कार के सम्बन्ध में मैदम से कहा तब मैदम उतनी असंतुष्ट नहीं हुई जितनी की वह यह सुन आश्चर्य-चकित हुई कि उसकी बुद्धिमती पुत्री नातालिया भी ऐसी भूल कर सकती है। और जब उसने अपनी पुत्री को बुला कर डाँटना शुरू किया—एक साधारण स्त्री के समान चिल्ला-चिल्ला कर डाँटना शुरू किया, न कि एक यूरोपीय

शिक्षा से शिक्षित महिला की तरह—उस समय नातालिया के दृढ़ उत्तरों और स्थिर प्रतिज्ञ दृष्टि और मुखावयव ने अन्त तक मैदम को चकित और भीत कर दिया।

रूडिन के आकस्मिक और अबोध्य ढङ्ग से चले जाने से मानो मैदम के हृदय पर से एक भार उतर गया लेकिन उसने कम से कम यह आशा की थी कि नातालिया आँसू बहायेगी अथवा मूर्च्छित होगी परन्तु नातालिया की बाहरी स्थिरता को देख मैदम पुनः एक बार घबड़ायी।

—"नातालिया, आज तुम्हारी तबीयत कैसी है?" मैदम ने पूछा।

नातालिया ने केवल एक बार अपनी माँ की तरफ देखा।

—"तुम्हारे प्रेमिकवर तो चले गये! क्या तुम जानती हो वह क्यों इतनी जल्दी भाग गया?"

—"माँ!" नातालिया ने धीर स्वर में कहा, "मैं वचन देती हूँ अगर तुम उसके बारे में कुछ नहीं पूछती तो उसके सम्बन्ध में मेरे मुख से एक शब्द भी कभी न सुनोगी!"

—"तो तुम अपनी गलती मान रही हो?"

नातालिया ने अपना मस्तक झुका कर पुनः कहा, "उसके सम्बन्ध में मेरे मुख से एक शब्द भी न सुनोगी।"

—"तुम्हारी बात मान लेती हूँ।" हँसते हुए उसकी माँ ने कहा, "मुझे तुम पर विश्वास है। लेकिन परसों—तुम्हें तो उसकी याद होगी—नहीं अब उसके सम्बन्ध में एक भी शब्द नहीं बोलूँगी। सब कुछ समाप्त हो चुका है, सब-कुछ भूल चुकी हूँ, है न? और तुम अब भी वैसी ही हो जैसी कि पहले थी। लेकिन तुमने मुझे सचमुच घबड़ा दिया था। आओ, जरा अपनी बुद्धिमती बेटी से एक चुम्बन तो लूँ।"

नातालिया ने अपनी माँ का हाथ उठा कर होठों से लगाया और मैदम ने उसके अवनत मस्तक को चूमा।

—"सदा मेरा उपदेश माना करो; कभी यह मत भूलो कि तुम लासुनस्काया-परिवार की तथा मेरी पुत्री हो।" मैदम ने और भी कहा, "इसीसे तुम सुखी हो सकोगी। अच्छा, अब जा सकती हो।"

नातालिया चुपचाप चली गयी। उसकी बूढ़ी माँ उसकी तरफ देखते हुए सोचने लगी, 'यह मेरी ही तरह है—भावावेग इसे भी आसानी से बहा ले जायगा।' और, मैदम लासुनस्काया अतीत दूर—अतीत की चिन्ता में खो गयी।

उसके बाद मैदम लासुनस्काया ने कुमारी बोनकोर्ट को बुलाया और एकान्त में देर तक उससे वार्तालाप करती रही। फिर कुमारी बोनकोर्ट को विदा कर मैदम ने पांडालेवस्की को बुलाया। वह रूडिन के चले जाने के वास्तविक कारण को जानना चाहती थी। पांडालेवस्की ने मैदम की उत्सुकता को शान्त किया, ऐसे मुआमलों में वह कभी भी असफल प्रमाणित नहीं होता।

× × ×

दूसरे दिन वोलीनस्टेव के साथ उसकी बहन भी मैदम के मध्याह्न भोज में सम्मिलित होने के लिए आयी। आज मैदम वोलीनस्टेव के प्रति विशेष सदय तथा दूसरे दिनों से अधिक प्रसन्न रही। नातालिया का हृदय न जाने क्यों आज अति मात्रा में दुःखित हो उठा लेकिन वोलीनस्टेव ने जिस सम्मानित और विनीत ढंग से उससे वार्तालाप किया उससे नातालिया को मन ही मन उसके प्रति कृतज्ञता माननी ही पड़ी।

दिन बीत गया अपने साधारण ढंग पर और स्वाभाविक सुस्थी से, लेकिन जब पारिवारिक बैठक समाप्त हुई उस समय

सभी ने अनुभव किया कि वे पुनः अपने पुराने जीवन में लौट गये हैं। और, वे सचमुच अपने पुराने जीवन के बहुत-कुछ पुनर्प्राप्त कर सके थे।

हाँ, सभी अपने पुराने वातावरण में लौट गये थे, एकमात्र नातालिया को छोड़। आखिरकार नातालिया को जब तनहाई मिल सकी तब वह किसी प्रकार अपने देह-भार को खींचकर बिस्तर तक ले गयी और तकिये में मुँह छिपाये चुपचाप पड़ी रही। उसका हृदय श्रान्त और दुःखित था। उसे अपना जीवन कटु, प्रतिकूल तथा सभी नीचताओं से पूर्ण प्रतीत हुआ और अपना सब-कुछ प्रेम और विरह–इतना लज्जाजनक लगा कि उस क्षण वह अपनी मृत्यु का भी स्वागत करने को तैयार हो गयी।......बहुत से कष्टमय दिन और निद्राहीन रातें तथा व्यथित आत्मा की अन्त-हीन पीड़ा अभी उसके लिए सञ्चित पड़ी है—जो हो अभी तो उसका जीवन आरम्भ होता है अब, अभी हो या बाद में, वह अपना सच्चा स्वरूप प्राप्त कर लेगा। लेकिन इससे क्या होता, किसी का दुर्भाग्य कितना ही बड़ा हो मनुष्य को अपनी भूख शान्त करने के लिए कुछ भोजन करना ही पड़ेगा—भाषा की कठोरता क्षम्य हो—और जब वह भोजन कर लेगा तब तुरन्त हो या थोड़ी देर में उसे प्रथम सांत्वना मिल ही जायगी।

नातालिया को सचमुच दारुण कष्ट सहना पड़ा था तथा कष्ट का उसे यह प्रथम अनुभव था और यह प्रथम कष्ट प्रथम प्रेम के समान दो बारा नहीं आता, इसलिए ईश्वर को धन्यवाद देना आवश्यक है।

—:※:—

रूडिन—१२

प्रायः दो साल बीत गये।

मे महीने का प्रारम्भ था। पावलोवना अपने घर के बरामदे में बैठी थी। अब वह पावलोवना नहीं बल्कि मैदम लेझेनोव थी। एक साल से ऊपर हो गया लेझेनोव से उसकी शादी हो चुकी थी। रूप का आकर्षण आज भी उसमें उसी प्रकार है जैसा कि पहले था यद्यपि अब वह कुछ अधिक स्वास्थ्यवती दिखाई पड़ रही थी। बरामदे के सामने, जहाँ से सीढ़ियाँ बगीचे को जाती थीं, एक दाई एक गुलाब जैसे लाल गालवाले शिशु को गोद में लिये धीरे धीरे टहल रही थी। शिशु का पहिनावा सफेद रंग का, टोपी सफेद रंग की तथा टोपी का झालर भी सफेद रङ्ग का था। उसकी माँ उत्सुकता से उसकी तरफ देख रही थी। बच्चा रो नहीं रहा था बल्कि पूरी गम्भीरता से अपना अंगूठा चूस रहा था और धीरे-धीरे चारों तरफ देख रहा था। वह अपने को अपने योग्य पिता मीखेल मीखेलोवीच लेझेनोव का योग्य पुत्र अभी से प्रमाणित कर रहा था।

हमारे पूर्व परिचित पिगासोव पावलोवना के पास बरामदे में बैठा था। अब वह पहले से और भी बूढ़ा दिखाई पड़ रहा था। उसका सामने का एक दाँत टूट गया था इसलिए जब वह बातें करता था उस समय एक विशेष प्रकार की आवाज उसके मुँह से निकलती थी। इस विशेष प्रकार की आवाज से मानो उसकी बातों की कटुता और भी बढ़ गयी थी। समय के प्रभाव

से भी उसके वचन की कटुता कम नहीं हुई थी फिर भी उसके छींटे कसने की शक्ति में कमी आयी थी और अब वह एक ही बात को कई बार दोहराता था।

लेफ्नेनोव घर पर नहीं था। चाय पीने के समय सभी उसके लौटने की प्रतीक्षा कर रहे थे। सूर्यास्त हो चुका था। हलकी सुनहली लिये पीली प्रकाश-रेखा क्षितीज पर खींची हुई थी। उसके विपरीत दिशा में और भी दो रेखाएँ आकाश-पट पर खींच गयी थीं, हलकी नीली और लालिमा लिये बैंगनी। पुञ्ज-पुञ्ज हलके मेघ आकाश की ऊँचाई में पहुँच कर मानो पिघल रहे थे। हर चीज एक मनोरम और निश्चित आवहवा की सूचना दे रही थी।

सहसा पिगासोव ने हँसना प्रारम्भ किया।

—"आप हँस क्यों रहे हैं?" पावलोवना ने उसके हँसने का कारण जानना चाहा।

— "नहीं, नहीं, कुछ नहीं! बस एक बात याद आयी। कल एक किसान अपनी पत्नी से बक-बक बन्द करने के लिए कह रहा था, 'अब अधिक न चरचराओ!' मुझे उसकी यह बात बहुत पसन्द आयी। सचमुच एक स्त्री ऐसे ही बातें करती है। मैं सदा ही इनसे अलग रहता हूँ, यह तो आप जानती ही हैं। हमारे पुरखे जो थे वे हम से अधिक चालाक थे। उनकी रूप-कथाओं की रूप-कुमारियाँ खिड़की के पास आकर बैठती थीं उनकी भौंहों से तारों की छटा निकलती थी लेकिन वे बस चुपचाप बैठी रहती थीं एक भी शब्द का उच्चारण नहीं करती थीं। अब आप ही अपने मन में इसका विचार कीजिये, उस दिन पड़ोस की एक स्त्री मुझ से कह रही थी कि मैं बिल्कुल उसे अच्छा नहीं लगता! सोचो जरा, कैसी भयानक बात उसने कही! मैं जो उसे बिल्कुल अच्छा

नहीं लगता ! क्या यह उसके लिए तथा औरों के लिए अच्छा नहीं होता अगर वह प्रकृति की असीम कृपा से एकाएक वाक्‌शक्ति हीन हो जाती !"

—"आप आज भी वैसे ही हैं; पिगासोव ! आप आज भी बेचारी स्त्रियों पर आक्रमण करते हैं यह सचमुच आपका दुर्भाग्य है और मैं इससे दुःखी भी हूँ।"

—"मेरा दुर्भाग्य ! आप कहती क्या हैं ? सच कहना पड़े तो कहूँगा संसार में केवल तीन प्रकार के दुर्भाग्य हैं। जाड़े में ठंढे कमरे में रहना, गर्मियों में कसे जूते पहनना और रात को एक रोते हुए शिशु को लिये सोना जिस पर आप मच्छर मारने का पाउडर इस्तेमाल नहीं कर सकतीं। अगर आप सन्तुष्ट होती हैं तो मैं एक शिष्टतम व्यक्ति बन जाता हूँ—एकदम आदर्श पुरुष। अब मेरा ऐसा ही भद्रोचित व्यवहार होगा।"

—"सचमुच, बहुत ही भद्रोचित व्यवहार है आपका ! क्यों, कल ही तो एलेना अन्तोनोवा आपके बारे में मुझ से शिकायत कर रही थी।"

—"ऐसा है ? क्या मैं पूछ सकता हूँ, उसने आपसे क्या कहा ?"

—"उसने कहा कि आप लगातार उसके प्रश्नों का उत्तर दो प्रश्न पूछ कर ही देते थे तथा आपका कंठ स्वर कटु था।

पिगासोव हँसा।

—"लेकिन यह आपको मानना ही पड़ेगा कि मैं ने अच्छा ही किया था !"

—"सचमुच, आपने बहुत अच्छा किया था ! लेकिन एक स्त्री के साथ अशिष्ट व्यपहार करना क्या अच्छा होता ?"

—"क्या ! आप एलेना आन्तोनोवा को एक स्त्री कहती हैं ?"

—"स्त्री नहीं तो वह क्या है ?"

—"एक ढोल। सच कहता हूँ एक ढोल है जिसे आप बजा भी सकती हैं !"

—"हाँ, हाँ !" पावलोवना ने उसे रोक कर विषयान्तर में जाना चाहा। उसने कहा, "आपको धन्यवाद मिलना चाहिये। मैंने सुना—।"

—"क्या सुना आपने ?"

—"मुकदमे में आपकी जीत हुई है। ग्लीनोव की जमीन तो आप ही की रह गयी।"

—"हाँ वह तो रहेगी।" पिगासोव ने उदास होकर उत्तर दिया।

—"आप सदा जिससे संतुष्ट रहते थे अब उसी से असन्तुष्ट हो रहे हैं।"

—"आपने ठीक कहा; अब मुझे कहने दीजिये।" पिगासोव ने धीरे धीरे कहा, "अधिक प्रतीक्षित सुख से बढ़ कर कुछ और कटु अथवा बुरा नहीं होता। अधिक प्रतीक्षित सुख आनन्द देता है कम और सुविधाओं से वंचित करता है अधिक। वह अपने दुर्भाग्य को कोसने तथा उसकी शिकायत करने की सुविधा से भी मनुष्य को वंचित करता है। सचमुच, महाशया, अधिक प्रतीक्षित सुख से बढ़ कर कटु और विषमय कुछ और नहीं है।"

पावलोवना ने केवल अपने कंधों को झकझोरा। उसने दाई को बुलाकर कहा, "अब मिसा के सोने का समय हो गया है अब उसे मुझे दे दो।"

पावलोवना अब अपने पुत्र को लेकर व्यस्त हो पड़ी। पिगासोव बड़बड़ाते हुए बरामदे के दूसरे छोर तक चला गया।

इतने में लेझेनोव बगीचे की बगलवाली सड़क से अपनी

गाड़ी को हाँकते हुए आते दिखाई पड़ा। घर ही के दो बड़े-बड़े कुत्ते घोड़े के आगे-आगे दौड़ते हुए आते दिखाई पड़े। एक कुत्ता भूरे रंगका था और दूसरा पीला। वे दो कुत्ते हाल में ही वहाँ आये थे। एक बूढ़ा कुत्ता फाटक में से अन्दर आया, उसने भूँकने के लिए अपना मुँह खोला लेकिन भूँकने के बजाय पूरी मित्रता से दुम हिलाते हुए पुनः लौट गया।

—"देखो पावलोवना।" लेझेनोव ने दूर से ही अपनी पत्नी को पुकार कर कहा, "देखो मैं किसे ला रहा हूँ।"

लेझेनोव के पीछे गाड़ी में कौन बैठा था पावलोवना सहसा पहचान न सकी।

—"अरे, मँसिये बासिस्टोफ" उसने अन्त तक कहा।

—"हाँ।" लेझेनोव ने कहा, "और सुनो, वे क्या अद्भुत समाचार लाये हैं।"

लेझेनोव की गाड़ी आँगन में आयी।

दूसरे ही क्षण वह बासिस्टोफ के साथ बरामदे में दिखाई पड़ा।

—"सुनो!" उसने अपनी पत्नी को गले लगाकर कहा, "वोलीनस्टेव की शादी होने वाली है।"

—"किससे?"

—"नातालिया से, और किससे! हमारे मित्र बासिस्टोफ मास्को से यह समाचार लाये हैं। तुम्हारे नाम एक पत्र भी वे लाये हैं।"

लेझेनोव ने मिसा को अपनी गोद में लेकर कहा, "मिसा! तुम्हारे मामा की शादी होने वाली है। लेकिन इतना उदास क्यों हो? पलक झपाने के सिवाय भी तुझे कुछ आता भी है?"

—"वह सो रहा है।" दाई ने कहा।

—"हाँ।" वासिस्टोफ पावलोवना के समीप जाकर कहा, "मैदम लासुनस्काया के कहने पर जमींदारी के हिसाब-किताब देखने के लिए मास्को से यहाँ आया। यह लीजिये आपकी चिट्ठी।"

पावलोवना ने शीघ्रता से अपने भाई का पत्र खोला। उसमें कुछ ही पंक्तियाँ लिखित थीं उसने खुशी के मारे अपनी बहन को लिखा है कि उसने नातालिया के निकट विवाह का प्रस्ताव किया था जिसे नातालिया तथा उसकी माँ ने स्वीकृत कर लिया है। उसने लिखा था कि दूसरे पत्र में वह सब कुछ विस्तार-पूर्वक लिखेगा। इसके अतिरिक्त उसने अपने पत्र द्वारा सब के लिए स्नेह-प्रीति भी वितरित की है। उसके पत्र को पढ़कर सब को ऐसा लगा कि उसने खुशी के मारे बेसुध होकर ऐसा लिखा है।

चाय आयी। वासिस्टोफ बैठा और उसे अनगिनत प्रश्नों का सामना करना पड़ा। वह जो समाचार लाया था उससे सभी सुखी हुए, पिगासोव भी।

लेफ़ेनोव ने बातों ही बातों में पूछा, "अच्छा, मँसिये कोरचा-गिन के सम्बन्ध में भी एक अफवाह फैली थी। लेकिन हम लोगों ने उस पर विश्वास नहीं किया था।

कोरचागिन था एक सुदर्शन युवक, युवकों में सर्वाधिक प्रभाव-शाली लेकिन उसका दिमाग ऊँचा था। आडम्बर भी उसमें अति मात्रा में थी। वह इस प्रकार राज-रजवाड़ों के समान चलता-फिरता था कि एक मनुष्य के समान नहीं लगता था वह जन-साधारण के चन्दे के पैसे से निर्मित एक मूर्ति के समान था।

वासिस्टोफ ने हँस कर जवाब दिया, "अफवाह संपूर्ण मिथ्या न थी। मैदम लासुनस्काया उसे अधिक चाहती थी लेकिन नाता-लिया उसे फूटी आँखों भी नहीं देख सकती थी।"

पिगासोव बीच ही में बोल पड़ा, "अरे, मैं उस आदमी को

जानता हूँ। एक दम बेवकूफ है—बेवकूफों का सरताज। अगर सभी मनुष्य उसके समान होते तो मैं हर्गिज इस दुनियाँ में नहीं रहता,—मुझे इस दुनियाँ में रखने के लिए काफी पैसे खर्च करने पड़ते।"

—"हो सकता है।" बासिस्टोफ बोला, "लेकिन समाज में सभी उसे जानते और पहचानते हैं।"

पावलोवना बीच में बोली, "छोड़िये, उन बातों को। सचमुच अपने भाई साहब के सुख से मैं सुखी हूँ और नातालिया भी तो बड़ी हँसमुख और खुश होगी न ?"

—"अवश्य ! लेकिन वह तो सदा से शांत प्रकृति की है, आप तो उसे जानती ही हैं, फिर भी वह मन ही मन सुखी ही है।"

आज शाम का वार्तालाप उत्साह और आनंद से पूर्ण रहा। सभी रात्रिकालीन भोजन के लिए बैठे।

लेझेनोव ने भोजन करते समय बासिस्टोफ से पूछा, "आप रूदिन के सम्बन्ध में कुछ जानते हैं ?"

—"नहीं, बहुत दिनों से नहीं जानता हूँ। वे पिछले वर्ष जाड़े में थोड़े दिनों के लिए मास्को में आये थे फिर किसी एक परिवार के साथ सिमबार्स्क को चले गये। कुछ समय हमारा पत्र-व्यवहार जारी था। उन्होंने अपने अंतिम पत्र में लिखा था कि वे सिमबार्स्क छोड़ रहे हैं लेकिन इसका उल्लेख नहीं किया कि वे जा कहाँ रहे हैं। उसके बाद उनके संबंध में और कुछ नहीं जान सका।

पिगासोव बोला, "वे अपनी देखभाल अच्छी तरह करना जानते हैं। मैं कह सकता वे इस समय कहीं बैठे-बैठे लंबी-चौड़ी बातें बना रहे हैं। वैसे लोगों को दो-चार ऐसे मिल ही जाते हैं जो मुँह बाए उनकी बातों को सुनेंगे और रुपये उधार देंगे। मैं कहता हूँ वे अवश्य किसी जनहीन स्थान पर जारेवोकोस्केस्क अथवा चुख्लोमा के समान किसी बूढ़ी नकली बाल पहनी हुई

महिला की गोद में सर रख कर मरेंगे, और वही बूढ़िया उस संसार का सर्व श्रेष्ठ ज्ञानी कहेंगी।"

—"आप उनके संबध में बड़ी ही लगती हुई बातें कहते हैं। बासिस्टोफ ने अप्रसन्न हो कर धीरे-धीरे कहा।

—"नहीं। मैं उनके संबंध में सब-कुछ ठीक कहता हूँ। मैं कहता हैं, वे दूसरों पर निर्भर कर जीवित रहनेवालों के सिवाय और क्या हैं? अरे, मैं तो कहना ही भूल गया था—।" लेफ्नेनोव की ओर घूम कर वह कहता गया, "तारलाग्वोव से मेरा परिचय हुआ था जिनके साथ रूडिन विदेशों में गये थे। उन्होंने उनके बारे में जो-जो बातें कहीं, उसका अनुमान आप नहीं कर सकते। कैसी मजेदार बातें वे थीं। रूडिन के सभी मित्र और अनुयायी उनके खिलाफ हो गये थे।"

बासिस्टोफ ने किंचित क्रोध से कहा, "मुझे उन मित्रों में से अलग रखियेगा।"

—"हाँ,हाँ, तुम तो दूसरे प्रकार के हो। मैं तुम्हारे बारे में कुछ भी नहीं कहूँगा।"

पावलोवना ने पूछा, "तारलाखोव ने आपसे क्या कहा था?"

—"उन्होंने बहुत कुछ कहा था, पर मुझे सब कुछ याद नहीं है। लेकिन उनसे मैंने जो कुछ सुना था उसमें यह कहानी सबसे मजेदार थी। रूडिन जैसे लोग सदा ही आत्मोन्नति में लगे रहते हैं। साधारण व्यक्ति खाते हैं, सोते हैं पर ये लोग खाने-सोने के साथ ही साथ आत्मोन्नति भी करते रहते हैं। क्यों मँसिये बासिस्टोफ, मैंने ठीक नहीं कहा? (बासिस्टोफ ने कोई उत्तर नहीं दिया) इस प्रकार रूडिन आत्मोन्नति करते-करते पूर्ण दार्शनिक ढङ्ग से इस सिद्धान्त को पहुँचे कि अब उसे प्रेम करना चाहिये। और, वे अपने सिद्धान्त के अनुसार एक प्रेमिका का अनुसंधान करने लग गये। भाग्य उसका प्रसन्न था। एक सुन्दरी फ्रांसीसी महिला से

उसका परिचय हो गया। वह कशीदाकारी से अपनी जीविका चलाती थी। यह घटना जर्मनी के किसी नगर में घटी थी, जो राईन नदी के किनारे बसा था। वे उसके यहाँ आने जाने लगे, उसे पढ़ने के लिए किताबें देने लगे तथा प्रकृति और हेगल के सम्बन्ध में उससे आलोचना भी करने लगे। वह बेचारी यह सब दार्शनिक तत्व कैसे समझती? वह समझी रूडिन एक ज्योतिषी हैं। जो हो आप जानते ही हैं रूडिन देखने में अच्छे ही हैं और एक विदेशी, विशेष कर रूसी होने के नाते व उस महिला को आकृष्ट कर सके। अंत तक उन्होंने उस महिला से गुप्त रूप से मिलने का प्रबंध किया तथा उनका यह गुप्त रूप से मिलना भी काव्यिक था—नदी में एक नाव पर। वह फ्रांसीसी महिला सम्मत हुई और भली भांति सज धज कर उनके साथ नौका-विलास करने गयी। वहाँ उन्होंने मुश्किल से दो घन्टे बिताये। और आप जानते हैं रूडिन ने इन दो घन्टों में क्या किया था? उन्होंने बार बार उस महिला के मस्तक पर थपकियाँ दीं और उदास दृष्टि से आकाश को देखते हुए उससे कहा कि उसके लिए उसके मन में पितृ स्नेह का अनुभव हो रहा है। वह फ्रांसीसी महिला गुस्से के मारे जल-भुन उठी और घर लौट आयी और उसी ने तारलाखोव से यह सब कहा। रूडिन इस प्रकार के आदमी हैं।"

पिगासोव अपना कथन समाप्त कर हँसने लगा।

—"आपका स्वभाव बहुत ही कुटिल है।" पावलोवना ने उसे तिरस्कृत कर कहा, "धीरे धीरे मेरा यह विश्वास दृढ़ हो रहा है कि जो रूडिन की निंदा भी करते हैं रूडिन भूल कर भी उनकी विंदुमात्र बुराई नहीं करते।"

—"बुराई नहीं की। ओफ। दूसरों पर निर्भर करके जीवित रहना तथा दूसरों से उधार माँगना, यह सब क्या है? लेभेनोव!

मैं कहता हूँ, उन्होंने आससे भी अवश्य रुपये उधार लिये हैं।"

लेभ्मेनोव का मुख मंडल गम्भीर हो उठा। उसने कहा, "महाशय पिगासोव, यह आप भी जानते हैं मेरी पत्नी भी जानती है कि पहले पहल जब मैंने रूडिन को देखा उस समय मेरे मन में उसके लिए किसी प्रकार का प्रीति-भाव न था, और अक्सर उनमें दोष देखता था।"

लेभ्मेनोव ने गिलासों को शैम्पन नाम की शराब से भर कर कहा, "इसलिए आइये पहले हम बोलीनस्टेव तथा उसकी प्रणयिनी के नाम पर स्वास्थ्य-पान करें फिर डमिट्री रूडिन के नाम पर—।"

पावलोवना तथा पिगासोव ने साश्चर्य उसकी तरफ देखा। बासिस्टोफ खुशी के मारे लाल हो उठा। उसकी आँखें बड़ी-बड़ी हो गयीं।

—"मैं उन्हें अच्छी तरह जानता हूँ।" लेभ्मेनोव कहता गया, "मैं उनके दोषों को बढ़ा-चढ़ा कर नहीं देखता। रूडिन एक साधारण प्रकार के आदमी नहीं हैं इसलिए उनके दोष भी साधारण लोगों की आँखों में अधिक खलते हैं।"

—"रूडिन एक प्रतिभाशाली व्यक्ति हैं।" बासिस्टोफ ने कहा।

—"हाँ, प्रतिभा की एक क्षीण शिखा उसके अंदर भी हो सकती है।" लेभ्मेनोव बोला, "लेकिन एक मनुष्य के रूप में उसकी सब से बड़ी कठिनाई यह है कि वह पूर्ण रूप से मनुष्य ही नहीं है। लेकिन यह दूसरी बात है। उसके अंदर अच्छाई है, वय असाधारण है मैं उसके संबंध में आज कुछ कहना चहता हूँ। उसके अंदर उत्साह है और आप मेरे समान एक आलसी आदमी को देखकर यह कह सकते हैं कि अब इन दिनों में यह एक अति आवश्यक गुण है। हम सभी आवश्यकता से अधिक वास्तववादी उदासीन और श्रमविमुख हो गये हैं। हम सभी सो गये हैं और

सोते-सोते प्रस्तरीभूत हो गये है और हम आवश्यक रूप से उसके प्रति अपनी कृतज्ञता मानेंगे जो कोई भी हमें विचलित करेगा, उष्ण करेगा चाहे वह एक क्षण के लिए भी हो ! अफसोस ! समय बीत चुका है। याद है, पावलोवना, मैंने एक दिन उनके सम्बंध में बातें करते हुए उन्हें अतिमात्रा में शीतल होने के लिए दोषी ठहराया था ? उस समय मैंने ठीक भी किया था भूल भी की थी। ठंडक उनके खून में है उनके दिमाग में नहीं लेकिन यह उनका दोष नहीं है। वे एक अभिनेता नहीं हैं और न तो वे एक प्रतारक हैं और न चरित्रहीन। हाँ वे दूसरों पर निर्भर रह कर अपनी जीविका चलाते हैं लेकिन वे दूसरों को धोखा नहीं देते बल्कि एक शिशु की सरलता से ऐसा करते हैं। हाँ, उनका अंत अवश्य ही दारिद्रता और अभाव के बीच होगा लेकिन क्या यह उनसे घृणा करने का एक कारण है ? वे अपने जीवन में कुछ हासिल नहीं कर सकेंगे क्योंकि उनका मेरुदंड नहीं है और रक्त शीतल है। लेकिन किसे यह कहने का अधिकार है कि वे कभी किसी काम में नहीं आयेंगे—किसी काम में आये नहीं। कौन कह सकता है कि उन्होंने उन तरुण हृदयों में आशा और कल्याण का बीज नहीं बोया जिन्हें प्रकृति से कर्मशक्ति तथा अपनी कल्पना को कार्यरूप में परिणत करने की क्षमता मिली है ? वास्तव में मुझे यह-सब उन्हीं से तो मिला है। पावलोवना जानती है रूडिन ने मेरे यौवन में क्या किया था ? मुझे याद है, मैं भी कहा करता था कि रूडिन की बातों से लोग प्रभावित नहीं होते, मैंने यह-सब मेरे समान लोगों के संबंध में कहा था जो जीवन को उसके स्वरूप में देख चुके थे तथा उसके ध्वंस-सृजन की शक्ति को परख चुके थे। यदि किसी की बातों में मिथ्या का क्षीण आभास भी रहता है तो उसकी बातों की सारी ऐक्यता हमारे लिए समाप्त हो जाती है लेकिन सौभाग्य

से तरुणों की श्रवण-शक्ति उतनी अनुभूति संपन्न नहीं है उतनी मार्जित नहीं है। वे क्या सुनते हैं यदि उसका सार-तत्व उन्हें अच्छा लगता है तो वे उसकी स्वर-महिमा पर ध्यान कहीं देते, वे अपने उसकी स्वर-महिमा का सृजन कर लेते हैं।"

—"बलिहारी आपकी! आपने कितना ठीक कहा है!" बासिस्टोफ चिल्ला उठा। "रूडिन की बातों के प्रभाव के सम्बन्ध में सौगंध खा कर कह सकता हूँ कि वे केवल यही नहीं जानते कि आपको विचलित कैसे किया जायगा बल्कि वे आपको चलाते हैं और चलते रहने के लिए मजबूर करते हैं। आपके हृदय की गहराई तक आलोडित कर आप में एक नवीन तेज फूँक देते हैं।"

पिगासोव की तरफ घूम कर लेझनोव ने कहा, "सुना? क्या आप आगे इसका और भी प्रमाण चाहते हैं? आप दार्शनिकता पर कुछ कहते समय आप उस पर आक्षेप करने लगते हैं उस आक्षेप के लिए आप कटुतम शब्द भी नहीं ढूँढ़ कर जुटा पाते। मैं स्वयं दार्शनिकता पर बहुत कम ध्यान देता हूँ और यह समझता भी हूँ बहुत कम। लेकिन यह दार्शनिकता ही हमारे सभी दुःख का कारण नहीं है। दार्शनिकता की जादूगरी तथा उसके बाह्य आडंबर से रूसी जनता कभी प्रभावित नहीं होगी क्योंकि उसके लिए उसके पास साधारण ज्ञान काफी है, और हम सत्य तथा तर्क को खोज निकालने की सभी आंतरिक प्रचेष्टाओं को दार्शनिकता कह कर उन पर आक्षेप करने नहीं देंगे। रूडिन का सबसे बड़ा दुर्भाग्य यह है कि वे रूस की इस भूमि को भली भाँति नहीं जानते और सचमुच यह एक दुर्भाग्य है। रूस की भूमि हमें छोड़ कर वैसी ही बनी रहेगी लेकिन हम उसे छोड़ कर जीवित नहीं रह सकते। जो समझता है वैसाकर जीवित रह सकेगा उसके भाग्य में अवश्य कष्ट बदा है और, जो वैसाकर जीवित रहता है उसके भाग्यमें और

भी कष्ट बढ़ा रहता है। विश्वबन्धुत्व की बात सोचना मूर्खता है जो जातीयता के पक्षपात से विमुख है, वह नगण्य है, नगण्य क्या, उससे भी उसकी हालत बुरी होती है, क्योंकि जातीयता को छोड़कर कला, सत्य या जीवन, कुछ भी जीवित नहीं रह सकता है। एक खूबसूरत चेहरे को देखिये, उसमें उसकी अपनी विशेषता जरूर होगी लेकिन एक निर्बोध व्यक्ति के दीप्तिहीन मुख मंडल को देखिए वहाँ विशेषता का नाम न होगा। लेकिन मैं फिर कहता हूँ दोष रूडिन का नहीं है बल्कि यह उसके अदृष्ट का है उसके निष्ठुर और कठोर अदृष्ट का लेकिन इस लिए उन्हें दोषी नहीं कहा जा सकता, हमारे बीच रूडिन जैसे लोग क्यों जन्म लेते हैं उसका कारण खोजने के लिए हमें गहराई तक अनुसंधान करना पड़ेगा। जो हो, उनमें जो अच्छी बातें हैं उनके लिए हम अवश्य उनके निकट कृतज्ञ हैं। उनके प्रति अविचार करना तथा विवेक से काम न लेना सहज है और हम लोगों ने वैसा किया भी। उनको दंडित करना हमारा कार्य नहीं है, न इसकी कोई जरूरत ही है। उन्हें जहाँ तक दंडित होना चाहिए था उन्होंने अपने को उससे कहीं अधिक दंडित किया है और, ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ इससे उनमें जितनी बुराइयाँ हैं सभी नष्ट हो जायँ और उनका सौन्दर्यमय कल्याणमय अवशेष रह जाय। रूडिन की शुभ कामना कर यह 'स्वास्थ्य-पान' कर रहा हूँ। मेरे जीवन के सर्वोत्तम वर्षों के साथी रूडिन के नाम पर, उनकी जवानी, उनकी आशा, उनकी प्रचेष्टा, उनकी आंतरिकता, उनकी उदारता तथा उनके सब कुछ के नाम पर आज 'स्वास्थ्य-पान' कर रहा हूँ जिनके कारण हमारी बीस साल की उम्र में हमारा हृदय अधिक वेग से स्पंदित होता था। जीवन का उससे बढ़ कर श्रेयता हमें और कभी न मिली, न आगे कभी मिलेगी। मैं उन स्वर्णिम दिनों के स्मरण में तथा रूडिन के स्मरण में 'स्वास्थ्य-पान' कर रहा हूँ।"

सभी ने लेभेनोव के गिलास से अपने-अपने गिलासों का स्पर्श कराया। उत्साह की अधिकता के कारण बासिस्टोफ ने प्रायः अपना गिलास तोड़ डाला था, वह एक ही बार में गिलास में की पूरी शराब पी गया। पावलोवना ने अपने पति का हाथ अपने हाथ में लेकर दबाया।

पिगासोव ने कहा, "लेभेनोव! मुझे इसकी धारणा न थी कि आप इतने अच्छे वक्ता है। आप तो रूडिन के समान ही अच्छे वक्ता हैं। आप की बातों को सुनते-सुनते मैं भी मुग्ध हो गया था।"

—"मैं वास्तव में एक वक्ता ही नहीं हूँ।" लेभेनोव बोला। उसके स्वर में क्रोध का किञ्चित आभास था। "मैं समझता हूं, आपको मुग्ध करना असम्भव कार्य है। लेकिन रूडिन के सम्बन्ध में काफी आलोचना हो चुकी है। अब आलोचना के विषय में परिवर्तन होना आवश्यक है। और उनका क्या नाम है—पांडालेवस्की, क्या वे अभी तक मैदम लासुनस्काया के यहाँ रहते हैं?" बासिस्टोफ की तरफ देखते हुए लेभेनोव ने पूछा।

—"हाँ, वे मैदम के यहाँ रहते हैं। मैंने उनकी जीविका के लिए अच्छा प्रबन्ध कर दिया है।"

लेभेनोव हँसा, व्यंगात्मक हँसी, बोला, "हाँ ये ही एक व्यक्ति हैं जिन्हें कभी खाने वगैरह नहीं मरना पड़ेगा। यह मैं दावे के साथ कह सकता हूँ।"

सांध्य-भोजन समाप्त हुआ, सभी अतिथि चले गये। पति को एकाकी पाकर पावलोवना उसकी तरफ देखते हुए हँसी।

—"सचमुच आज शाम को तुम ने ऐसा चमत्कार दिखाया!" अपने पति के ललाट पर उँगली से मृदु आघात कर पावलोवना बोली। "तुमने जो भी कुछ कहा, बुद्धिमानी से और अच्छे ढंग से कहा। लेकिन यह तुम को मानना ही पड़ेगा कि आज तुमने रूडिन के प्रति पक्षपात

करने में उतनी ही अधिकता की है जितनी अधिकता पहले उसकी निंदा करते समय करते थे ।"

—"जब एक मनुष्य गिर पड़ा है उस समय मैं उस पर आघात नहीं कर सकता । और, मैं उस समय डरता था कहीं वह तुम्हारे दिमाग में न छा जाय ।"

—"नहीं ।" पावलोवना सरलता से बोली, "वे हमेशा मुझे अति मात्रा में विद्वान लगते थे । मैं उनसे डरती थी और यह नहीं समझ पाती कि उनके सामने क्या कहूं ! हाँ, आज पिगासोव उनकी हँसी उड़ाने गये तो अच्छी तरह बेवकूफ बन गये ।"

—"पिगासोव !" लेभेनोव बोला, "पिगासोव के कारण ही मैंने आज रूडिन की प्रशंसा इतनी अधिक की । वह रूडिन को पराश्रित कहता है ! मैं कहता हूँ वह रूडिन से हजारों गुना अधिक बुरा है । उसके पास अपनी जीविका चलाने का साधन है इसलिए वह सब की हँसी उड़ाता है लेकिन वह स्वयं धनी-मानी व्यक्तियों के निकट कैसी नम्रता दिखाता है । तुम नहीं जानती, यही पिगासोव जो हर चीज, हर आदमी, दर्शन और स्त्री सभी पर आक्षेप करता है, यही जब सरकारी नौकरी करता था उस समय घूस लेता था । मैं कहता हूँ, बात ऐसी ही है ।"

—"अच्छा । मैं तो यह सब नहीं जानती थी !" उसकी पत्नी ने कहा । "मैंने उससे ऐसी उम्मीद कभी नहीं की थी ।" क्षणभर रुक कर पावलोवना ने कहा, "एक बात तुम से पूछती हूँ—।"

—"पूछो ।"

—"क्या तुम समझते हो भाई साहब नातालिया से शादी कर के सुखी हो सकेंगे ?"

—"हाँ—दोनों ही बराबरी के हैं फिर नातालिया सब-कुछ सम्भाल ही लेगी । फिर यह तो हमारे निकट छिपा नहीं है कि नातालिया तुम्हारे

भाई साहब से अधिक बुद्धि रखती है। लेकिन तुम्हारे भाई-साहब भी बड़े अच्छे आदमी हैं और नातालिया को हृदय से चाहते हैं। इससे अधिक और क्या चाहिये ? हमीं को लो, हम एक दूसरे से प्यार करते हैं और सुखी भी हैं। क्या हम सुखी नहीं हैं ?"

नातालिया ने मुस्कुराकर अपने पति का हाथ जोर से दबाया।

\+ \+ \+

पावलोवना के घर में जिस दिन यह घटना घट रही थी उसी दिन रूस के एक छोटे से गाँव की ढलुवी सड़क पर एक टूटी-फूटी छप्परदार देहाती गाड़ी को तीन खेतिहर घोड़े दुपहर की दारुण गरमी में बड़ी मुश्किल से खींच रहे थे। एक सफेद बाल वाले बूढ़े किसान एक फटे-पुराने ओवरकोट पहने हुए झुक कर गाड़ीवान की जगह में बैठा हुआ था। उसके पाँव गाड़ी की बगल वाली खूँटी पर रखे हुए थे। वह रस्सी की बनी लगाम को हिलाते हुए बार-बार अपना छोटा पतला चाबुक फटकार रहा था। उस गाड़ी के छप्पर के नीचे एक दीर्घाकृतिवाला व्यक्ति टोपी और मैली पोशाक पहन कर एक छोटे से पुराने बक्स पर बैठा हुआ था। यह व्यक्ति रूडिन था। उसका सर झुका हुआ था और उसकी टोपी आँखों तक खींची हुई थी। गाड़ी के चलने से ऐसे प्रबल झटके लग रहे थे जिससे वह गाड़ी के भीतर इधर से उधर फेंका जा रहा था परन्तु उस तरफ उसका ध्यान न था मानो वह झपकी ले रहा था। जो हो, अन्त तक वह सीधा होकर बैठ गया।

—"उस समय तक पहुँच सकूँगा कि नहीं ?" उसने उस आदमी से पूछा जो गाड़ीवान की जगह में बैठा था।

उस आदमी ने रूडिन को दिखाने लिए लगाम खींचकर कहा, "बस उसी पहाड़ पर है और यहाँ से डेढ़ मील से अधिक दूर भी

होगा ।" अब वह घोड़ों को अपनी भाषा में डाँटते हुए हाँकने लगा । उसने एक घोड़े की बगल में चाबुक से मारा भी ।

—"तुम चलाना नहीं जानते । सवेरे से अभी तक हम चल ही रहे हैं लेकिन अभी तक पहुँच नहीं सके । तुमको कम से कम कुछ तो गाना चाहिये था ।" रूडिन बोला ।

—"इस समय कोई गा सकता है ! देख तो रहे हैं कैसी गर्मी है, घोड़े सब थक गये हैं । फिर मुझे गाना नहीं आता । मैं एक गाने वाले छोकरा नहीं हूँ ।" उसने एक मैले-कुचैले पोशाक तथा फटे पुराने देहाती जूते पहने हुए राह-चलते को सावधान करने के लिए पुकार कर कहा, "गदहे कहीं के । किनारे से चल ?"

—"वाह रे गाड़ावान ।" वह आदमी बड़ाबड़ा कर किनारे खड़ा हो गया । "अपने को समझ क्या बैठा है ?" उस आदमी ने क्रोध में आकर कहा और सर हिलाते हुए एक तरफ चला गया ।

—"ए: अपने रास्ते पर चल !" घोड़ों को फटकार कर गाड़ीवान ने कहा, "शैतान कहीं के—।"

वे थकेमाँदे घोड़े अंत तक अगली सराय तक पहुँचे । रूडिन झुक कर किसी प्रकार गाड़ी से उतरा । उसने गाड़ीवान को पैसे दिये । गाड़ीवान ने सलाम नहीं किया केवल पैसों को देखने लगा कि इसीसे आज चल जायगा कि नहीं । रूडिन स्वयं बकसा उठा कर सराय के अंदर चला गया ।

मेरे एक मित्र ने, जिन्होंने उन दिनों रूस का अच्छी तरह पर्यटन किया था, मुझसे कहा था कि अगर सराय की दीवारों पर 'काकेशश का कैदी' के दृश्य-चित्र अथवा रूसी सेनापतियों के चित्र टँगे रहते तो यात्रियों को आसानी से घोड़े मिल जाते । अगर सराय के लोग प्रसिद्ध जूअ ड़ी जार्ज-डी-जारमानी के बारे में बातें करने लगते तो यात्रियों का शीघ्र सराय छोड़ कर जाना असंभव हो जाता । यात्रियों को इस

प्रसिद्ध जूआड़ी के यौवन काल की वेशभूषाओं की प्रशंसाएँ सुननी पड़ती थीं। वह प्रसिद्ध जूआड़ी अपने बुढ़ापे में भयानक क्रोधी हो उठा था और उसी समय उसने कुर्सी फेंक कर अपने पुत्र की हत्या कर दी थी।

रूडिन जिस कमरे में पहूँचे उसकी दीवारों पर 'तीस साल, अथवा एक जूआड़ी का जीवन, के दृश्य-चित्र टँगे थे। रूडिन के पुकारने पर सराय के मालिक की नींद टूटी। उसने रूडिन के प्रश्न की तरफ किसी प्रकार का ध्यान न देकर कहा कि सराय में कोई घोड़ा नहीं है। यहाँ कह देना आवश्यक है, किस सराय का मालिक जागता रहता है?

रूडिन ने उससे पूछा, "आप कैसे कहते हैं घोड़ा नहीं है जब आप यह नहीं जानते कि मैं कहाँ जाऊँगा? मैं गाँव से घोड़ा ले कर यहाँ आया हूँ।"

—"कहीं भी जाने के लिए यहाँ घोड़ा नहीं है।" सराय के मालिक ने कहा, "आप जा कहाँ रहे हैं?"

रूडिन ने उत्तर दिया।

सराय वाले ने पुनः कहा कि घोड़ा नहीं है और बाहर चला गया।

रूडिन खिड़की के पास गया और गुस्से में आकर टोपी उतार कर टेबुल पर रखने लगा। इन दो सालों में उसमें विशेष कोई परिवर्तन नहीं आया था बल्कि उसका चेहरा अब कुछ फीका नजर आ रहा था। उसके कुंचित केशों में जहाँ-तहाँ सफेदी आने लगी थी। उसकी सुन्दर आँखों ने मानो अपनी पुरानी ज्योति खो दी थी। गालों, होंठों और ललाट पर कटु और श्रांत भावावेगों के कारण शिकनें पड़ गयी थीं। उसके वस्त्र पुराने और गन्दे थे—कोई अन्तर्वास न था? ऐसा लगता था कि उसके सुख के दिन चले गये थे।

वह दीवारों पर लिखित वाक्यों को पढ़ने लगा जो परिश्रांत यात्रियों के मनोरञ्जन के प्रिय साधन थे। इतने में दरवाजा खुलने की आवाज हुई और सरायवाला अन्दर आया।

सरायवाले ने कहा, "आप जहाँ जाना चाहते हैं वहाँ जाने के लिए घोड़ा नहीं है और वह आपको शीघ्र मिलेगा भी नहीं। लेकिन वी-गाँव के लिए आपको घोड़ा मिल सकता है।

—"वी-गाँव के लिए।" रूडिन ने कहा, "लेकिन वह तो मेरे रास्ते में नहीं पड़ता। मैं पेनजा तक जाऊँगा लेकिन मैं समझता हूँ वी-गाँव टैमबोव के रास्ते में पड़ता है।"

—"लेकिन उससे क्या टैमबोव से भी आप वहाँ पहुँच सकते हैं।"

रूडिन उसकी बातों पर सोचने लगा। फिर उसने कहा, ठीक है। उन लोगों को घोड़ा कसने को कहिये। दोनों ही मेरे लिए बराबर हैं मैं टैमबोव ही जाऊँगा।"

तुरंत घोड़े कसे गये। रूडिन अपना छोटा बकसा ले कर बाहर आया और गाड़ी पर चढ़ कर बैठ गया। पहले की भांति वह फिर झूमने लगा उसका झुका हुआ शरीर एक असहाय दुःखद दीनता का भाव प्रकट कर रहा था। गाड़ी धीरे धीरे चलने लगी और उसमें लगी घंटियाँ रुक-रुक कर बजने लगीं।

—:❀:—

परिशिष्ट—

और भी कई वर्ष बीत गये।

जाड़े का दिन था, काफी ठंढक पड़ रही थी। जिले के प्रधान नगर के प्रमुख होटल के दरवाजे के पास एक गाड़ी आ कर रुकी। जँभाई लेते हुए उसमें से एक महाशय उतर कर सीधा खड़ा हो गया। उसकी अवस्था बहुत अधिक न थी लेकिन साधारण सम्मान पाने के लिए जिस शारीरिक पूर्णता की आवश्यकता होती है वह उस व्यक्ति के पास थी। वह सीढ़ियों को तय करते हुए दूसरी मंजिल को गया और लम्बे बरामदे के द्वार-पथ पर एक क्षण रुका पर वहाँ किसी को न देख कर उसने एक कमरा खोलने के लिए पुकार कर कहा। कहीं से एक दरवाजा खोलने की आवाज सुनाई पड़ी और पर्दे के पीछे से एक लम्बे कद का नौकर लपक कर बाहर निकला और बड़ी शीघ्रता से कदम धरते हुए सामने आया। उसके शरीर का एक भाग तथा बाहों पर चढ़ायी आस्तीनें बरामदे की हलकी अँधियारी में अद्भुत दिखाई पड़ीं। आगन्तुक अपने कमरे में जाकर पहले ही ओवरकोट आदि उतारने लगा। फिर एक सोफे पर बैठ कर उसने अपने घुटनों पर दोनों हाथ समेट कर रखे—मानो उसकी नींद पूरी तरह टूटी नहीं उसने अपने नौकर को बुलाने के लिए कहा। होटल का नौकर धीरे से बाहर निकल गया। वह आगंतुक कोई और नहीं बल्कि लेफ्रेनोव स्वयं था। वह सेना-संग्रह के किसी काम से यहाँ आया था।

लेफ्रेनोव का नौकर अन्दर आया। उसके सर के बाल घुँघराले तथा गाल गुलाब जैसे लाल थे। उस नौजवान के शरीर पर नीले रंग के रूमाल से कसे हुए ओवरकोट था तथा पाँव में कीलदार जूते।

—"देख छोकरे ! हम यहाँ पहुँच गये न। और तू जो घबड़ा रहा था कि पहिया टूट जायगा—कहाँ टूटा ?" लेझ्नेनोव बोला।

—"हाँ, पहुँच तो गये।" उस नौकर ने अपनी हँसी को छिपाने के लिए ओवरकोट का कालर उठा दिया और कहा, "लेकिन वह पहिया इसलिए नहीं टूटा कि—"

—"यहाँ कोई है ?" बाहर से आवाज सुनाई पड़ी।

लेझ्नेनोव मानो चौंक कर सीधा बैठ गया और ध्यान से उस स्वर को पहचानने लगा।

—"यहाँ कौन है ?" बाहर से पुनः आवाज आयी।

लेझ्नेनोव ने उठकर शीघ्रता से दरवाजा खोला।

सामने एक झुका हुआ, लम्बे कद का आदमी खड़ा था। उसके सर के सभी बाल पक गये थे। उस व्यक्ति ने एक मखमल का पुराना कोट पहन रखा था जिसमें पीतल के बटन लगे थे। लेझ्नेनोव एक क्षण में उस व्यक्ति को पहचान गया।

—"रूडिन !" लेझ्नेनोव के मुख से निकल पड़ा।

रूडिन घूम कर खड़ा हो गया। वह लेझ्नेनोव को सहसा पहचान न सका क्योंकि लेझ्नेनोव के मुख पर प्रकाश नहीं पड़ रहा था। रूडिन विस्मित होकर उसे देखने लगा।

—"तुम मुझे नहीं पहचानते ?" लेझ्नेनोव बोला।

—"लेझ्नेनोव !" रूडिन के मुख से निकला। उसने आकुल हो कर हाथ बढ़ाये लेकिन संकुचित होकर पुनः खींच लिये।

लेकिन लेझ्नेनोव ने शीघ्रता से उसके दोनों हाथ पकड़ लिये।

—"आओ, अन्दर आओ। यह घर मेरा है।" उसने रूडिन से कहा और उसे खींच कर अन्दर ले गया।

—"तुम इतने बदल गये।" लेझ्नेनोव क्षण भर चुप रहा लेकिन ये शब्द अनिच्छा से उसके मुख से निकल पड़े।

—"हाँ, यही तो लोग कहते हैं।" रूडिन ने घरके भीतर चारों तरफ देखते हुये उत्तर दिया। "हाँ उम्र भी तो काफी हो गयी। लेकिन तुम तो उसी प्रकार हो। पावलोवना—तुम्हारी पत्नी कैसी हैं?

—"धन्यवाद। वह अच्छी है। लेकिन तुम यहाँ क्या कर रहे हो?"

—"मैं? वह एक लंबी कहानी है। सच कहता हूँ, बात कुछ ऐसी हो गयी कि मुझे यहाँ आना पड़ा। मैं एक आदमी को ढूँढ़ रहा था। जो हो, तुम से मिलकर बड़ी खुशी हुई।"

—"तुम खाना कहाँ खाओगे?,,

—"मैं? यह नहीं जानता। किसी होटल में खा लूँगा। मैं आज ही यहाँ से चला जाऊँगा।"

—"जाना ही पड़ेगा?"

रूडिन हँसा—विशेष अर्थपूर्ण ढंग से।

"हाँ जाना ही पड़ेगा। वे मुझे मेरे गाँव में भेज रहे हैं अब वहीं रहूँगा।"

—"आज तुम मेरे यहाँ भोजन करो।"

पहली बार रूडिन की आँखें लेभेनोव की आँखों से मिलीं।

"तुम मुझे अपने यहाँ खाने के लिए कह रहे हो?" रूडिन बोला।

—"हाँ, रूडिन। पुराने दिनों के पुराने मित्रों के समान एक साथ बैठ कर खायेंगे! खाओगे न? तुम्हें देख सकने की कोई आशा मुझे न थी; ईश्वर ही जानते हैं हम फिर कब एक दूसरे से मिलेंगे। लेकिन तुम्हें आज यों ही नहीं जाने दूँगा।,,

—"ठीक है तुम्हारे यहाँ भोजन करूँगा।"

लेभेनोव ने रूडिन का हाथ पकड़ लिया। उसने अपने नौकर को बुला कर भोजन का प्रबंध करने तथा बर्फ देकर शराब को ठंढा करने के लिए कहा।

भोजन करते समय रूडिन और लेभेनोव के बीच उनके विगत छात्र-जीवन तथा उस समय की कितनी ही घटनाओं और उस समय के कितने ही परिचित लोगों के बारे में, जिनमें कोई-कोई जीवित थे और कोई-कोई मर चुके थे, आलोचनाएँ हुईं। लेकिन ये आलोचनाएँ हुईं एक साधारण ढंग पर। रूडिन पहले पहल बातें कर रहा था उदासीनता से लेकिन दो-एक गिलास शराब पी लेने के बाद उसके रक्त में मानो उष्णता आयी। नौकर अंतिम-भोजन-पात्र लेकर बाहर चला गया। लेभेनोव उठा, दरवाजा बंद किया और आकर रूडिन के ठीक सामने बैठ गया धीरे से हाथों पर चिबुक रख कर।

उसने रूडिन से कहा, "तुम्हारे साथ अंतिम साक्षात्कार के बाद क्या-क्या हुए, अब बताओ।"

रूडिन ने लेभेनोव की तरफ देखा।

लेभेनोव ने अपने मन में सोचा, बिचारा कितना ही बदल गया है!

रूडिन के मुखमण्डल में विशेष परिवर्तन नहीं आया था। लेकिन प्रौढ़ता का आगमन सूचित हो चुका था। इसलिए उसके चेहरे की भाव-व्यंजना बदल चुकी थी। उसकी आँखों की दृष्टि बदली हुई थी। उसके समस्त शरीर में, उसके समस्त कामों में परिवर्तन आ चुका था। उसकी हर बात में विशेष प्रकार का आलस्य तथा जल्दीबाजी मिली हुई थी लेकिन अब वैसा कुछ नहीं था। मानो उसकी बातों में जो तेज निहित था, समाप्त हो चुका था। रूडिन भी अब ऐसा लग रहा था मानो हारा हुआ,—एक क्लांति उसके समस्त शरीर में छा गई थी। वह पहले विषादित होने का मिस करता था, जैसा कि सभी युवक आशा-उत्साह से पूर्ण हो कर करते हैं, लेकिन आज का यह एक बहाना न था।

"—मेरे बारे में सब कुछ तुम्हें कहना पड़ेगा? रूडिन बोला, लेकिन मैं तो सब कुछ नहीं बता सकता। फिर उसकी जरूरत ही क्या है? अब तक मैंने बहुत कष्ट उठाया—शारीरिक और मानसिक दोनों, घूमा

भी बहुत । लेकिन हर आदमी, हर चीज में केवल धोखा ही धोखा है उससे छुटकारा कैसे मिलता । मोह की कोई सीमा नहीं है, हाँ सीमा नहीं है ।" लेझ्नेनोव उसकी आँखों की तरफ विशेष सहानुभूति भरी दृष्टि से देख रहा था, रूडिन ने यह देख कर अपने वाक्यांश को दोहरा कर कहा। " मेरी ही बातों ने मेरा विरोध किया, यह केवल मेरा ही कहना नहीं है बल्कि मेरे बतलाये हुए पथ पर चलने वाले सभी का यही कहना है । मैं एक बच्चे के समान ढीठ हो गया था और उस घोड़े की सी जड़ता और अज्ञानता मेरे अंदर आ गयी थी जो चाबुक से बिना मारे गये अपना दुम तक हिलाता नहीं । मुझे बार-बार सुख मिला, आशा मिली, लेकिन मैंने बार-बार दूसरों से झगड़ा मोल लिया और मारे घमंड के अपने को ही नीचा दिखाया । मैं कितनी ही बार साहसी बाजके समान झपटा पर लौट आया एक घोंघे के समान; एक ऐसे घोंघे के समान जिसके ऊपर का कड़ा आवरण चकनाचूर हो चुका है । किधर मैं नहीं गया, किस रास्ते पर नहीं चला ? उनमें से कुछ रास्ते गंदे भी थे ।"

रूडिन ने जरा घूम कर देखा, फिर कहा, "तुम जानते हो"—

लेझ्नेनोव ने उसे रोक कर कहा, " देखो उन बीते दिनों हम एक दूसरे से ऐसा विधिवत् व्यवहार नहीं करते थे । आओ हम पुनः उसी जीवन को लौट चलें । आओ उसी पुराने भ्रातृत्व के नाम पर स्वास्थ्य-पान करें ।

रूडिन एक क्षण के लिए चौंक उठा पर उसने अपने को सँभाल लिया और उसकी आँखों की दृष्टि उस विशेष भाषा में बोल उठी जिसे जिह्वा नहीं प्रकट कर सकती ।

—"बहुत अच्छा" उसने कहा, "आओ भाई, हम भ्रातृत्व के नाम पर ही 'स्वास्थ्य-पान' करें ।

लेझ्नेनोव और रूडिन ने अपना गिलास खाली किया ।

—"जानते हो ।" रूडिन ने कहा । उसने हँस कर अपने कथन के पीछे शिष्टता का सम्बोधन नहीं जोड़ा । वह कहता गया, "मेरे अन्दर एक

विशेष प्रकार की ऊष्णता है जो मुझे सताता है कष्ट देता और कभी शांति से रहने नहीं देता। यही मुझे मेरे मित्रों तथा अनुगत व्यक्तियों से लड़ाती है।" रूडिन बलात् एक क्षण के लिए रुक गया, फिर कहने लगा, "जिस समय तुम से अन्तिम साक्षात्कार हुआ था, जिस समय हम एक दूसरे से अलग हुए उसके बाद मैंने बहुत कुछ किया, बहुत कुछ देखा। अनेक नये जीवन का प्रारम्भ किया—पूर्णरूपेण नवीन प्रारम्भ। लेकिन अंत तक मेरा क्या हुआ यह तो तुम्हीं देख सकते हो।"

—"तुमने अपनी जीवनीशक्ति खो दी।" लेझेनोव मानो अपने मन में सोचते हुए कहा।

"—तुमने ठीक कहा।' जीवनीशक्ति ही मेरे पास न थी। मैं कोई नया सृजन नहीं कर सकता था। तुम्हीं बताओ, जिसके पाँवों के नीचे खड़े होने भर की कड़ी जमीन न हो वह क्या सृजन करेगा। जिसे स्वयं अपनी ही नींव डालनी है वह कैसे नये निर्माणकी नींव डाल सकता है। मैं अपने जीवन की सभी प्रचेष्टाओं, जिन्हें व्यर्थताएँ कहना ही उचित होगा, के बारे में नहीं कहूँगा। मैं केवल दो-तीन घटनाओं के बारे में तुम से कहूँगा। जब जब मुझे ऐसा लगा कि अब भाग्य-देवी का कृपा-कटाक्ष मुझे मिल ही गया अथवा, सफलता की आशा मेरे अंदर संचारित होने लगी। लेकिन वास्तव में उस समय बात कुछ और ही होती थी।

रूडिन ने अपने सफेद और पतले बालों को उसी पुराने ढंग से पीछे की तरफ झकझोरा, जिस प्रकार वह अपने घने, काले और घुँघराले बालों को किया करता था।

—"तो सुनो!" रूडिन ने कहना आरंभ किया, "मास्को में एक अद्भुत व्यक्ति से मेरा परिचय हुआ था। वह सरकारी नौकर नहीं था बल्कि वह बहुत ही धनी तथा विस्तृत जमींदारी का स्वामी था। विज्ञान, विशेष कर विज्ञान के प्रति उसका विशेष अनुराग था। मैं नहीं कह सकता उन दिनों विज्ञान के प्रति उसका वह अनुराग कैसे उत्पन्न हुआ था।

जो हो, उसका विज्ञान के प्रति वह अनुराग एक गाय की पीठ पर जीन कसने के समान था। जैसा वह चाहता था, उसकी मानसिक उत्कर्षता वैसी न थी। कुछ कहने की शक्ति उसमें न थी, वह केवल अर्थपूर्ण ढंग से आँखों को घूमा सकता था अथवा बड़ी गंभीरता से मस्तक हिला सकता था। उसके समान कम और निस्तेज बुद्धि का आदमी मैंने अभी तक नहीं देखा। स्मोलेन्सक जिले में ऐसे बहुत से स्थान हैं जहाँ रेत और थोड़ी सी घास के सिवाय कुछ और है ही नहीं। घासें भी ऐसी जिन्हें कोई जानवर भी नहीं खाता। उसी प्रकार वह व्यक्ति जिस काममें भी हाथ डालता था उसी में असफल रहता था। सब-कुछ उसे अपनी ओर आकृष्ट करता था लेकिन दुर्भाग्य से कुछ भी उसके हाथ नहीं लगता था। फिर, किसी भी सरल और सहज काम को जटिल बनाने की अद्भुत प्रवृत्ति उसमें मौजूद थी। उसे ऐसा विश्वास हो गया था कि सबको स्वावलंबी बनाने का भार उसी पर है। इसलिए वह लिखने-पढ़ने से अथवा काम करने से थकता न था। उसके विज्ञानानुराग के पीछे एक अस्वाभाविक जिद्द और भयानक उद्यम था। उसके आत्माभिमान की कोई सीमा न थी तथा उसका मनोबल था लोहे के समान दृढ़। वह एकाकी जीवन अतिवाहित करता था इसलिए सभी उसे अद्भुत कहते थे।

"मैं उसके संपर्क में आया, वह मुझे बहुत ही चाहता था। सच कहता हूँ, शीघ्र ही मैं उसे पहचान गया था लेकिन उसके असीम उत्साह ने मुझे आकृष्ट किया था। फिर उसके पास प्रचुर धन था। मैं उसी के साथ रहने लगा और अंत तक उसके साथ उसकी जमींदारी में जा कर बसा। मेरी परिकल्पनाएँ, सच कहता हूँ, बड़ी ही लंबी-चौड़ी थीं—मैं विभिन्न प्रकार के सुधारों और उद्भावनों की बातें सोचा करता था।"

—"जिस प्रकार कि तुम मैदम लासुनस्काया के निकट रहते समय सोचा करते थे।" लेझेनोव ने हँस कर कहा।

—"अरे नहीं ! उस समय तो मैं जानता था कि व्यर्थ ही बक रहा हूँ लेकिन उस समय तो मैं एक महान सुयोग से फायदा उठा रहा था। मैं अपने साथ कृषि-संबंधी बहुत सी पुस्तकें ले गया पर सच कहता हूँ उनमें से एक को भी अंत तक नहीं पढ़ पाया, एक को भी काम में न ला सका। पहले पहल वहाँ कुछ भी मेरी आशा के अनुसार नहीं हुआ, जो हो, बाद में किसी तरह सब कुछ होने लगा। मेरा वह मित्र सब-कुछ देखा करता था पर कुछ कहता न था। वास्तव में वह मेरे कामों में बाधा डालना नहीं चाहता था। वह मेरे कथनानुसार कार्य करता था लेकिन वह अनिच्छा और अविश्वास से और अंत तक वह अपने ही अनुसार कार्य करने लगता था। उसकी भी अपनी परिकल्पनाओं की कमी न थी। वह कठिन प्रयत्नों के द्वारा उनको कार्य में परिणत करना चाहता था जिस प्रकार एक बीरबहूटी घास के डंठल पर बैठने का अथक परिश्रम करते हुए गिर जाती है और पुनः वैसा करने का कोशिश करती है। मेरी इस तुलना से घबड़ाओ नहीं, इस प्रकार की तुलना मैंने उसी समय से सोच रखी है। इस प्रकार दो वर्ष बीते। मेरे कठिन प्रयत्नों से भी कोई काम आगे नहीं बढ़ा। तब मैं स्वयं थकने लगा और उस मित्र से भी जी ऊब गया। अब मैं उस पर व्यंग कसने लगा, लेकिन उसने मुझे बलात् खामोश करना चाहा। मेरे प्रति उसका अविश्वास अब क्रोध में परिवर्तित होने लगा और हम दोनों में एक साधारण विद्वेष की भावना उत्पन्न हो गयी। अब एक क्षण शान्तिपूर्वक वार्तालाप करना भी हमारे लिए असंभव हो उठा। फिर वह अपने कामों से मुझे यह बतलाने की कोशिश करने लगा कि वह मेरे प्रभाव के अधीन नहीं है और इसलिए वह मेरी परिकल्पनाओं को या तो पूर्णतया बदल देता था, नहीं तो रद्द कर देता था। अंत तक मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि मैं उस जमींदार महाशय का एक पुँछ-लग्गा मात्र हूँ जो भोजन और आश्रय के बदले में उनके मन में उत्कर्षता संचारित कर रहा हूँ। यह अनुभूति मेरे लिए बहुत ही कष्ट देने

वाली थी कि मैं समय और शक्ति को नष्ट कर रहा हूँ इसके अतिरिक्त मेरी आशाएँ भी बार-बार वँचित हो रही थीं। मैं अच्छी तरह जानता था कि वहाँ से चले जाने पर अन्य सभी सुविधाओं से हाथ धोना पड़ेगा परंतु अपने को वश में न रख सका। एक दिन एक भयानक और दुःखद घटना घटी जिससे मेरे मित्रवर का विपरीत स्वरूप प्रकट हो गया और मैं उससे अंतिम बार के लिए झगड़ पड़ा तथा जर्मन और रूसी संस्कृतियों के अद्भुत मिश्रण स्वरूप उस व्यक्ति का सम्पर्क सदा के लिए त्याग कर चला गया।"

—"याने चले आये, अपनी प्रतिदिन की रोटी छोड़ कर।" लेझ्नेनोव ने बड़बड़ा कर कहा और रूडिन के कंधों पर दोनों हाथ रखे।

—"हाँ, मुझे फिर एक बार भूख-प्यास का कष्ट सहना पड़ा पूर्णतया निःस्व हो कर। लंबी-चौड़ी दुनियाँ मेरे सामने पड़ी थी, जहाँ भी चाहता था, जा सकता था। जो हो, आओ पीया जाय।"

—"तुम्हारे नाम पर 'स्वास्थ्य-पान' किया जाय।" लेझ्नेनोव ने खड़े हो कर कहा और रूडिन का ललाट चूम लिया। फिर बोला, "तुम्हारे नाम पर और पोकोरस्की के स्मरण में—उसमें भी दरिद्र रहने का साहस था।"

—"जो हो, यह मेरी पहली आजमाइश थी।" रूडिन ने एक क्षण निरवता के बाद कहा, "क्या आगे और कहूँ?"

—"हाँ कहो।"

—ओफ्। अब मुझे कुछ कहने की इच्छा नहीं होती, सच कहता हूँ, मैं कहते-कहते थक गया हूँ। लेकिन जब तुम सुनना चाहते हो, तो सुनो—। कई जगहों की खाक छानने के बाद मैं कैसे एक सरकारी कर्मचारी का सेक्रेटरी हो गया और ऐसा होने से आगे क्या हुआ यह-सब तुम्हें बता सकता था लेकिन यह-सब बताने के लिए मुझे बहुत-कुछ बताना पड़ेगा।.......जो हो, बहुत कुछ करने के बाद, अन्त तक मैंने

अपने मन में—हँसो नहीं—एक व्यवसायी, एक सचमुच कामकाजी आदमी बनने का निश्चय किया। मैंने ऐसा निश्चय किया कुरबियेव नाम के एक व्यक्ति से परिचित होने के बाद। तुमने अवश्य उसका नाम सुना था।"

—"नहीं, मैंने कभी उसका नाम नहीं सुना! लेकिन रूडिन, तुमने यह कैसे निश्चित किया कि तुम्हें एक व्यवसायी होना है।"

—"मानता हूँ, यह मेरा काम नहीं है लेकिन मुझे कुछ करना तो था फिर, अगर तुम कुरबियेव को देखते। कहता हूँ, वह एक दायित्वहीन निःसार व्यक्ति नहीं था। लोग कहते हैं, मैं अच्छा वक्ता हूँ, लेकिन, उससे अगर तुलना की जाय तो मैं उसके सामने तुच्छ हूँ। उसमें अद्भुत विद्वत्ता थी, बुद्धिमत्ता थी, विशेष कर उद्योग-धन्धों के बारे में उसकी सृजनशालिनी प्रतिभा बेजोड़ की थी। उसका दिमाग अद्भुत और दुस्साहसपूर्ण परिकल्पनाओं से पूर्ण था। मैंने उसका साथ दिया, फिर हम लोगों ने अपने को किसी जन-हितकर कार्य में लगाने का निश्चय किया।"

—"क्या मैं पूछ सकता हूँ, वह कार्य क्या था?"

रूडिन ने अपनी दृष्टि नत करके कहा, "सुन कर तुम हँसोगे।"

—"क्यों? नहीं, मैं हँसूँगा नहीं।"

रूडिन ने कुंठित हँसी हँस कर कहा, "किसी जिले के एक नदी में हम लोगों ने जहाज चलाने की बात सोची।"

—"अच्छा! तो वह कुरबियेव एक पूँजीपति था?"

—"वह तो मुझ से भी गरीब था।" सफेद बालों से भरे मस्तक को निराशा से नत करके रूडिन ने उत्तर दिया।

लेभेनोव सहसा हँस पड़ा। लेकिन उसने एकाएक अपने को रोक कर रूडिन के हाथ पकड़ लिये।

—"माफ करना मुझे, मेरे भाई! मैं अपने को रोक न सका। लेकिन तुम लोगों की वह प्रचेष्टा बस परिकल्पनाओं तक ही सीमित रही होगी?"

—"नहीं। हम लोगों ने कार्य का आरम्भ कर दिया था। हमने बहुत से लोगों को अपने यहाँ रखा तथा उन्हें काम में लगाया। लेकिन शीघ्र ही हमें बहुत सी बाधाओं का सामना करना पड़ा। मिल-मालिकों ने हमारे कार्य में सहायता नहीं की और हम मशीनों के बिना इस कार्य में अग्रसर नहीं हो सकते थे, फिर हमारे पास जो थोड़े से पैसे थे उससे हम उन मशीनों को खरीद भी नहीं सकते थे। छः महीने तक हम झोंपड़ियों में रहे। कुरबियेव केवल रोटी के दो टुकड़ों पर ही गुजारा करने लगा। मुझे भी विशेष-भोजन नहीं मिलता था। जो हो, उसके लिए मुझे कोई अफसोस नहीं होता क्यों कि उस स्थान का प्राकृतिक दृश्य-बहुत ही मनोरम था। जो हो हम अन्त तक कोशिश करते रहे, दूसरे व्यापारियों को हमने अपनी परिकल्पनाओं के प्रति आकृष्ट करना चाहा, चिट्ठियाँ लिखीं, विज्ञापन प्रचारित किया। और, हम लोगों के पास जो कुछ था उस कार्य में लगा कर ही रहे।"

—"तुम लोगों के पास जो कुछ था उसे भी लगा देना तुम लोगों के लिए कोई कठिन कार्य नहीं था।"

—"सचमुच, कोई कठिन काम नहीं था।"

रूडिन ने खिड़की में से बाहर देखा।

—"मैं कहता हूँ, वह एक व्यर्थ की परिकल्पना न थी, उससे बहुत कुछ भलाई हो सकती थी।"

—"फिर कुरबियेव का क्या हुआ?" लेझेनोव ने पूछा?

—"वह अभी साइबेरिया में है और सोने की खान में काम कर रहा है। तुम देख लेना, वह अपनी तकदीर अवश्य बना लेगा, वह कभी असफल नहीं हो सकता।"

—"हो सकता है, लेकिन तुम कभी अपनी तकदीर नहीं बना सकते।"

—"मैं ? लेकिन इससे क्या ! तुम तो मुझे हमेशा ही एक नाचीज आदमी समझते हो।"

—"तुमको नाचीज़ आदमी समझता हूँ ! सच कहता हूँ भाई, एक समय वह था जब मैं केवल तुम्हारे दंपों को ही बढ़ा-चढ़ा कर देखता था, लेकिन अब, विश्वास करो, तुम्हारे वास्तविक मूल्य को समझ सका हूँ। तुम अपनी तकदीर कभी नहीं बना पाओगे और केवल इसीलिए मैं तुम्हें चाहता हूँ, केवल इसीलिए !"

रूडिन जरा हँसा।

—"अच्छा !"

—"हाँ। इसीलिए मैं तुम्हारा सम्मान करता हूँ।" लेझेनोव ने कहा, "अब तुम मुझे अवश्य समझ सके होगे ?"

दोनों कुछ समय तक निरव रहे।

—"क्या अब मैं तीसरे आजमाइश के बारे में कहूँ ?"

—"कहो !"

—"तो सुनो ? यह तीसरी आजमाइश ही अन्तिम आजमाइश है। अभी-अभी उससे छुटकारा मिला। मेरी बातों को सुनते-सुनते तुम्हारा जी तो नहीं ऊब रहा है ?"

—"नहीं। तुम कहते जाओ ?"

—"उस समय मेरे पास समय काफी था। मैंने अपने मन में सोचा कि मेरे पास यथेष्ट बुद्धि है तथा मेरा उद्देश्य भी कोई बुरा नहीं है संभवतः तुम इस बारे में किसी प्रकार का संदेह प्रकट नहीं करोगे।"

—"हर्गिज नहीं।"

—"मैं सभी कामों में असफल रहा ·····फिर क्यों न मैं एक उपदेष्टा, सरल शब्दों में एक शिक्षक न बनूँ ? मेरे इस जीवन को नष्ट करने के बजाय—।" रूडिन का कथन दीर्घश्वास में बदल गया। "मेरे इस जीवन को नष्ट करने के बजाय मैं अपना ज्ञान—अनुभव क्यों न दूसरों को दे

जाऊँ। हो सकता है उससे उनका कोई फायदा हो। मैं अपने बारे में कहता हूँ, मेरी शक्ति और साधारणों से अधिक है मेरी बोलने की शक्ति भी औरों से बहुत अधिक है।······अतः मैंने अपने को इस नये कार्य में नियुक्त करने का निश्चय किया लेकिन मुझे यह काम मिलने में बहुत सी परेशानियाँ उठानी पड़ीं। किसी के घर गृह-शिक्षक बनने की इच्छा मुझे न थी। फिर मैं नीचे दर्जों में भी नहीं पढ़ा सकता था। अन्त तक यहाँ के एक उच्च विद्यालय में मुझे एक शिक्षक का पद मिला।"

—"किस विषय का शिक्षक बने?" लेझेनोव ने पूछा।

—"रूसी साहित्य का अध्यापक बना। तुम से कहता हूँ, मैं किसी और काम में इतना उत्साह ले कर नहीं जुटा था। तरुण मस्तिष्कों के निर्माण कर सकने की भावना ने ही मुझे इस प्रकार प्रेरित किया। मैंने अपने पहले भाषण के लिखने में ही तीन हफ्ते बिताये।"

—"उसकी नकल तुम्हारे पास है?" लेझेनोव ने पूछा।

—"नहीं। कहीं वह खो गया है। जो हो, वह भाषण बढ़िया ही रहा और सफल भी। उसके श्रोताओं के चित्र आज भी मेरी आँखों के सामने खींच जाते हैं—उत्साह और अभिनिवेश से उज्ज्वल बहुत-से सुन्दर और तरुण मुख जिन पर अनुराग और विस्मय के चिह्न भी अंकित थे। भाषण-मञ्च पर खड़े होकर अभूतपूर्व उत्साह के मारे मैंने भाषण किया। मैं सोचा था कि एक घंटे से ज्यादा समय लगेगा लेकिन मैं उसे केवल बीस ही मिनटों में पढ़ गया। वहाँ निरीक्षक महोदय मौजूद थे—एक दुबले-पतले बूढ़े सज्जन, चाँदी के बने चश्मे और नकली बाल पहने हुए। वे मेरा भाषण अच्छी तरह सुन सकने के लिए बार-बार आगे बढ़ कर सुनने की कोशिश कर रहे थे। मैंने ज्यों ही अपना भाषण समाप्त किया वे अपने आसन से मानो उछल पड़े और मेरे पास आकर बोले, 'बहुत, अच्छा, लेकिन बहुत ही कठिन और अस्पष्ट तथा विषय-सामग्री के बारे में बहुत ही कम कहा गया।' लेकिन, मैं तुम से कहता हूँ मेरे छात्र मेरा भाषण

अप्रशंस भाव से सुन रहे थे। इसीलिए तो यौवन इतना विचित्र होता है। मैंने दूसरा तथा तीसरा भाषण भी लिखा······उसके बाद मुझे जो कुछ कहना होता उनके सामने आकर ही कहता ''

—"उसमें तुम सफल हुए !"

—"मुझे अद्भुत सफलता मिली थी। मेरे हृदय में जो कुछ था मैं उनको देता गया। उन लड़कों में तीन चार वास्तव में अद्भुत प्रतिभाशाली थे लेकिन और लड़के मेरी बातों को अच्छी तरह नहीं समझ सकते थे। सच कहता हूँ, जो मेरी बातों को समझ सकते थे वे भी मुझे अपने सवालों से कभी-कभी भ्रम में डालते थे। लेकिन मैं उससे कभी निराश नहीं होता था। वे सभी मुझे चाहते थे। मैं भी परीक्षाओं में उनको पूरा नम्बर देता था। लेकिन बाद में मेरे खिलाफ एक षड़यन्त्र आरम्भ हुआ—मैं गलत कह रहा हूँ, वह षड़यन्त्र नहीं था बल्कि सीधे और सरल शब्दों में, मैं अपने उचित स्थान में नहीं था अतः मैं औरों के लिए दीवार बन गया तथा और भी मेरे लिए दीवार बन गये। विश्वविद्यालय के छात्रों के सामने भी जैसा भाषण नहीं किया जाता, मैं वैसा भाषण उनके सामने करता था इससे मेरे भाषणों से मेरे छात्र बहुत कम सीख पाते थे। मैं उन बातोंको जानता था लेकिन अच्छी तरह नहीं, फिर जिस दायरे में मुझे काम करने के लिए दिया गया उससे मैं सन्तुष्ट नहीं था। तुम तो जानते ही हो, यह दुर्बलता सदा से मेरे साथ है। मैं मूल में परिवर्तन चाहता था। मैं कहता हूँ, उसकी सम्भावना थी—वह सम्भव हो सकता था। मैं उन परिवर्तनों को प्रधान शिक्षक महोदय के जरिये काम में लाना चाहता था। प्रधान शिक्षक महोदय भद्र और न्यायपरायता व्यक्ति थे। पहले पहल उन पर मेरा अच्छा प्रभाव था। उनकी पत्नी ने मेरी बड़ी सहायता की थी। उनके समान किसी दूसरी स्त्री से कभी मेरा साक्षात्कार नहीं हुआ। उनकी अवस्था तीस से काफी अधिक थी फिर भी उनका अच्छाई के प्रति विश्वास था और एक पन्द्रह साल की लड़की की सी

उत्सुकता से जो कुछ सुन्दर है उसे चाहती थीं। तथा किसी के भी सामने अपने विश्वास की बात करते न डरती थीं। मैं उनकी आत्मा की उत्सुकता और पवित्रता को अपने जीवन में कभी नहीं भूलूँगा। उन्हीं के कहने पर मैंने एक कार्य-क्रम प्रस्तुत किया। लेकिन तब तक उन लोगों ने बहुत सी झूठी बातें कह कर मुझे उनकी आँखों में हीन साबित किया। और गणित के उस आध्यापक ने, जो एक धूर्त, क्रोधी और नाटे कद का पिगासोव जैसा आदमी था, मेरी सब से अधिक हानि पहुँचायी। वह व्यक्ति पिगासोव के समान ही किसी भी चीज पर विश्वास नहीं करता था लेकिन वह उससे भी बढ़ कर था। हाँ पिगासोव कैसा है, क्या वह अभी तक जी रहा है?"

—"हाँ। उसने शादी भी की है। लोग कहते हैं उसकी पत्नी उसे पीटती है।"

—"हाँ। उसकी पत्नी ठीक करती है। जो हो, नातालिया अच्छी है न?"

—"हाँ।"

—"सुखी भी है न?"

—"हाँ।"

रूडिन एक क्षण के लिए निरव रहा।

—"हाँ, क्या कह रहा था? उस गणित के अध्यापक के बारे में कह रहा था। वह मुझे घृणा की दृष्टि से देखता था। मेरे भाषणों की तुलना आतिशबाजियों से करते थे। अगर मेरी एक भी बात स्पष्ट न हो पाती तो वह तुरंत उस पर व्यंग कसने लगता था। एक बार मैंने सोलहवीं सदी के महाकाव्यों के बारे में कुछ कहा तो उसने उसमें से मेरी गलती ढूँढ़ निकाली। उसने मेरे उद्देश्यों के संबंध में संदेह प्रकट किया। मेरी अंतिम आशा भी साबुन के बुलबुले के समान उसके द्वारा विनष्ट हुई। निरीक्षक महोदय से पहले से ही मेरा सद्भाव स्थापित न

हो सका था इसलिए मौका पाते ही उन्होंने प्रधान शिक्षक महोदय को मेरे विरुद्ध उत्तेजित किया। जो हो एक दिन बात बढ़ गयी। मैंने झुकना स्वीकार नहीं किया तथा मैं भी क्रोध में आ गया। विद्यालय के अधिकारियों को सारी बातों का पता चल गया और मुझे पद त्याग करने को बाध्य किया गया। लेकिन मैं यों ही छोड़ने वाला न था मैं ने यह प्रमाणित करना चाहा कि मेरे साथ अन्याय किया गया है—लेकिन अंत तक यही प्रमाणित हुआ कि मेरे साथ अन्याय नहीं किया गया। इसीलिए मैं उस शहर से चला जा रहा हूँ।

रूडिन खामोश हो गया। दोनों मित्र मस्तक झुकाये बैठे रहे।

रूडिन सर्व प्रथम बोला।

उसने कहा, "भाई, मैं कोल्टसोव की बातों को दोहरा सकता हूँ, 'हे यौवन, तुमने मुझे बहुत अधिक कष्ट दिया, अब मेरे लिए मुक्ति का कोई पथ खुला न रहा।'* फिर भी यह कैसे संभव हो सकता कि मैं किसी भी काम के योग्य नहीं हूँ और इस दुनियाँ में मेरे लायक कोई काम है ही नहीं? मैंने बार-बार अपने से यह प्रश्न किया और अपनी दृष्टि से अपने को बहुत ही छोटा करके देखा फिर भी मैं अपने मन में यह अनुभव किये बिना न रह सका कि मुझ में कुछ ऐसे गुण हैं जो सभों में नहीं हैं फिर मैं क्यों उन गुणों को व्यर्थ जाने दूँ? इसके अतिरिक्त, तुम्हें स्मरण होगा, जब हम दोनों विदेशों में थे उस समय मैं अहंकारी और मिथ्या धारणाओं के वश था। मैं क्या चाहता था उसके संबंध में मैं उस समय सचेत न था। मैं केवल बातें बनाने में ही संतुष्ट तथा कुछ अस्पष्ट धारणाओं पर विश्वासी था, लेकिन अब, तुमसे कहता हूँ, मैं क्या चाहता हूँ स्पष्ट शब्दों में कह सकता हूँ,

* ए० वी० कोल्टसोव (१८०६-४२)—एक प्रमुख गणतांत्रिक कवि थे। ये शब्द उनकी 'चौरहा' नाम की कविता से लिये गये हैं।

अब मुझे कुछ छिपाना नहीं है, अब मैं वास्तविक अर्थ में सदिच्छाओं से पूर्ण मनुष्य हूँ, अब मैं अपने को झुका सकता हूँ वातावरण के अनुसार परिवर्तित कर सकता हूँ, अब मेरा प्रयोजन सीमित है, और अब मैं उसी लक्ष्य की पूर्ति चाहूँगा जो मेरे पास है, जो कुछ काम का है—चाहे वह कितना ही तुच्छ हो। लेकिन नहीं, मैं वैसा नहीं कर सकता। क्यों मैं और लोगों के समान जी नहीं सकता—काम नहीं कर सकता? अभी तो मैं बस उसीका सपना देख रहा हूँ। लेकिन ज्यों ही मैं किसी निर्दिष्ट कार्य के करने में लग जाऊँगा—ज्योंही अपने लिए एक निश्चित स्थान ढूँढ़ लूँगा त्यों ही मेरा अदृष्ट मुझ से मेरा अवसर छीन लेगा—अब मैं इससे डरने लगा हूँ—मेरे अदृष्ट से। लेकिन क्यों ऐसा होता है? जरा मुझे इस रहस्य का समाधान तो बतला दो।"

—"सचमुच एक रहस्य है।" लेभेनोव ने कहा, "तुम मेरे लिए सदा ही एक रहस्य बने रहे। तुम अपनी युवावस्था में भी किसी किस्म की छोटी-मोटी नटखटी के बाद एकाएक इस प्रकार बातें करने लगते थे कि मुझे ऐसा लगता था कि तुम्हें बहुत ही दुःख हुआ है। और फिर—तुम समझ रहे होगे, मैं क्या कहना चाहता हूँ, कि उस समय भी मैं तुम्हें पहचान न सका था। इसीलिए मैं तुम से नफरत करने लगा था। तुम्हारी शक्ति असीम है और तुम अपने आदर्श की प्राप्ति के लिए अक्लांत हो कर परिश्रम कर रहे हो।"

—"यह सब केवल कहने के लिए है, केवल कहने के लिए। वास्तव में कुछ भी न कर सका।" रूडिन कह उठा।

—"कुछ न कर सके? आखिर करना क्या था?"

—"करना क्या था? अपने परिश्रम से एक वृद्धा तथा उसके परिवार के लोगों के पालन-पोषण का प्रबन्ध करना, तुमको याद होगा, प्राजेण्टसोव, जैसा करता था। वास्तव में वही कुछ करता था।"

—"लेकिन अच्छी बातें भी अच्छे कामों के समान महत्त्वपूर्ण हैं।"

रूडिन ने कुछ कहा नहीं, केवल लेभ्भेनोव की तरफ देखा और अपना सिर हिलाया। लेभ्भेनोव कुछ कहने जा रहा था परन्तु उसने अपने मुख पर हाथ रख लिया।

—"तो तुम अभी अपने गाँव को लौट रहे हो?" अन्त तक उसने पूछा।

—हाँ।"

—"तो अभी तक तुम्हारी जमींदारी है?"

—"हाँ, उसका एक भाग अभी तक बचा है। दो-चार रैयतें भी हैं। कुछ नहीं तो वहाँ आराम से मर सकता हूँ। सम्भवतः तुम सोच रहे हो कि मैं अभी तक अच्छी-अच्छी बातें कहे बिना नहीं रह सकता! सच कहता हूँ, इन बातों ने ही मुझे बर्बाद किया, इन्हीं बातों ने मुझे कुछ कर सकने के योग्य न रखा और अन्तिम समय तक इन बातों से छुटकारा पाना असंभव है लेकिन अब मैं जो कुछ कह रहा हूँ वे केवल व्यर्थ वाक्य मात्र ही नहीं हैं। मस्तक के ये सफेद बाल, ललाट पर पड़ी ये झुर्रियाँ तथा कृश बाहें—क्या ये सब केवल बातें ही हैं। तुम सदा ही मेरा विचार कठोर होकर करते थे, लेकिन न्यायपूर्ण विचार करते थे। लेकिन अब उसका कौन-सा प्रयोजन रह गया जब सब कुछ समाप्त हो चुका है—जब दीए में तेल नहीं है और उसकी क्षीणतम शिखा भी बुझने लगी है। मेरे मित्र, अब मृत्यु ही अन्तिम शान्ति ला सकती है।"

लेभ्भेनोव प्रायः उछल पड़ा।

—"रूडिन! मुझसे तुम ऐसा क्यों कह रहे हो? यह-सब सुनने के लिए मैंने क्या किया है। क्या मैं उसी प्रकार का विचार रखता हूँ, क्या मैं उसी प्रकार का आदमी हूँ, क्या इन गालों पर की झुर्रियों को देखकर भी अपने मन में कह सकता हूँ कि ये सब केवल कहने के लिए हैं? मैं कहूँगा, हाँ ऐसा भी मनुष्य है इस संसार में जो अपनी शक्ति से क्या न पा सकता था, अगर वह केवल मात्र पाने की इच्छा करता तो इस

संसार का कौन सा सुख उसके लिए अप्राप्य रहता? लेकिन आज उसे गृहहीन, अन्नहीन देख रहा हूँ—।"

—"मेरे लिए तुम्हारे मन में दया की भावना जागी है।" रूडिन ने दबे हुए स्वर में कहा।

—"नहीं, तुम भूल कर रहे हो। मैं तुम्हारा आदर करता हूँ। तुम्हारे लिए मेरे मन में बस आदर की भावना जागी है। तुम अपने जमींदार मित्र के घर वर्षों तक रह सकते थे, मैं निश्चित रूप से कह सकता हूँ, तुम अपना प्रबन्ध अच्छी तरह कर लेते अगर तुम उसकी बातों को मानते रहते। तुम यहाँ के उच्च विद्यालय में रह न सके क्यों? क्योंकि तुम एक अद्भुत मनुष्य हो। कि किसी भी काम का तुम ने आरम्भ किया जिस किसी भी उद्देश्य से प्रेरित होकर उसी का अंत हुआ तुम्हारे व्यक्तिगत स्वार्थों के बलिदान से। जो भूमि तुम्हारे लिए उत्तम न हो उसमें तुमने जड़ जमाना कभी नहीं चाहा चाहे वह तुम्हारे लिए कितनी ही न लाभजनक होता।"

"—मैं जन्म से घुमक्कड़ हूँ, भला मैं कैसे चलना बंद करता?" रूडिन ने क्षीण हँसी के साथ कहा।

—"तुमने ठीक कहा। लेकिन यह तुम्हारा कोई स्वाभाविक नहीं है कि तुम ऐसा कर रहे हो और न आलस्य अथवा अस्थिरता के कारण ही ऐसा कर रहे हो बल्कि अगणित व्यर्थताओं के होते हुए भी तुम्हारे अंदर सत्य के लिए जो ज्वलंत प्रेम विद्यमान है उसी के लिए ऐसा कर रहे हो। जो अपने को निरहंकारी तथा तुम्हें दुस्साहसी कहते हैं उनसे कहीं अधिक उद्दीप्त है तुम्हारे अंदर की सत्य-प्रेम की ज्वाला। अगर मैं तुम्हारी जगह होता तो हृदय की आग को कभी बुझा लेता, सब-कुछ के सामने अपने को झुका लेता। लेकिन अब भी तुम्हारे मन में इन-सब के लिए तिक्तता नहीं उत्पन्न हुई और मुझे विश्वास

है कि तुम एक तरुण के समान नये उद्यम से फिर किसी नये काम का प्रारंभ करोगे।"

—"नहीं भाई, अब मैं थका हूँ। मेरा जी ऊब चुका है।" रूडिन धीरे-धीरे बोला।

—"बस थक चुके हो! अगर कोई और होता तो कभी मर जाता। तुम्हींने तो कहा, मृत्यु ही अंतिम शांति लादेती है लेकिन क्या तुम समझते हो, यही जीवन का एक मात्र सत्य नहीं है। जो जीवित रह कर भी अपने समान लोगों के प्रति सहिष्णु न हो सका क्या वह अपने प्रति भी कभी सहिष्णु हो सकता है? और यह भी कौन कह सकता है कि उसे औरों की सहिष्णुता की आवश्यकता नहीं है? तुमने अपनी शक्ति के अनुसार कार्य किया और अंत तक करते रहे। तुम इससे बढ़ कर और क्या कर सकते थे? जो हो हम दोनों के पथ एक न हो सके—!"

—"भाई हम दोनों पूर्णतया भिन्न प्रकार के आदमी हैं।" रूडिन ने एक दीर्घ श्वास छोड़ कर कहा।

लेझेनोव कहता गया, "हम दोनों के पथ पूर्णतया भिन्न हैं? थोड़े शब्दों में कहता हूँ, मेरा भाग्य प्रसन्न था, शीतल रक्तके बने रहने तथा घर में चुपचाप बैठे रहनेमें मुझे किसी विघ्नका सामना नहीं करना पड़ा लेकिन तुम्हारा परिवेश मुझसे भिन्न था। जब मैं हाथों को समेट कर पिछली कतार के आसन में दर्शक बन कर बैठा रहा उस समय तुम्हें आस्तीनें चढ़ा कर बाहर निकलना पड़ा तथा परिश्रम से काम करने पड़े। हमारे पथ भिन्न हैं.........फिर भी देखो हम एक दूसरे के कितने पास हैं। हम एक ही प्रकार की भाषा में बातें करते हैं, हम एक दूसरे के अभिप्रायों को कितनी जल्दी समझ जाते हैं और एक ही प्रकार के आदर्शों को अपने हृदय में ले कर हम बड़े हुए हैं। उन आदर्शों के अभी भी कुछ बाकी हैं—हम दोनों तो उन्हीं के अवशेष हैं। पहले हम हमारी भिन्नता को समझते थे यहाँ तक कि हम एक दूसरे से झगड़ते भी थे उस समय हमारे

लिए जीवन का बहुत-कुछ बाकी था। लेकिन अब, जब हमारी मर्यादा छूट रही है जब नये युग के नये तरुण अपने लक्ष्य को पहुँचने के लिए प्राण की बाजी लगा रहे हैं उस समय हमारा कर्तव्य है एक दूसरे को पास खींच लेना। आओ, अब हम सब-कुछ भूल कर शराब पीयें और पुराने दिनों के खुशी के गीत गायें।"

एक ने अपना गिलास दूसरे के गिलास से लगाया और तब वे तल्लीन हो कर बीते छात्र-जीवन के गीत गाने लगे। उनके तान-लय भले ही न ठीक हो पर उनके गाने का ढंग पूर्णतया रूसी था।

—"अब तुम अपने गाँव को जा रहे हो, लेकिन मुझे विश्वास नहीं है कि तुम वहाँ अधिक दिन रह सकोगे। मैं नहीं जानता, कहाँ और कैसे तुम्हारा अंत होगा। फिर भी स्मरण रखना, तुम्हारी परिणति जैसी भी हो लेकिन एक स्थान, एक आश्रय सदा तुम्हारे लिए बना रहेगा—सुनते हो, वह है मेरा घर। सभी के लिए एक आश्रय होना चाहिये।"

रूडिन खड़ा हुआ।

—"धन्यवाद तुम्हें मेरे मित्र, धन्यवाद तुम्हें।" उसने कहा, "तुम्हारी यह बात मैं कभी नहीं भुलूँगा। लेकिन मैं उसके योग्य नहीं हूँ। मैंने अपना जीवन बर्बाद किया है और वैसा नहीं किया जैसा करना चाहता था, अथवा मुझे करना चाहिये था।"

—"चुप!" लेझेनोव के मुख से निकल पड़ा। "प्रकृति ने जिसे जिस प्रकार का बनाया है वह वैसा ही रहेगा। उससे अधिक उम्मीद करना उचित नहीं। तुम अपने को घुमक्कड़ कहते हो—लेकिन तुम अपने को ऐसा कैसे कह सकते, संभवतः अविराम चलते रहना तुम्हारे भाग्य में बदा है संभवतः इसी प्रकार से तुम किसी महान कर्तव्य को पूरा कर रहे हो जिसे तुम स्वयं नहीं जानते। साधारण धारणा जो कहती है कि हम ईश्वर के हाथ के खिलौने हैं यही सब से बड़ा सत्य है।" रूडिन

को अपनी टोपी उठाते देख लेफ्नोव ने पूछा, "क्या तुम जा रहे हो? आज रात तुम यहाँ नहीं रहोगे?"

—"नहीं, मुझे जाना है। धन्यवाद—विदाय। मैं जानता हूँ, मेरा अन्त बहुत ही दुःखद होगा।"

—"यह ईश्वर ही जानते हैं।—तो तुमने जाना ही निश्चित कर लिया?"

—"हाँ, मैं जा रहा हूँ, लेकिन मुझे भूलना नहीं।"

—"ठीक है तुम भी मुझे याद रखना, और मैंने तो जो कहा उसे न भूलना। विदाय।"

दोनों मित्रों ने एक दूसरे को गले लगाये। रूडिन शीघ्रता से बाहर निकल गया।

लेफ्नोव देर तक घर के भीतर चहल-कदमी करता रहा फिर खिड़की के पास जाकर खड़ा हो गया—चिंता में मग्न। उसके मुख से एक शब्द निकला—"बेचारा।" फिर वह टेबुल के सामाने बैठकर अपनी पत्नी के नाम एक पत्र लिखने लगा।

उस समय बाहर तेज हवाएँ चलने लगी थीं अपने क्रुद्ध गर्जन में अमंगल की सूचना लिये और उनके भयानक ताड़ना से खिड़की के शीशे झनझना उठे। शीत काल की दीर्घ रात्रि धीरे धीरे आ रही थी। ऐसी भयानक रात्रि में जो अपने घरों में हैं वे सुखी हैं—वे सुखी हैं जिन्हें उष्ण और निरापद गृह का आश्रय मिला हो—गृहहीन राह-चलतों की मदद ईश्वर ही करेंगे।

\+ \+ \+

१८४८ ई० के जून महीने की छब्बीस तारीख का उष्ण अपराह्न; जब की जातीय रक्षक-दल का विद्रोह प्रायः दबाया जा चुका था उस समय एक दल सेना 'फाबुर्ग सेंट ऐन्टोयन की तंग सड़क पर का प्रतिरोध तोड़

रही थी। तोपों के भयानक आक्रमण से वह प्रतिरोध प्रायः नष्ट हो चुका था। बचे प्रतिरोधकारी प्रतिरोध छोड़ कर अपने प्राणों की रक्षा की बात सोच रहे थे। इतने में सहसा अगले प्रतिरोध के सामने, जो एक यात्री-ढोनेवाली गाड़ी को उलट कर बनाया गया था, एक दीर्घाकृतिवाला व्यक्ति दिखाई पड़ा उसके शरीर पर पुराना छोटा कोट और लाल रंग की ओढ़नी तथा मस्तक के बिखरे हुए सफेद बालों पर फूस का बना टोप था। उसके एक हाथ में था लाल रंग का झंडा तथा दूसरे में एक टूटी हुई तलवार। वह प्रतिरोध के आगे बढ़ते हुए चिल्ला-चिल्ला कर अपने तीक्ष्ण स्वर में कुछ कहने लगा और झण्डा हिला-हलाकर तलवार चलाने लगा। एक सैनिक ने उसे देख कर निशाना साधा और गोली चलायी। —और, उस दीर्घाकृति मनुष्य के हाथ से झंडा छूट गया तथा वह स्वयं किसीके चरणों पर जा गिरा।—गोली उसके सीने के उस पार चली गयी थी।

—"देखो! वह पोलोनेस मारा गया!" भागते हुए सैनिकों में से एक ने दूसरे से कहा।

दूसरे ने कुछ उत्तर दिया और, दोनों एक मकान की छोटी सी कोठरी में जा छिप गये जिसकी दीवारों पर गोलों तथा गोलियों के आघात के अगणित चिह्न अङ्कित थे।

वह पोलोनेस। इमित्री नीकोलेवीच रूडिन था।

❀ समाप्त ❀